अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका.

॥ ॐ नमः सिद्धं ॥ अथ श्रीजीवविचारप्रकरणप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तं ॥ भुवणपईवं वीरं, नमिऊण भणामि अबुहबोहत्थं ॥ जीवसरूवं किंचि वि, जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ १ ॥ जीवा मुत्ता संसा, रिणो य तस थावरा य संसारी ॥ पुढवि जल जलण वाऊ, वणस्सई थावरा नेया ॥ २ ॥ फलिह मणि रयण विद्दुम, हिंगुल हरियाल मणसिल रसिंदा ॥ कणगाइ धाउ सेढी, वन्निय अरणेट्टय पलेवा ॥ ३ ॥ अब्भय तूरी ऊसं, मट्टी पाहाण जाइओ णेगा ॥ सोवीरंजण लूणा, इ पुढविभेया य इच्चाइ ॥ ४ ॥ भोमंतरिक्खमुदगं, उसाहिमकरग हरितणू महिया ॥ हुंति घणोदहिमाई, भेआ णेगा य आउस्स ॥ ५ ॥ इंगाल जाल मुम्मुर, उक्कासणि कणग विज्जुमाइया ॥ अगणिजियाणं भेया, नायव्वा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥ उब्भामग उक्कलिया, मंडलि मह सुद्ध गुंजवाया य ॥

घण तणु वायाईया, नेया खलु वाउकायस्स ॥ ७ ॥ साहारण पत्तेया, वण स्सइजीवा उहा सुए नणिया ॥ जेसिमणंताणं तणु, एगा साहारणा तेऊ ॥ ८ ॥ कंदा अंकुर किसलय, पणगा सेवाल नूमि फोमा य ॥ अल्लयतिय गज्जर मो, ब वत्थुला थेग पल्लंका ॥ ए ॥ कोमलफलं च सव्वं, गूढसिराइं सिणाइपत्ता इं ॥ थोहरि कुआरि गुग्गुलि, गलोइपमुहा य छिन्नरुहा ॥ १० ॥ इच्चाइणो अणेगे, हवंति नेया अणंतकायाणं ॥ तेसि परिजाणणडं, लक्कणमेयं सुए नणियं ॥ ११ ॥ गूढसिरसंधिपव्वं, समनंगमहीरुगं च छिन्नरुहं ॥ साहारणं सरीरं, तव्विवरीयं च पत्तेयं ॥ १२ ॥ एगसरीरे एगो, जीवो जेसिं तु तेय पत्ते या ॥ फल फूल छल्लि कठा, मूला पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥ पत्तेयं तरुमुत्तं, पंचवि पुढवाइणो सयललोए ॥ सुहुमा हवंति नियमा, अंतमुहुत्ताउ अदि स्सा ॥ १४ ॥ संख कवड्डय गंमुल, जलो य चंदणग अलस लहगाई ॥ मेह

रि किमि पूयरगा, बेइंदियमाइ वाहाई ॥ १५ ॥ गोमी मंकण जूआ, पिपी
लि उद्देहिया य मक्कोडा ॥ इल्लिय घयमिल्लीउ, सावय गोकीड जाईउ ॥ १६ ॥
गद्दहय चोर कीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य ॥ कुंथु गुवालिय इलिया,
तेइंदिय इंदगोवाई ॥ १७ ॥ चउरिंदिया य विछू, ढिंकुण जमरा य जमरिया
तिड्डा ॥ मछिय मंसा मसगा, कंसारी कविलडोलाई ॥ १८ ॥ पंचिंदिया य च
उहा, नारय तिरिया मणुस्स देवा य ॥ नेरइया सत्तविहा, नायवा पुढवि जे
एणं ॥ १९ ॥ जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचिंदिया य तिरिखा य ॥ सु
सुमार मछ कछव, गाहा मगरा य जलचारी ॥ २० ॥ चउपय उरपरिसप्पा,
जुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा ॥ गो सप्प नउल पमुहा, बोधवा ते समा
सेणं ॥ २१ ॥ खयरा रोमयपरकी, चम्मयपरकी य पायडा चेव ॥ नरलोगाउ
बाहिं, समुग्गपरकी वियय परकी ॥ २२ ॥ सवे जल थल खयरा, समुछि

मा गप्नया ञ्दा हुंति ॥ कम्मा कम्मग ञ्रमी, ञ्अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥ दसहा ञ्रवणाहिवई, ञ्अठविहा वाणमंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा, ञ्दुविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥ सिद्धा पनरस ञ्नेया, तिञ्चातिञ्चाइ सिद्धञ्नेए णं ॥ एए संखेवेणं, जीवविगप्पा समरकाया ॥ २५ ॥ एएसिं जीवाणं, सरीर माउं ठिई सकायम्मि ॥ पाणा जोणि पमाणं, जेसिं जं ञ्अत्थि तं ञ्रणिमो ॥ २६ ॥ ञ्अंगुलञ्असंखञ्नागो, सरीरमेगिंदियाण सव्वेसिं ॥ जोयण सहस्स महियं, नवरं पत्तेयरुरकाणं ॥ २७ ॥ बारस जोयण तिन्नी, गाऊञ्त्रा जोयणं च ञ्अणुकमसो ॥ बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय देह मुच्चत्तं ॥ २८ ॥ धणुसयपंच पमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ॥ तत्तो ञ्अद्धूणा, नेया रयणप्पहा जाव ॥ २९ ॥ जोयण सहस्स माणा, मच्छा उरगा य गप्नया हुंति ॥ धणुह पुहुत्तं पंखी, ञ्रुञ्अचारी गाउञ्अ पुहुत्तं ॥ ३० ॥ खयरा धणुहपुहुत्तं, ञ्रुञ्अगा

उरगा य जोयणपुहुत्तं ॥ गाउअ पुहुत्त मित्ता, समुच्छिमा चउपया भणिया ॥ ३१ ॥ छच्चेव गाउआइ, चउप्पया गब्भया मुणेयव्वा ॥ कोसतिगं च मणुस्सा, उक्कोस सरीरमाणेणं ॥ ३२ ॥ इसाणंत सुराणं, रयणीउ सत्त देह मुच्चत्तं ॥ दुग दुग दुग चउगेवि, ज्ञा णुत्तरेक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥ बावीसा पुढवीए, सत्त य आउस्स तिन्नि वाउस्स ॥ वाससहस्सादस तरु, गणाण तेऊ तिरित्ता उ ॥ ३४ ॥ वासाण बारसाऊ, बिइंदियाणं तिइंदियाणं तु ॥ अऊणपन्नदिणाणं, चउरिंदीणं तु छम्मासा ॥ ३५ ॥ सुरनेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तित्तीसं ॥ चउपय तिरिय मणुस्सा, तिन्निय पलिउवमा हुंति ॥ ३६ ॥ जलयर उरभुअगाणं, परमाऊ होइ पुव्वकोमीउ ॥ पक्खीणं पुण भणिउ, असंखभागो य पलियस्स ॥ ३७ ॥ सव्वे सुहुमा साहा, रणा य सम्मुच्छिमा मणुस्सा य ॥ उक्कोस जहन्नेणं, अंतमुहुत्तं चियजियंति ॥ ३८ ॥ उगाहणाउ

माणं, एवं संखेवर्ड समरकायं ॥ जे पुण श्रद्ध विसेसा, विसेससुत्ताउ ते ने या ॥ ३९ ॥ एगिंदिया य सवे, असंख उस्सप्पिणीसकायम्मि ॥ उववजंति चयंति य, अणंतकाया अणंताउ ॥ ४० ॥ संखिज्ज समा विगला, सत्तठ नवा पणिंदि तिरि मणुश्रा ॥ उववजंति सकाए, नारयदेवा य नो चेव ॥४१॥ दसहा जिश्राण पाणा, इंदिय ऊसास आउ बल रूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो, विगलेसु छ सत्त श्रठेव ॥ ४२ ॥ असन्निसन्नीपंचिं, दिएसु नवदस कमेण बोधवा ॥ तेहिं सह विप्पउगो, जीवाणं नन्नए मरणं ॥ ४३ ॥ एवं अणोरपारे, संसारे सायरम्मि नीमम्मि ॥ पत्तो अणंतखुत्तो, जीवेहिं अपत्तधम्मेहिं ॥ ४४ ॥ तह चउरासी लरका, संखा जोणीण होइ जीवाणं ॥ पुढवाईण च उण्हं, पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥ दस पत्तेय तरूणं, चउदस लरका हवंति इयरेसु ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो पंचिंदि तिरियाणं ॥ ४६ ॥ चउरो चउ

रो नारय, सुराण मणुआण चउदस हवंति ॥ संपिंडिआउ सव्वे, चुलसी ल
रकाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥ सिद्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्मं न पाण जोणीउ ॥
साइ अणंता तेसिं, ठिई जिणंदागमे भणिया ॥ ४८ ॥ काले अणाइनिह
णे, जोणि गहणम्मि भीसणे इत्थ ॥ भमिया भमिहंति चिरं, जीवा जिणव
यण मलहंता ॥ ४९ ॥ ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते दुल्लहे वि संमत्ते ॥ सिरिसं
तिसूरि सिठे, करेह भो उज्जमं धम्मे ॥ ५० ॥ एसो जीववियारो, संखेवरु
ईण जाणणाहेऊ ॥ संखित्तो उद्धरिउ, रुद्दाउ सुयसमुद्दाउ ॥५१॥ इति जीव०
सं० ॥ अथ श्रीनवतत्त्वप्रकरणप्रारंभः ॥ जीवाऽजीवा पुण्णं, पावाऽसव
संवरो य निज्जरणा ॥ बंधो मुक्खो य तहा, नव तत्ता हुंति नायव्वा ॥ १ ॥
चउदस चउदस बाया, लीसा बासीय हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारस, चउ
नव भेया कमेणेसिं ॥ २ ॥ एगविह दुविह तिविहा, चउव्विहा पंच छव्विहा

जीवा ॥ चेयण तस इयरेहिं, वेय गई करण काएहिं ॥ ३ ॥ एगिंदिय सुहुमि
यरा, सन्नियर पणिंदिया य स बि ति चउ ॥ अपजत्ता पजत्ता, कमेण चउ
दस जियठाणा ॥ ४ ॥ नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ॥ वीरियं उ
वउगो य, एयं जीवस्स लक्खणं ॥ ५ ॥ आहार सरीरिंदिय, पजत्ती आण
पाण जास मणे ॥ चउ पंच पंच छप्पिय, इग विगला सन्नि सन्नीणं ॥ ६ ॥ प
णिंदिय त्तिबलूसा, साऊदसपाण चउ छ सग अठ ॥ इग डु ति चउरिंदीणं,
असन्नि सन्नीण नव दस य ॥ ७ ॥ इति जीवतत्वम् ॥ धम्मा ऽधम्मा ऽगासा,
तिय तिय नेया तहेव अद्धा य ॥ खंधा देसपएसा, परमाणु अजीव चउदस
हा ॥ ८ ॥ धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अजीवा ॥ चलणस
हावो धम्मो, थिरसंठाणो अहम्मो य ॥ ९ ॥ अवगाहो आगासं, पुग्गल
जीवाण पुग्गला चउहा ॥ खंधा देसपएसा, परमाणू चेव नायव्वा ॥ १० ॥ सद्दं

धयार उज्जोय, पभा गया तवेहिआ ॥ वन्न गंध रसा फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ ११ ॥ एगाकोडिसतसठि, लक्का सत्तहुत्तरी सहस्सा य ॥ दोयसया सोलहिया, आवलिया इग मुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥ समयाऽवली मुहुत्ता, दीहा पक्खा य मास वरिसा य ॥ नणिउं पलिआ सागर, उसप्पिणी सप्पिणी कालो ॥ १३ ॥ परिणामि जीव मुत्ता, सपएसा एग खित्त किरिआए ॥ निच्चं कारण कत्ता, सव्वगद मिदि रहिअपवेसे ॥ १४ ॥ इत्यजीवतत्वम् ॥ सा उच्च गो य मणु डुग, सुर डुग पंचिंदिजाइ पणदेहा ॥ आइ ति तणू णु वंगा, आइम संघयण संठाणा ॥ १५ ॥ वन्नचउक्का गुरु लहु, परघा ऊसास आय वुज्जोयं ॥ सुभखगइ नमिण तस दस, सुर नर तिरियाउ तित्थयरं ॥ १६ ॥ तस बायर पजत्तं, पत्तेयथिरं सुभं च सुभगं च ॥ सुस्सर आइज्ज जसं, तसाइ दसगं इमं होइ ॥ १७ ॥ इति पुण्यतत्वम् ॥ नाणंतराय दसगं, नवबीये

नीय साय मिच्छत्तं ॥ थावर दस निरयतिगं, कसाय पणवीसतिरियडुगं ॥ १८ ॥
इग बि ति चउ जाईउ, कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥ अपसच्छं वन्न चउ,
अपढम संघयण संठाणा ॥ १९ ॥ थावर सुहुम अपज्ज, साहारण मथिर
मसुन्न डुन्नगाणि ॥ डुस्सर णाइज्ज जसं, थावरदसगं तु विसेयं ॥ २० ॥
इति पापतत्वम् ॥ इंदिअ कसाय अव्वय, जोगा पंच चउ पंच तिन्नि कमा ॥
किरिआउ पणवीसं, इमाउ ताउ अणुक्कमसो ॥२१॥ काइय अहिगरणीआ,
पाउसिआ पारितावणी किरिया ॥ पाणाइवाइ रंनिअ, परिग्गहिया मायवत्ती
अ ॥ २२ ॥ मिच्छा दंसण वत्ती, अपच्चखाणाय दिठि पुठीअ ॥ पाडुच्चिअ
सामंतो, वणीअ नेसच्छि साहच्छी ॥ २३ ॥ आणवणि विआरणीआ, अण
नोगा अणवकंखपच्चइआ ॥ अन्नापउग समुदा, ण पिज्ज दोसे रिआवहि
आ ॥ २४ ॥ इत्याश्रवतत्वम् ॥ समई गुत्ति परीसह, जइधम्मो नावणा च

रित्ताणि ॥ पण ति दुवीस दस बार, स पंचभेएहिं सगवन्ना ॥ २५ ॥ इरिया
भासे सणा दाणे, उच्चारे सुमई सुअ ॥ मणगुत्ति वयगुत्ति, कायगुत्ति तहेव य
॥२६॥ खुहा पिवासा सी उण्हं, दंसा चेला रइ त्थिउ ॥ चरिआ निसिआ सि
ज्जा, अक्कोस वह जायणा ॥ २७ ॥ अलाभ रोग तण फासा, मल सक्कार प
रीसहा ॥ पन्नाअन्नाण सम्मत्तं, इअ बावीसं परीसहा ॥ २८ ॥ खंती मद्दव अ
ज्जव, मुत्ती तव संजमे अ बोधव्वे ॥ सच्चं सोअं आकिं, चणं च बंभं च जइध
म्मो ॥२९॥ पढम मणिच्च मसरणं, संसारो एगया य अन्नत्तं ॥ असुइत्तं आ
सव सं, वरो अ तह निज्जरा नवमी ॥३०॥ लोगसहावो बोही, दुलहा धम्म
स्स साहगा अरिहा ॥ एआउ भावणाउ, भावे अव्वा पयत्तेणं ॥३१॥ सामाइ
अत्थ पढमं, छेउवठावणं भवेबीअं ॥ परिहारविसुद्धीयं, सुहुमं तह संपरायं च
॥३२॥ तत्तोअ अहक्खायं, खायं सव्वम्मि जीवलोगम्मि ॥ जं चरिऊण सुवि

हिआ, वचंति अयरामरं ठाणं॥३३॥इति संवरतत्वं॥अणसण मूणोयरिआ, वत्तीसं खेवणं रसच्चाउ ॥ काय किलेसो संली, णआयबझोतवो होइ ॥३४॥ पायच्छित्तं विणउ,वेयावच्चं तहेव सझाउ ॥ झाणं उस्सग्गो विअ, अप्भितरउ तवो होइ ॥३५॥बारसविहं तवो नि, ज्जराय बंधो चउविगप्पो अ ॥ पयइ ठिइअणुभाग, पएस भेएहि नायवो ॥ ३६ ॥ इति निर्ज्जरातत्वम् ॥ पयइ सहावोवुत्ता, ठिइ कालावहारणं ॥ अणुभागो रसो नेउ, पएसो दलसंचउ ॥ ३७ ॥ पडपडिहार सि मज्ज, हडचित्तकुलाल भंरूगारीणं ॥ जह ए एसिंभावा, कम्माणवि जाण तह भावा ॥ ३८ ॥ इह नाण दंसणावर, ण वेय मोहाउ नाम गोआणी ॥ विग्घं च पण नव डु अ, ठवीस चउ ति सय डु पणविहं ॥ ३९ ॥ नाणे य दंसणे य, वेअणिए चेव अंतराईए ॥ तीसं कोडाकोडी, अयराणं ठिइ य उक्कोसा ॥ ४० ॥ सत्तरि कोडाकोडी, मोहणिए वीस नाम गोएसु ॥ ति

त्तीसं अयराइं, आउठिइ बंध उक्कोसा ॥ ४१ ॥ बारस मुहुत जहन्ना, वेय
णिए अठ नाम गोएसु ॥ सेसाणंतमुहुत्तं, लहुठिई सनायव्वा ॥ ४२ ॥ इति
बंधतत्त्वं ॥ संतपय परूवणाया, दव्वपमाणं च खित्तफुसणाय ॥ कालो अ अंत
रं भा, ग भावअप्पा बहु चेव ॥ ४३ ॥ संतं सुध्द पयत्ता, विजंत्तं खकुसुमं व न
असंतं ॥ मुक्कत्ति पयं तस्सउ, परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥ गइ इंदीए
काये, जोए वेए कसाय नाणे य ॥ संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्निआ
हारे ॥ ४५ ॥ नरगइ पणिंदि तसभव, सन्नि अहक्काय खइअ सम्मत्ते ॥ मु
क्कोणाहार केवल, दंसण नाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥ दव्वपमाणे सिध्दा, णं जीव
दव्वाणि हुंति णंताणि ॥ लोगस्स असंखिज्जे, भागे इक्को य सव्वे वि ॥ ४७ ॥
फुसणा अहिआ कालो, इगसिध्द पडुच्च साइउणंतो ॥ पडिवाया भावाउ,
सिध्दाणं अंतरं नत्थि ॥ ४८ ॥ सव्व जियाण मणंते, भागे तेतेसि दंसणं नाणं ॥

खइए भावे परिणा, मि एअ पुण होइ जीवत्तं ॥ ४९ ॥ थोवा नपुंस सि
द्धा, थी नर सिद्धा कमेण संखगुणा ॥ इअ मुक्ख तत्तमेअं, नव तत्ता लेस
उ भणिआ ॥ ५० ॥ जीवाइ नव पयत्थे, जो जाणइ तस्स होइ सम्मत्तं ॥
भावेण सद्दहंतो, अयाणमाणेवि सम्मत्तं ॥ ५१ ॥ सव्वाइं जिणेसर भा, सिआ
इं वयणाई नन्नहा हुंति ॥ इइ बुद्धी जस्स मणे, सम्मत्तं निच्चलं तस्स
॥ ५२ ॥ अंतो मुहुत्त मित्तं, पि फासिअं जेहिं हुज्ज सम्मत्तं ॥ तेसिं अव
ड्ढपुग्गल, परिअट्टो चेव संसारो ॥ ५३ ॥ उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल परिअ
ट्टउ मुणेअव्वो ॥ तेणंताती अद्धा, अणागयद्धा अणंत गुणा ॥ ५४ ॥ जिण
अजिण तित्थ तित्था, गिहि अन्न सलिंग थी नर नपुंसा ॥ पत्तेअ सयंबुद्धा,
बुद्धबोहि कणिक्काय ॥ ५५ ॥ जिणसिद्धा अरिहंता, अजिण सिद्धा य पुंमरि
या पमुहा ॥ गणहारि तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा य मरुदेवी ॥ ५६ ॥ गिहिलिं

ग सिद्ध भरहो, वलकलचीरीय अन्न लिंगम्मि ॥ साहू सलिंग सिद्धा, थी सि द्धा चंदणा पमुहा ॥५७॥ पुं सिद्धा गोयमाई, गांगेयाई नपुंसया सिद्धा ॥ पत्ते य सयंबुद्धा, भणिया करकंडु कविलाई ॥५८॥ तह बुद्धबोहिगुरुबो, हिया इग समय एग सिद्धा य ॥ इग समएवि अणेगा, सिद्धा ते णेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥ जइआइ होइ पुछा, जिणाण मग्गंमि उत्तरं तइया ॥ इक्कस निग्गोयस्स, अ णंत भागो य सिद्धिगउ ॥६०॥ इति मोक्षतत्त्वं ॥ इतिश्रीनवतत्त्वं समाप्तं ॥

अथ श्रीदंडकप्रकरणं लिख्यते ॥ नमिउं चउवीसजिणे, तस्सुत्तवियारलेसदे सणउ ॥ दंडगपएहिं तेच्चिय, थोसामि सुणेह भो भव्वा ॥ १ ॥ नेरइया असुरा ई, पुढवाइ बेंदियादउ चेव ॥ गब्भय तिरिय मणुस्सा, वंतर जोइसिय वेमा णी ॥ २ ॥ संखित्तयरीउ इमा, सरीरमोगाहणा य संघयणा ॥ सन्ना संठाण कसा, य लेस इंदीय दु समुघाया ॥ ३ ॥ दिठी दंसण नाणे, जोगुवउगो

ववाय चवण ठिई ॥ पज्जत्ति किमाहारे, सन्नि गई आगई वेए ॥ ४ ॥ चउ ग
ब्भ तिरिय वाउसु, मणुआणं पंचसेस ति सरीरा ॥ थावर चउगे डुहउ, अंगु
लअसंखनाग तणु ॥५॥ सव्वेसिं पि जहन्ना, साहाविय अंगुलस्स संखं सो ॥
उक्कोस पणसय धणु, नेरइया सत्त हत्थ सुरा ॥ ६ ॥ गब्भतिरि सहस जोयण,
वणस्सई अहिय जोयण सहस्सं ॥ नर तेइंदि तिगाऊ, बेइंदिय जोयणे बार
॥ ७ ॥ जोयणमेगं चउरिं, दि देह मुच्चत्तणं सुयेए नणियं ॥ वेउव्विय देहं पुण,
अंगुलसंखं समारंने ॥ ८ ॥ देव नर अहिय लक्खं, तिरियाणं न वय जोयण
सयाइं ॥ डुगुणं तु नारयाणं, नणियं विउव्विय सरीरं ॥ ए ॥ अंत मुहुत्तं
निरए, मुहुत्त चत्तारि तिरिय मणुएसु ॥ देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउव्वणा
कालो ॥१०॥ थावर सुर नेरइया, अस्संघयणा य विगल छेवठा ॥ संघयण
छगं गब्भय, नर तिरिएसु मुणेयव्वं ॥ ११ ॥ सव्वेसिं चउ दह वा, सन्ना स

वे सुरा य चउरसा ॥ नर तिरिय छसंठाणा, हुंडा विगलिंदि नेरइया ॥ १२ ॥
नाणाविह धय सूई, बुब्बुय वण वाउ तेउ अपकाया ॥ पुढवी मसूर चंदा,
कारा संठाणओ भणिया ॥ १३ ॥ सव्वे वि चउकसाया, लेस छगं गब्भ तिरिय
मणुएसु ॥ नारय तेऊ वाऊ, विगला वेमाणिय तिलेसा ॥ १४ ॥ जोइसिय
तेउ लेसा, सेसा सव्वे वि हुंति चउलेसा ॥ इंदियदारं सुगमं, मणुआणं
सत्त समुग्घाया ॥ १५ ॥ वेयण कसाय मरणे, वेउव्विय तेय एय आहारे ॥
केवलिय समुग्घाया, सत्त इमे हुंति सन्नीणं ॥ १६ ॥ एगिंदियाण केवलि,
तेयाहारग विणाउ चत्तारि ॥ ते वेउव्विय वज्जा, विगला सन्नीण ते चेव ॥ १७ ॥
पण गब्भ तिरि सुरेसु, नारय वाऊसु चउर तिय सेसे ॥ विगल दुदिठी थावर,
मिच्छत्ती सेस तिय दिठी ॥ १८ ॥ थावर बितिसु अचक्खु, चउरिंदिसु त
दुगं सुए भणियं ॥ मणुआ चउ दंसणिणो, सेसेसु तिगं तिगं भणियं

॥१ए॥ अन्नाण नाण तिय तिय, सुर तिरि निरए थिरे अनाण दुग ॥ नाणन्ना
ण दु विगले, मणुए पण नाण तिअनाणा ॥ २० ॥ इक्कारस सुर निरए, तिरि
एसु तेर पनर मणुएसु ॥ विगले चउ पण वाए, जोगतियं थावरे होई ॥ २१ ॥
उवउंगा मणुएसु, बारस नव निरय तिरिय देवेसु ॥ विगलदुगे पण छक्कं, चउ
रिंदिसु थावरे तियगं ॥२२॥ संख मसंखा समए, गब्भय तिरि विगल नारय सु
रा य ॥ मणुआ नियमा संखा, वण णंता थावर असंखा ॥ २३ ॥ असन्नि नर
असंखा, जह उववाए तहेव चवणेवि ॥ बावीस सग ति दस वा, स सहस उ
क्किठ पुढवाई ॥२४॥ तिदिण ग्गि ति पल्लाऊ, नर तिरि सुर निरय सागर ति
तीसा ॥ वंतर पल्लं जोइस, वरिस लक्खाहिअं पलिअं ॥२५॥ असुराण अहिय
अयरं, देसूण दु पल्लयं नवनिकाए ॥ बारस वासुणु पण दिण, छम्मासु
क्किठ विगलाऊ ॥२६॥ पुढवाइ दस पयाणं, अंत मुहुत्तं जहन्न आउठिई ॥

दस सहस वरिस ठिइआ, भवणाहिव निरयवंतरिया ॥ २७ ॥ वेमाणिय जो इसिआ, पल्लत यठं सआउआ हुंति ॥ सुर नर तिरि निरएसु, छ पज्जत्ति थावरे चउगं ॥ २८ ॥ विगले पंच पजत्ति, छद्दिसि आहार होइ सव्वेसिं ॥ पण गाइ पए भयणा, अह सन्नि तियं भणिस्सामि ॥ २९ ॥ चउविह सुर तिरिएसु, निरएसु अ दीहकालिगी सन्ना ॥ विगले हेउवएसा, सन्नारहिया थिरा सव्वे ॥ ३० ॥ मणुआण दीह कालिअ, दिठीवाउवएसिआ केवि ॥ पज पण तिरि मणुअ च्चिय, चउविह देवेसु गछंति ॥ ३१ ॥ संखाउ पज्ज पणिंदि, तिरिय नरेसू तहेव पजत्ते ॥ भू दग पत्तेयवणे, एएसु च्चिय सुरागमणं ॥ ३२ ॥ पज्जत्त संख गब्भय, तिरिय नरा निरय सत्तगे जंति ॥ निरउवट्टा एएसु, उववज्जंति न सेसेसु ॥ ३३ ॥ पुढवी आउ वणस्सइ, मज्झे नारय विवज्जिआ जीवा ॥ सव्वे उववज्जंति, निय निय कम्माणुमाणेणं ॥ ३४ ॥ पुढवाइ दस पएसु, पु

ढवी आऊ वणस्सई जंति ॥ पुढवाइ दस पएहिय, तेऊ वाऊसु उववाउ ॥३५॥
तेऊ वाऊ गमणं, पुढवी पमुहम्मि होइ पय नवगे ॥ पुढवाइ ठाणदसगा, विग
लाइं तिय तहिं जंति ॥ ३६ ॥ गमणा गमणं गप्रय, तिरिआणं सयल जीव
ठाणेसु ॥ सवह जंति मणुआ, तेऊ वाऊहिं नो इंति ॥ ३७ ॥ वेय तिय ति
रि नरेसु, इबी पुरिसो अ चउविह सुरेसु ॥ थिर विगल नारएसु, नपुंस वेउ ह
वइ एगो ॥ ३८ ॥ पज्ज मणु बायरग्गी, वेमाणिय जवण निरय विंतरिआ ॥
जोइस चउ पण तिरिया, बेइंदि तिइंदि जूआऊ ॥ ३९ ॥ वाऊ वणस्सई चि
य, अहिआ अहिआ कमेण मेहुंति ॥ सव्ववि इमे जावा, जिणा मए णंतसो
पत्ता ॥ ४० ॥ संपइ तुह्म जत्तस्स, दंडग पय जमण जग्ग हिययस्स ॥ दंड
तियविरयसुलहं, लहु मम दिंतु मुस्कपयं ॥ ४१ ॥ सिरि जिणहंस मुणीस
र, रज्जे सिरि धवलचंदसीसेणं ॥ गजसारेणं लिहिया, एसा विन्नत्ति

अप्पहिआ ॥ ४२ ॥ इतिश्री दंडकप्रकरणं संपूर्णम् ॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ अथ श्रीलघुसंघयणी प्रारभ्यते ॥ नमिय जिणं सव्वन्नुं, जगपुज्जं जगगुरुं महावीरं ॥ जंबुद्दीव पयत्थे, वुत्थं सुत्ता सपरहेऊ ॥ १ ॥ खंडा जोयण वासा, पव्वय कूडा य तित्थ सेढीओ ॥ विजय द्दह सलिलाओ, पिंडेसिं होइ संघयणी ॥ २ ॥ णउय सयं खंडाणं, भरहपमाणेण भाइए लक्खे ॥ अहवा णउअसय गुणं, भरह पमाणं हवइ लक्खं ॥ ३ ॥ अहविग खंडे भरहे, दो हिमवंते अ हेमवइ चउरो ॥ अठ महाहिमवंते, सोलस खंडाइ हरिवासे ॥ ४ ॥ बत्तीसं पुण निसढे, मिलिया तेसठि बीयपासे वि ॥ चउसठिओ विदेहे, तिरासि पिंडेइ णउअसयं ॥ ५ ॥ जोयण परिमाणाइं, सम चउरंसाइं इत्थ खंडाइं ॥ लक्खस्स य परिहीए, तप्पाय गुणेय हुंतेव ॥ ६ ॥ विक्खंभ वग्ग दहगुण, करणी वट्टस्स परिरओ होइ ॥ विक्खंभ पाय गुणिओ, परिरओ तस्स गणियपयं ॥ ७ ॥ परिही

तिलक्ख सोलस, सहस्स दोयसय सत्तवीस हिया ॥ कोस तिग अठावीसं, धणु सय तेरंगुल६ हियं ॥ ८ ॥ सत्तेवयकोडिसया, णउआ छप्पन्न सय सहस्साइं ॥ चउणउयं च सहस्सा, सयंदिवड्ढं च साहीयं ॥ ९ ॥ गाउअ मेगं पनरस, धणुसया तह धणूणि पनरस्स ॥ सट्ठिं च अंगुलाइं, जंबुद्दीवस्स गणियपयं ॥ १० ॥ भरहाइ सत्त वासा, वियड्ढ चउ चउरतिंस वट्टियरे ॥ सोलस वक्खार गिरि, दो चित्त विचित्त दो जमगा ॥ ११ ॥ दोसय कणय गिरीणं, चउ गयदंता य तह सुमेरू य ॥ छ वासहरा पिंडे, एगुणसत्तरि सया उन्नी ॥१२॥ सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूडा य हुंति पत्तेयं ॥ सोमणस गंधमायण, सत्तठ्य रुप्पि महाहिमवे ॥ १३ ॥ चउतीस वियड्ढेसु, विज्जुप्पह निसढ नीलवंतेसु ॥ तह मालवंत सुरगिरि, नव नव कूडाइं पत्तेयं ॥ १४ ॥ हिमसिहरिसु इक्कारस, इय इगसठी गिरीसु कूडाणं ॥ एगत्ते सव्वधणं, सयचउरो सत्तसठीयं

॥ १५॥ चउ सत्त अठ नवग, गारसकूमेहिं गुणह जहसंखं॥ सोलस डुडु गुणया लं, डुवेय सगसठि सयचउरो॥ १६ ॥ चउतीसं विजएसु, उसहकूमा अठमेरुजंबु मि॥अठय देवकुराइं, हरिकूम हरिस्सए सठी॥१७॥मागह वरदाम पत्ना, सं तिब विजयेसु एरवय नरहे॥ चउतीसा तिहिं गुणिया, डुरुत्तरसयं तु तिबाणं॥१८॥ विज्जाहर अनिउगिय, सेढीउ डुन्नि डुन्नि वेअट्ठे ॥ इय चउगुण चउतीसा, ब त्तीस सयं तु सेढीणं॥ १९ ॥ चक्की जेयबाइ, विजयाइं इब हुंति चउतीसा॥म ह दह ब प्पउमाई, कुरूसु दसगंति सोलसगं ॥ २० ॥ गंगा सिंधू रत्ता, रत्त वई चउ नईउ पत्तेयं॥ चउदसहिं सहसेहिं, समग्ग वच्चंति जलहिंमि॥ २१ ॥ एवं अनिंतरिया, चउरो पुण अठवीस सहसेहिं॥ पुणरवि बप्पन्नेहिं, सहसे हिं जंति चउ सलिला॥ २२ ॥ कुरुमद्ये चउरासी, सहसाइं तहय विजय सो लससु॥ बत्तीसाण नईणं, चउदस सहसाइं पत्तेयं॥ २३ ॥ चउदस सह

स्स गुणिया, अडतिस नइउ विजय मन्विल्ला ॥ सीउयाए निवम्हं, ति तहय सीयाइ एमेव ॥ ७४ ॥ सीया सीउंया वि य, बत्तीससहस्सपंचलस्केहिं ॥ स व्वे चउदस लस्का, छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥ ७५ ॥ छज्जोयणसकोसे, गंगा सिंधूण वित्थरो मूले ॥ दसगुणिउ पज्जंते, इय दु दु गुणणेण सेसाणं ॥ ७६ ॥ जोयणसयमुच्चिठा, कणयमया सिहरिचुल्लहिमवंता ॥ रुप्पि महाहिमवंता, दुसुउच्चा रुप्पकणयमया ॥ ७७ ॥ चत्तारि जोयण सए, उच्चिठो निसढ नी लवंतो य ॥ निसढो तवणिज्जमउ, वेरुलियो नीलवंतो य ॥ ७८ ॥ सव्वे वि प व्वयवरा, समयखित्तम्मि मंदर विहुणा ॥ धरणितले मुवगाढा, उस्सेय चउब्भा यम्मि ॥ ७९ ॥ खंडाई गाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबुदीवस्स ॥ संघयणी सम्म त्ता, रइया हरिजद्दसूरीहिं ॥ ३० ॥ इति श्रीलघुसंग्रहणीप्रकरणं संपूर्णम् ॥ ॥ अथ बृहत्संग्रहणीसूत्राणि ॥ नमिउं अरिहंताई, ठिइ जवणो गाहणा य प

त्तेयं ॥ सुरनारयाण वुहं, नरतिरियाणं विणा नवणं ॥ १ ॥ उववाय चवण विरहं, संखं इगसमइअं गमागमणे ॥ दसवाससहस्साइं, नवणवईणं जहन्नठि ई ॥ २ ॥ चमर बलि सार महिअं, तद्देवीणं तु तिन्नि चत्तारि ॥ पलियाइं स ड्ढाइं, सेसाणं नवनिकायाणं ॥ ३ ॥ दाहिण दिवड्ढपलिअं, उत्तरउ हुंति दुन्नि दे सूणा ॥ तद्देवि मद्ध पलिअं, देसूणं आउमुक्कोसं ॥ ४ ॥ वंतरिआण जहन्नं, दसवाससहस्स पलिअमुक्कोसं ॥ देवीणं पलिअद्धं, पलिअं अहियं ससिरवी णं ॥ ५ ॥ लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलिअमेएसिं ॥ ठिइ अद्धं दे वीणं ॥ कमेण नक्खत्ततारा णं ॥ ६ ॥ पलिअद्धं चउनागो, चउ अम्नागाहिगा उ देवीणं ॥ चउजुअले चउनागो, जहन्नमम्नाग पंचमए ॥ ७ ॥ दोसाहि स त्तसाहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्किक्क महिय मित्तो, जा इ गतीसुवरि गेविज्जे ॥ ८ ॥ तित्तीस णुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिइ जिठा ॥

सोहम्मे ईसाणे, जहन्नठिई पलिअ महियं च ॥ ए ॥ दोसाहि सत दस चउद स, सत्तर अयराइं जा सहस्सारो ॥ तप्परउ इक्किक्कं, अहिअं जा णुत्तर चउक्के ॥ १० ॥ इगतीससागराइं, सव्वठे पुण जहन्नठिइ नत्थि ॥ परिगहिआणिअ राणिय, सोहम्मीसाणदेवीणं ॥ ११ ॥ पलिअं अहिअं च कमा, ठिई जहन्ना इउअ उक्कोसा ॥ पलिआइं सत्त पन्ना, तहय नव पंचवन्ना य ॥ १२ ॥ पण छ च्चउ चउ अठ य, कमेण पत्तेअ मग्गमहिसीउ ॥ असुर नागाइ वंतर, जोइस कप्पडुगिंदाणं ॥ १३ ॥ डुसुतेरस डुसुबारस, छ प्पण चउ चउ डुगे डुगे अ चउ ॥ गेविज्ज णुत्तरे दस, बिसठि पयरा उवरि लोए ॥ १४ ॥ सोहम्मुक्कोसठिइ, निअपयरविहत्त इछसंगुणिआ ॥ पयरुक्कोस ठिइउ, सव्वछजहन्नउ पलियं ॥ १५ ॥ सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरविहत्त इछसंगुणिउ ॥ हिठिल्लठिइसहिउ, इछियपयरम्मि उक्कोसा ॥ १६ ॥ सोमजमाणं स तिभा, ग पलिय वरुणस्स

देसूणा ॥ वेसमणे दो पलिया, एस ठिई लोगपालाणं ॥ १७ ॥ कप्पस्स अंतपयरे, नियकप्पवडिंसया विमाणाउ ॥ इंदनिवासा तेसिं, चउदिसिं लोगपालाणं ॥ १८ ॥ (सुरेसु ठिइदारं सम्मत्तं, एएसु चेव भवणदारं भण्णइ) असुरा नाग सुवन्ना, विज्जू अग्गीइ दीव उदहीअ ॥ दिसि पवण थणिय दसविह, भवणवई तेसु दुदु इंदा ॥१९॥ चमरे बलीअ धरणे, भूयाणंदेअ वेणुदेवे य ॥ तत्तो अ वेणु दाली, हरिकंत हरिस्सहे चेव ॥२०॥ अग्गिसिह अग्गिमाणव, पुण्णविसिठे तहेव जलकंते ॥ जलपह तह अमिअगई, मिअवाहण दाहिणुत्तरउ ॥२१॥ वेलंबेअ पभंजण, घोस महाघोस एसि मन्नयरो ॥ जंबुद्दीवं छत्तं, मेरुं दंडं पहु काउं॥२२॥ चउतीसा चउचत्ता, अठत्तीसा य चत्तपंचण्हं ॥ पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणउ ॥२३॥ चउचउलक्खविहूणा, तावइआ चेव उत्तरदिसाए ॥ सव्वे वि सत्तकोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥ २४ ॥ चत्तारियकोडीउ, लक्ख

छच्चेव दाहिणे नवणा ॥ तिसेव य कोडीउ, लक्का नवहि उत्तरउ ॥ २५॥ रय णाए हिठुवरिं, जोयणसहसं विमुत्तु ते नवणा ॥ जंबुद्दीवसमा तह, संख म संखिज्ज वित्थारा ॥ २६ ॥ चूडामणिफणि गरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्से अ ॥ गय मयर वद्धमाणे, असुराईणं मुणसु चिंधे ॥ २७ ॥ असुरा काला ना गु द, हि पंमुरा तह सुवस दिसि थणिया ॥ कणगान्न विज्जु सिहि दी, व अ रुण वाऊ पिअंगुनिन्ना ॥ २८ ॥ असुराणवत्थरत्ता, नागो दहि विज्जु दीव सि हि नीला ॥ दिसि थणिअ सुवन्नाणं, धवला वाऊण संऊरुई ॥ २९ ॥ चउस ठि सठि असुरे, छच्च सहस्साइं धरणमाईणं ॥ सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा आयरक्काय ॥३०॥ रयणाए पढमजोयण, सहसे हिठुवरिं सय सय विहूणे ॥ वंतरियाणं रम्मा, नोमा नगरा असंखिज्जा ॥ ३१ ॥ बाहिंवट्टा अंतो, चउरंस अहोअ कन्नियायारा ॥ नवणवईणं तह वं, तराण इंदनवणाउ नायवा ॥

॥ ३२ ॥ तहिं देवा वंतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ॥ निच्चं सुहिया पमुइ या, गयंपि कालं न याणंति ॥३३॥ ते जंबुदीव भारह, विदेह सम गुरु जहन्न मज्झिमगा ॥ वंतर पुण अठविहा, पिसायभूया तहा जक्खा ॥ ३४ ॥ रक्खस किं नर किंपुरिसा, महोरगा अठमा य गंधव्वा ॥ दाहिणउत्तरभेआ, सोलस तेसिं इमे इंदा ॥ ३५ ॥ काले अ महाकाले, सुरूव पडिरूव पुन्नभद्दे अ ॥ तह चेव माणिभद्दे, भीमे अ तहा महाभीमे ॥ ३६ ॥ किंनर किंपुरिस सपुरिस, महापु रिस तहय अइकाए ॥ महकाए गीअरई, गीअजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥ ३७ ॥ चिंधं कलंब सुलसे, वड खट्टंगे असोग चंपयए ॥ नागे तुंबरुअव्वए, खट्टंगवि वज्जिया रुक्खा ॥३८॥ जक्ख पिसाय महोरग, गंधव्वा साम किंनरा नीला॥ रक्खस किं पुरिसा वि अ, धवला भूआ पुणो काला ॥३९॥ अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाइ अ भूअवाइए चेव ॥ कंदी अ महाकंदी, कोहंडे चेव पयए अ ॥४०॥ इयपढम

जोयणसए, रयणाए अठ वंतरा अवरे ॥ तेसु इह सोलसिंदा, रुअग अहो दाहिणुत्तरउ ॥ ४१ ॥ संनिहिए सामाणे, धाइ विहाए इसिय इसिवाले ॥ ई सर महेसरे विय, हवइ सुवछे विसाले य ॥४२॥ हासे हास रईविय, सेएय भ वे तहा महासेए ॥ पयगे पयगवईविय, सोलसइंदाण नामाइं ॥४३॥ सामाणि याण चउरो, सहस्स सोलसय आयरक्खाणं ॥ पत्तेयं सबेसिं, वंतरवइ ससि रवीणं च ॥४४॥ इंद सम तायतीसा, परिसतिया रक्खलोगपाला य ॥ अणि य पइसा अभिउगा, किब्बिसं दस भवण वेमाणी ॥ ४५ ॥ गंधव नट्ट हय ग य, रह भड अणियाणि सब इंदाणं॥ वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहोनि वासीणं ॥ ४६ ॥ तित्तीस तायतीसा, परिसतिआ लोगपाल चत्तारि ॥ अणि आणि सत्त सत्तय, अणियाहिव सबइंदाणं ॥ ४७ ॥ नवरं वंतर जोइस, इं दाण न हुंति लोगपालाउ ॥ तायत्तीसभिहाणा, तियसावियतेसिं नहु हुंति ॥

॥४८॥ समभूतलाउ अठहिं, दसूण जोयण सएहिं आरब्भ ॥ उवरि दसुत्तर जोयण, सयम्मि चिठंति जोइसिया ॥४९॥ तब रवी दस जोयण, असीइ त डुवरि ससी य रिक्खेसु ॥ अह भरणि साइ उवरिं, बहिमूलो भिंतरे अभिई ॥५०॥ तार रवि चंद रिक्खा, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ॥ सगसय नउय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया चउसु ॥ ५१ ॥ इक्कारस जोयणसय, इग वीसि क्कारसाहिया कमसो ॥ मेरुअलोगाबाहिं, जोइसचक्कं चरइ ठाइ ॥५२॥ अद्धकविठागारा, फलिहमया रम्म जोइस विमाणा ॥ वंतरनयरेहिं तो, संखि ज्जगुणा इमे हुंति ॥५३॥ ताइं विमाणाइं पुण, सब्वाइं हुंति फालिहमयाइं ॥ दगफालीहमया पुण, लवणे जे जोइस विमाणा ॥५४॥ जोयणिगसठि भागा, छप्पन्नडयाल गाउड इगद्धं ॥ चंदाइ विमाणाया, म विब्भरा अद्ध मुच्चत्तं॥५५॥ पणयाल लक्ख जोयण, नरखित्तं तब्भिमे सया भमिरा ॥ नरखित्ताउ बहिं

पुण, अप्पमाणा ठिआ निच्चं ॥५६॥ ससिरविगहनक्खत्ता, ताराउ हुंति जहु त्तरं सिग्घा ॥ विवरीयाउ महड्डीअ, विमाणवहगा कमेणेसिं ॥ ५७ ॥ सोलस सोलस अड चउ, दो सुरसहसा पुरोय दाहिणउ ॥ पच्छिम उत्तर सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो ॥ ५८ ॥ गहअठासी नक्खत, अडवीसं तार कोडि कोडीणं ॥ छासठिसहस नवसय, पणसत्तरि एगससि सिन्नं ॥ ५९ ॥ कोडा कोडी सन्नं, तरंतु मन्नंति खित्त थोवतया ॥ केई अन्ने उस्से, हंगुलमाणेण ताराणं ॥ ६० ॥ किण्हं राहुविमाणं, निच्चं चंदेण होइ अविरहियं ॥ चउरंगुल मप्पत्तं, हिठा चंदस्स तं चरइ ॥६१॥ तारस्स य तारस्स य, जंबुद्दीवम्मि अंतरं गुरुयं ॥ बारस जोयण सहसा, डुन्निसया चेव बायाला ॥ ६२ ॥ निसढो य नीलवंतो, चत्तारिसयउच्च पंचसय कूडा ॥ अद्धंउवरिं रिक्खा, चरंति उभय ठ बाहाए ॥ ६३ ॥ छावठा डुन्निसया, जहन्नमेयं तु होइ वाघाए ॥ निव्वाघा

ए गुरु लहु, दोगाउय धणुसया पंच ॥ ६४ ॥ माणुसनगाउ बाहिं, चंदासूरस्स सूरचंदस्स ॥ जोयणसहस्स पन्ना, स णूणगा अंतरं दिठं ॥ ६५ ॥ ससिससि रविरवि साहिय, जोयण लक्खेण अंतरं होइ ॥ रविअंतरिया ससिणो, ससि अंतरिया रवी दित्ता ॥६६॥ बहियाउ माणुसुत्तर, चंदा सूरा अवठिअजोया ॥ चंदा अभीयजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ६७ ॥ उध्धार सागरडुगे, सठे समएहिं तुल्ल दीवुदही ॥ डुगुणा डुगुण पविछर, वलयागारा पढमवज्जं ॥ ॥ ६८ ॥ पढमो जोयण लक्खं, वट्टो तं वेढिउं ठिया सेसा ॥ पढमो जंबुद्दीवो, सयंभुरमणोदही चरमो ॥ ६९ ॥ जंबू धायइ पुक्कर, वारुणिवर खीरघय खो य नंदिसरा ॥ अरुण रुणवाय कुंम्मल, संख रुयग भुयग कुसकुंचा ॥ ७० ॥ पढमे लवणोजलहि, बीए कालो य पुक्कराईसु ॥ दीवेसु हुंति जलही, दीवस माणेहिं नामेहिं ॥ ७१ ॥ आभरण वछ गंधे, उप्पल तिलएय पउम निहि रय

णे ॥ वासहर दह नईउ, विजया वरकार कप्पिदा ॥७२॥ कुरु मंदर आवासा, कूडा नरकत्त चंद सूरा य ॥ अन्ने वि एवमाइ, पसह वत्थूण जे नामा ॥ ७३ ॥ तं नामा दीवु दही, तिपडोयायार हुंति अरुणाई ॥ जंबू लवणाईया, पत्तेयं ते असंखिज्जा ॥७४॥ ताणं तिम सूरवरा, वज्ञास जलही परं तु इक्किक्का ॥ देवे नागे जरके, नूए य सयंनुरमणे य ॥७५॥ वारुणिवर खीरवरो, घयवर लवणो य हुंति न्निन्नरसा ॥ कालो य पुरकरोदहि, सयंनुरमणो य उदगरसा ॥ ७६ ॥ इरकुरस सेसजलही, लवणे कालो य चरिम बहुमत्ता ॥ पण सग दस जोयण सय, तणु कमा थोवसेसेसु ॥ ७७ ॥ दो ससि दो रवि पढमे, छगुणा लवणम्मि धायईसंके ॥ बाससि बारस रवि, तप्पनिइ निदिठ ससिरविणो ॥ ७८ ॥ तिगुणा पु विल्ल जुया, अणंतराणंतरंमि खित्तंम्मि ॥ कालोए बायाला, बिसत्तरी पुरकरर्द्धंमि ॥ ७९ ॥ दो दो ससि रवि पंती, एगतंरिया ब्सठि संखाया ॥ मेरुं

पयाहिणंता, माणुसखित्ते परियडंति ॥ ८० ॥ छप्पन्नं पंतीउ, नक्खत्ताणं तु मणु यलोगंमि ॥ छवट्ठी छवट्ठी, होई इक्किक्किया पंती ॥८१॥ एवं गहाइणो विहु, नवरं धुव पासवत्तिणो तारा ॥ तंचिय पयाहिणंता, तत्थेव सया परिब्भमंति ॥८२॥ चउयाल सयं पढमि, ल्लयाए पंतीए चंदसूराणं ॥ तेणपरं पंतीउ, चउ रुत्तरियाइ वुड्ढीणं ॥८३॥ बावत्तरि चंदाणं, बावत्तरि सूरियाण पंतीए ॥ पढमा ए अंतरं पुण, चंदाचंदस्स लक्ख दुगं ॥८४॥ जो जावइ लक्खाइं, विछरउ सा गरो य दीवो वा ॥ तावइआउय तहिं, चंदासूराण पंतीउ ॥८५॥ पनरस चुल सीइ सयं, इह ससि रवि मंडलाइं तक्खित्तं ॥ जोयण पणसय दसहिय, भागा अडयाल इगसट्ठा ॥ ८६ ॥ तिसिइगसट्ठा चउरो, इगइगसट्ठस्स सत्तभइय स्स ॥ पणतीसं च दु जोयण, ससिरविणो मंडलं तरयं ॥ ८७ ॥ पणसट्ठी नि सढंमिय, तत्तिय बाहा दु जोयणं तरिया ॥ एगुणवीसं च सयं, सूरस्स य मंड

वा लवणे ॥८८॥ मंमलदसगं लवणे, पणगं निसढम्मि होइ चंदस्स ॥ मंमल अंतरमाणं, जाण पमाणं पुरा कहियं ॥८ए॥ ससिरविणो लवणंमि य, जोयण सय तिन्नि तीस अहियाइं ॥ असिईइ तु जोयणसयं, जंबुद्दीवम्मि पविसंति॥ए०॥ गह रिक्ख तार संखं, जब्बेबसि नाउ मुदहिदीवे वा ॥ तस्ससिहि एग ससिणो, गुणसंखं होइ सव्वग्गं ॥ ए१ ॥ बत्तीसठावीसा, बारस अड चउ विमाण लरकाइं ॥ पन्नास चत्त ब सहस, कमेण सोहम्म माईसु ॥ ए२ ॥ इसु सयचउ इसु सयतिग, मिगारसहियं सयं तिगेहिठा ॥ मज्जे सत्तुत्तरसय, मुवरि तिगे सयमुवरि पंच ॥ ए३ ॥ चुलसीइ लरक सत्ता, णवइ सहस्सा विमाण तेवीसं ॥ सव्वग्ग मुड्ढलोगं, मिइंदया बिसठि पयरेसु ॥ ए४ ॥ चउदिसि चउपंतीउ, बासठिविमाणिया पढमपयरे ॥ उवरि इक्किक्कहीणा, अणुत्तरे जाव इक्किक्कं ॥ ए५ ॥ इंदयवट्टा पंतिसु, तोकमसो तंस चउरसा वट्टा ॥ विविहा पुप्फवकि

स्सा, तयंतरे मुत्तुं पुव्वदिसिं ॥ ९६ ॥ वट्टं वट्टस्सुवरिं, तंसं तंसस्स उवरिमं होइ ॥ चउरंसे चउरंसं, उड्ढंतु विमाण सेढीए ॥ ९७ ॥ सव्वे वट्टविमाणा, एगडुवारा हवंति नायव्वा ॥ तिन्निय तंसविमाणे, चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥ ९८ ॥ आवलि य विमाणाणं, अंतरं नियमसो असंखिज्जं ॥ संखिज्जमसंखिज्जं, भणियं पुप्फावकिन्नाणं ॥ ९९ ॥ एगं देवे दीवे, दुवे य नागोदही सुब्बोधव्वे ॥ चत्तारि जक्खदीवे, भूय समुद्देसु अठेव ॥ १०० ॥ सोलस सयंभुरमणे, दीवेसु पइठिया य सुरभवणा ॥ इगतीसं च विमाणा, सयंभुरमणे समुद्दे य ॥ १०१ ॥ अच्चंत सुरहिगंधा, फासे नवणीय मउय सुह फासा ॥ निच्चुज्जोया रम्मा, सयंपहा ते विरायंति ॥ १०२ ॥ जे दक्खिणेण इंदा, दाहिणउ आवली मुणेयव्वा ॥ जे पुण उत्तर इंदा, उत्तरउ आवली मुणे तेसिं ॥ १०३ ॥ पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा तेवि दाहिणिल्लस्स ॥ तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुंति दुण्हंपि ॥१०४॥ पुव्वे

ण पच्छिमेण य, सामस्स आवली मुणेयव्वा ॥ जेपुण वट्ट विमाणा, मज्झिल्ला दा
हिणल्लाणं ॥ १०५ ॥ पागारपरिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि ॥ चउरंस
विमाणाणं, चउद्दिसिं वेइया होइ ॥ १०६ ॥ जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स
वेइया होइ ॥ पागारो बोधव्वो, अवसेसेहिंतु पासेसु ॥ १०७ ॥ पढमं तिम पयरा
वलि, विमाण मुहभूमि तस्स मासद्धं ॥ पयरगुण मिठकप्पे, सव्वग्गं पुप्फकि
सयरे ॥ १०८ ॥ इगदिसि पंति विमाणा, तिविभत्ता तंस चउरसा वट्टा ॥ तंसे
सु सेसमेगं, खिव सेस दुगस्स इक्किक्कं ॥ १०९ ॥ तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासि
तिगंपि चउगुणं काउं ॥ वट्टेसु इंदयं खिव, पयरधणं मीलियं कप्पे ॥११० ॥
कप्पेसुय मिय महिसो, वराह सीहाय छगल सालूरा ॥ हय गय भुयंग खग्गी,
वसहा विडिमाइं चिंधाइं ॥ १११ ॥ चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सठी
य पन्न चत्ताला ॥ तुल्लसुर तीस वीसा, दस सहस्सा आयरक्ख चउगुणिया ॥

॥ ११२ ॥ दुसु तिसु तिसु कप्पेसु, घणुदहि घणवाय तदुभयं च कमा ॥ सुरभ वणपइठाणं, आगास पइठिया उवरिं ॥ ११३ ॥ सत्तावीस सयाइं, पुढवीपिं मो विमाण उच्चत्तं ॥ पंचसया कप्पदुगे, पढमे तत्तोय इक्किक्कं ॥ ११४ ॥ हायइ पुढवीसु सयं, वड्ढइ भवणेसु दु दु दु कप्पेसु ॥ चउगे नवगे पणगे, तहेव जाणु त्तरेसु भवे ॥ ११५ ॥ इगवीस सया पुढवी, विमाण मिक्कारसेवय सयाइ ॥ ब त्तीस जोयणसया, मिलिया सव्वछ नायव्वा ॥ ११६ ॥ पण चउ ति दु वन्न वि मा, ण सधय दुसु दुसुय जा सहस्सारो ॥ उवरि सिय भवण वंतर, जोइसि याणं विविहवन्ना ॥ ११७ ॥ रविणो उदयछंतर, चउणवइसहस पणसय छ वीसा ॥ बायाल सठिभागा, कक्कड संकंति दियहंमि ॥ ११८ ॥ एयंमि पुणो गुणिए, तिपंच सग नवहि होइ कममाणं ॥ तिगुणंमि य दोलक्खा, तेसीइ स हस्स पंचसया ॥ ११९ ॥ असिई छ सठिभागा, जोयण चउलक्ख बिसतरि

सहस्सा ॥ छच्चसया तेत्तीसा, तीसकला पंचगुणियम्मि ॥ १७० ॥ सत्तगुणे छ
लक्खा, इगसट्ठिसहस्स छ सय छासीया ॥ चउपन्नकला तह नव, गुणंमि अ
डलक्ख सड्ढाउ ॥ १७१ ॥ सत्तसया चत्ताला, अठारसकला य इयकमा चउ
रो ॥ चंडा चवला जयणा, वेगाय तहा गइ चउरो ॥ १७२ ॥ इछयगइं चउ
हिं, जयणयरिं नाम केइ मन्नंति ॥ एहिं कमेहिं मिमाहिं, गईहिं चउरो सुरा
कमसो ॥ १७३ ॥ विक्खंभं आयामं, परिहिं अभिंतरिं च बाहिरियं ॥ जुगवं मि
णंति छम्मा, स जाव न तहावि ते पारं ॥ १७४ ॥ पावंति विमाणाणं, केसिंपि
हु अहव तिगुणियाइए ॥ कमचउगे पत्तेयं, चंमाईगईउ जोइज्जा ॥ १७५ ॥ जो
यण लक्ख परमाणं, निमेस मित्तेण जाइ जो देवा ॥ छम्मासे णय गमणं, एगं
रज्जू जिणा बिंति ॥ १७६ ॥ तिगुणेण कप्पचउगे, पंचगुणेणं तु अठसु मुणिज्जा ॥
गेविज्जे सत्तगुणेणं, नवगुणे णुत्तरचउक्के ॥ १७७ ॥ पढमपयरम्मि पढमे, कप्पे

उडुनामइंदयविमाणं ॥ पणयाल लक्खजोयण, लक्खं सव्वूवरि सव्वठं ॥ १२८ ॥ उडु चंद रयणवग्घू,वीरिय वरुणे तहेव आणंदे॥बंभे कंचण रुइञ्जे,चंद अरुणे य वरुणे य॥ १२९ ॥ वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ॥ मेहे अग्घ हलिद्दे, नलिणे तहलोहियक्खेय ॥ १३० ॥ वइरे अंजण वरमा, ल रिठ देवेय सोम मंगलए ॥ बलभद्द चक्क गया, सोवञ्छिय णंदियावत्ते ॥ १३१ ॥ आ भंकरेय गिध्धी, केऊ गरुले य होइ बोधव्वे ॥ बंभे बंभहिए पुण, बंभुत्तर लंत ए चेव ॥१३२॥ महसुक्क सहस्सारे, आणाय तह पाणएय बोधव्वे ॥ पुप्फे लंका र आरण, तहा विय अच्चुए चेव॥ १३३ ॥सुदंसण सुपडिबध्धे ॥ मणोरमे चे व होइ पढमतिगे॥ तत्तोय सव्वभद्दे, विसालए सोमणे चेव॥ १३४ ॥ सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइय तिगे॥सवठ सिध्धि नामे, इंदया ए व बासठी ॥ १३५ ॥ पणयालीसं लक्खा, सीमंतय माणुसं उडु सिवंच ॥ अपयठाणो

सव्व, ठ जंबुद्दीवो इमं लक्खं ॥ १३६ ॥ अह भागा सग पुढवी, सु रज्जु इक्किक्क तह य सोहम्मे ॥ माहिंद लंत सहसा, र अच्चुय गेविज्ज लोगंते ॥ १३७ ॥ ॥ ७ ॥ सुरेसु भवण दारं सम्मत्तं ॥ इण्हिं उगाहणा दारं भण्णइ ॥ ॥ ॥ भवण वण जोइ सोह, म्मीसाणे सत्तहत्थ तणुमाणं ॥ ड ड ड चउक्कगे वि, जाणु त्तरे हाणि इक्किक्कं ॥१३८॥ कप्पडुग ड ड ड चउगे, नवगे पणगे य जिठठिइ अ यरा ॥ दो सत चउदठारस, बावीसिगतीस तित्तीसा ॥ १३९ ॥ विवरे ताणि कूणे, इक्कारसगाउ पाम्फिए सेसा ॥ हत्थिक्कारसभागा, अयरे अयरे समहियम्मि ॥ १४०॥ चयपुव्वसरीराउ, कमेणएगुत्तराइ वुड्ढीए ॥ एवंठिइविवेसा, सणंकुमारा इ तणुमाणं ॥ १४१ ॥ भवधारणिज्ज एसा, उत्तरविउव्वि जोयणालक्खं ॥ गेविज्ज णुत्तरेसु, उत्तरवेउव्विआ नत्थि ॥ १४२ ॥ साहाविय वेउव्विय, तणू जहन्ना कमेण पारंभे ॥ अंगुल असंख भागो, अंगुल संखिज्ज भागो य ॥ १४३ ॥ ७॥ सुरेसु उ

गाहणा दारं सम्मत्तं, इण्हिं विरहकालोववाय उवट्टणाणं दारं जण्इ ॥ ७ ॥
सामन्नेणं चउविह, सुरेसु बारसमुहुत्त उक्कोसा ॥ उववायविरहकालो, अह जव
णाईसु पत्तेयं ॥ १४४ ॥ जवण वण जोइ सोह, म्मी साणेसू मुहुत्त चउवीसं ॥ तो
नवदिण वीसमुहू, बारसदिण दस मुहुत्ता य ॥ १४५ ॥ बावीस सड्ढदीहा, पणया
ल असीइ दिणसयंतत्तो ॥ संखिज्जा डुसु मासा, डुसु वासा तिसु तिगेसु कमा ॥
॥ १४६ ॥ वासाणसया सहसा, लक्का तह चउसु विजयमाईसु ॥ पलियाअसं
खजागो, सव्वठ संखजागो य ॥ १४७ ॥ सव्वेसिंपि जहन्नो, समऊ एमेव चवणविरहो
वि ॥ इग डु ति संख मसंखा, इग समए हुंति अ चवंति ॥ १४८ ॥ नरपंचिंदिय
तिरिया, णुप्पत्तीसुरजवे पजुत्ताणं ॥ अज्झवसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मंतु
॥ १४९ ॥ नर तिरिअसंखजीवी, सव्वे नियमेण जंति देवेसु ॥ नियआउअसम ही
णा, उएसु ईसाण अंतेसु ॥ १५० ॥ जंति समुच्छिम तिरिया, जवण वणेसु नजो

इमाईसु ॥ जं तेसिं उववाउ, पलिया संखंस आऊसु॥१५१॥बालतवे पडिबद्धा, उक्कड रोसा तवेण गारविया॥वेरेणय पडिबद्धा, मरिउं असुरेसु जायंति ॥१५२॥ रज्जुगाह विस भक्खण, जल जलण पवेस तण्ह छुह दुहउ ॥ गिरिसिर पडणा उ मुया, सुहभावा हुंति वंतरिया॥ १५३ ॥ तावस जा जोइसिया, चरग परिव्वा य बंभलोगो जा ॥ जा सहसारो पंचिं, दितिरिअ जा अच्चुउ सड्ढा ॥ १५४ ॥ जइ लिंगमिच्छदिठि, गेविज्जा जाव जंति उक्कोसं ॥ पयमवि असद्दहंतो, सुत्तत्थं मिच्छदिठीउ॥१५५॥सुत्तं गणहररइअं, तहेव पत्तेयबुद्धरइअं च ॥ सुयकेवलिणा रइअं, अभिन्न दस पुव्विणा रइअं॥ १५६ ॥ छउमत्थ संजयाणं, उववा उक्कोसउ अ सव्वठे ॥ तेसिं सड्ढाणंपिअ, जहन्नउ होइ सोहम्मे ॥ १५७ ॥ लंतंमि चउदपुव्विस, तावसाईण वंतरेसु तहा ॥ एसिं उववाय विही, नियकिरियठिया ण सव्वोवि॥ १५८ ॥ वज्जरिसहनारायं, पढमं बीअं च रिसहनारायं ॥ नारायम

रुनारा, य कीलिया तहय छेवठं ॥ १५९ ॥ एए छ स्संघयणा, रिसहोपट्टोय कीलिया वज्जं ॥ उनउमक्कडबंधो, नाराउ होइ विन्नेउ ॥ १६० ॥ छ गप्नतिरीनराणं, संमुच्छिम पणिंदि विगलछेवठं ॥ सुरनेरइया एगिं, दियाय सव्वे असंघयणा ॥ ॥१६१॥ छेवठेण उगम्मइ, चउरो जा कप्प कीलियाईसु ॥ चउसु उ उ कप्पवुढी, पढमेणं जावसिद्धीवि ॥१६२॥ समचउरंसे नग्गो, ह साइ वामणाय खुज्ज हुंडे य ॥ जीवाण छ संठाणा, सवड सुलरकणं पढमं ॥ १६३ ॥ नाहीए उवरि विञ्रं, तई अमहो पिठि उयर उरवज्जं ॥ सिर गीव पाणी पाए, सुलरकणं तं चउडं तु ॥ ॥१६४॥ विवरीयं पंचमगं, सव्वड अलरकणं जवे छठं ॥ गप्नय नर तिरिय छहा, सुरा समा हुंम्या सेसा ॥१६५॥ इतिदेवानां गतिद्वारं, अधुना आगतिद्वार माह ॥७॥ जंति सुरा संखाउ य, गप्नय पजात्त मणुयतिरिएसु ॥ पजत्ते सुय बायर, नू दग पत्तेयग वणेसु ॥१६६॥ तडवि सणं कुमारं, प्पन्निई एगिंदिएसु नो जंति ॥

आणय पमुहा चविउं, मणुए सुचेव गछंति ॥ १६७ ॥ दोकप्प कायसेवी, दो दो दो फरिस रूवसद्देहिं ॥ चउरो मणेणु वरिमा, अप्पवियारा अणंतसुहा ॥ १६८ ॥ जं च कामसुहं लोए, जं च दिव्वं महासुहं ॥ वीयराय सुहस्सेय, णंतन्नागं पि नग्घई ॥ १६९ ॥ उववाउ देवीणं, कप्पडुगं जा परो सहस्सारा ॥ गमणागमणं नही, अच्चुय परउ सुराणंपि ॥ १७० ॥ तिपलिय तिसार तेरस, साराकप्प डुग त इय लंत अहो ॥ किब्बिसिय नहुंति उवरिं, अच्चुय परउ भिउगाई ॥ १७१ ॥ अपरिग्गह देवीणं, विमाण लरका ढ हुंति सोहम्मे ॥ पलियाई समया हिय, ठिइजासिं जाव दसपलिया ॥ १७२ ॥ ताउ सणं कुमारा, णेवं वट्टंति पलिय दस गेहिं ॥ जा बंभ सुक्क आणय, आरण देवाण पन्नासा ॥ १७३ ॥ ईसाणे चउलरका, साहिय पलियाइ समय अहियठिई ॥ जा पनर पलिय जासिं, ताउ माहिंददे वाणं ॥ १७४ ॥ एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसग वुड्ढीए ॥ लंत सह

सार पाणय, अच्चुय देवाण पणपन्ना ॥१७५॥ किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्कलेसाउ ॥ नवण वण पढम चउले, सजोइस कप्पडुगे तेऊ ॥१७६॥ कप्पतिय पम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा ॥ कणगाभ पउमकेसर, वन्ना डुसु तिसु उवरि धवला॥१७७॥दसवास सहस्साइं,जहन्नमाउं धरंति जे देवा ॥ तेसिं चउथा हारो, सत्तहि थोवेहि ऊसासो ॥ १७८ ॥ आहि वाहि विमुक्कस्स, नीसासूसास एगगो ॥ पाणू सत्तइमो थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥१७९॥ लवसत्तहत्तरीए,होइ मुहुत्तो इमम्मि ऊसासा॥ सग तीस सय तिहुत्तर, तीसगुणा ते अहोरत्ते ॥ १८० ॥ लक्खं तेरस सहसा, नउयसयं अयरसंखयादेवे ॥ पक्खेहिं ऊसासे, वास सहस्सेहिं आहारो ॥ १८१ ॥ दसवास सहस्सु वरिं, समयाई जाव सागरं ऊणं॥दिवसमुहुत्त पहुत्ता, आहारूसास सेसाणं॥१८२॥ सरिरेणो उयाहारो, तयाइफासेण लोमआहारो ॥ पक्खेवाहारोपुण, कावलिउ होइ ना

यव्वो ॥ १८३ ॥ उंयाहारा सव्वे, अपजत्त पजत्त लोम आहारो ॥ सुरनिरय इगिंदिवि
णा, सेसा भवत्था सपक्खेवा ॥ १८४ ॥ सच्चित्ता चित्तोभय, रूवो आहारसव्व तिरि
आणं ॥ सव्वनराणं च तहा, सुरनेरइयाण अच्चित्तो ॥ १८५ ॥ आभोगाणा भो
गा, सव्वेसिं होइ लोम आहारो ॥ निरयाणं अमणुन्नो, परिणमइ सुराण समणु
न्नो ॥ १८६ ॥ तह विगल नारयाणं, अंतमुहुत्ता सहोइ उक्कोसो ॥ पंचिंदि तिरि
नराणं, साहाविउ छठ अठमउ ॥ १८७ ॥ विग्गहगइ मावन्ना, केवलिणो समु
हया अजोगी य ॥ सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥ १८८ ॥ केस
ठि मंस नह रो,म रुहिर वसचम्म मुत्त पुरिसेहिं ॥ रहिया निम्मल देहा, सुगं
ध निस्सास गय लेवा ॥ १८९ ॥ अंतमुहुत्तेणं चिय, पजत्ता तरुण पुरिस संका
सा ॥ सव्वंगभूषणधरा, अजरानिरुया समा देवा ॥ १९० ॥ अणि मिस नयणा
मणक, ज्ज साहणा पुप्फदाम अमिलाणा ॥ चउरंगुलेण भूमि, न छिवंति सुरा

जिणा बिंति ॥१९१॥ पंचसुजिण कल्लाणे, सु चेव महरिसि तवाणु नावाउ ॥ जम्मंतरनेहेण य, आगछंति सुरा इहयं ॥१९२॥ संकंति दिव्वपेमा, विसय पस त्ता समत्त कत्तवा ॥ अणहीण मणुय कज्जा, नरनव मसुहं न इंति सुरा॥१९३॥ चत्तारि पंचजोयण,सयाइ गंधोय मणुयलोगस्स॥उद्धं वच्चइ जेणं, नहु देवा तेण आवंति॥१९४॥दो कप्प पढम पुढवी, दो दो दो बीय तइयगं चउथिं ॥ चउ उ वरिम उहीए, पासंती पंचमं पुढविं ॥१९५॥ छठी छग्गेविज्जा, सत्तमीयरे अणु त्तर सुराउ ॥ किंचूण लोगनालिं, असंखदीवुदहि तिरियं तु ॥१९६॥ बहुअर गं उवरिमगा, उद्धं सविमाण चूलिय धयाइ ॥ ऊणद्ध सागरे सं, ख जोयणा तप्पर मसंखा ॥१९७॥ पण वीस जोयण लहु नारय नवणवण जोइ कप्पाणं॥ गेविज्ज णुत्तराणाय, जहसंखं उहियागारा ॥१९८॥ तप्पागारे पल्लग, पम्हग ऊ ल्लरि मुइंग पुप्फजवे ॥ तिरिय मणुएसु उहि, नाणाविह संठिउ नणिउ॥१९९॥

उद्धं भवण वणाणं, बहुगोवेमाणियाण होउहि ॥ नारय जोइस तिरियं, नर ति
रियाणं अणेगविहो ॥२००॥ इयदेवाणं भणियं, ठिइ पमुहं नारयाण वुच्छामि॥
इगतिन्नि सतदससतर, अयर बावीस तित्तीसा॥२०१॥सत्तसु पुढवीसु ठिई, जि
ठोवरिमाइ हिठ पुढवीए॥होइ कमेण कणिठा, दसवास सहस्स पढमाए ॥२०२॥
नवइ सम सहस लक्का, पुवाणं कोडि अयरदस भागा ॥ इक्किक भाग वुड्ढी,
जा अयरं तेरसे पयरे ॥२०३॥ इय जिठ जहन्ना पुण, दसवास सहस्स लक्क प
यर दुगे ॥ सेसेसु उवरि जिठा, अहो कणिठाउ पइ पुढवी ॥२०४॥ उवरि खि
इ ठिइ विसेसो, सगपयर विहत्तु इछसंगुणिउ ॥ उवरिम खिइ ठिइ सहिउ,इ
छिय पयरम्मि उक्कोसा ॥२०५॥ सत्तसु खित्तज वेयणा, अन्नन्न कयावि पहरणे
हिं विणा ॥ पहरण कया वि पंचसु, तिसु परमाहम्मिय कयावि ॥२०६॥ बंधण
गइ संठाणा, भेया वन्ना य गंध रस फासा ॥ अगुरु लहु सद्द दसहा, असुहा

विय बुग्गला निरए॥२०७॥नरया दस विह वेयण,सीउ सिण खुह पिवास कं डूहिं ॥ परवस्सं जरदाहं, भय सोगं चेव वेयंति ॥ २०८ ॥ पण कोडि अठ स ठी, लक्खा नव नवइ सहस पंचसया ॥ चुलसी अहीयरोगा, छठी तह सत्तमी नरए ॥२०९॥ रयण प्पह सक्कर पह, वालुय पह पंक पहय धूमपहा ॥ तमप हा तम तमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं ॥ २१० ॥ धम्मा वंसा सेला, अंजण रिठा मघा य माघवई॥ नामेहिं पुढवीउ, छत्ताई छत्त संठाणा ॥२११॥ असीय बत्तिस अडविस, वीसा अठार सोल अड सहसा ॥ लक्खुवरि पुढवि पिंडो, घणुदहि घणवाय तणुवाया ॥२१२॥ गयणं च पइठाणं, वीस सहस्साइं घणुद ही पिंडो॥ घणतणुवाया गासा, असंख जोयण जुया पिंडो ॥ २१३ ॥ न फुसं तिअलोगं चउ, दिसंपि पुढवीय वलयसंगहिया ॥ रयणाए वलयाणं, छ ध पंचम जोयणं सढ्ढं ॥ २१४ ॥ विक्खंभो घणउदही, घणतणु बायाण होइ

जहसंखं ॥ सत्तिभाग गाऊयं, गाऊयं तह गाउय तिभागो ॥ २१५ ॥ पढम महीवलएसु, खिविज्ज एयं कमेण बीयाए ॥ दु ति चउ पंच छ गुणं, तइयाइसु तंपि खिव कमसो ॥२१६॥ मझेचिय पुढवि अहे, घणुदहिपमुहाण पिंड परिमाणं ॥ भणियं तवो कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥ २१७ ॥ तीस पणवीस पणरस, दसतिन्नि पणूण एगलक्काइं ॥ पंचय निरया कमसो, चुलसीइ लक्काइ सत्तसु वि ॥ २१८ ॥ तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्नि ग पयर सव्वि गुणवन्ना ॥ सीमंताई अप्पइ, ठाणंता इंदया मझे ॥ २१९ ॥ सीमंतउछपढमो, बीउ पुण रोरुय त्ति नामेण ॥ रंतो य तछ तइउ, होइ चउछो य उभंतो ॥२२०॥ संभंतमसंभंतो, विभंतो चेव सत्तमो निरउ ॥ अठमउ तंतो पुण, नवमो सीउत्ति णायव्वो॥२२१॥ चक्कंतए वुक्कंतो, विकंतो तह चेव रोरुउ निरउ ॥ पढमाए पुढवीए, इंदिया एएबोधव्वा ॥२२२॥थणिए थणए य तहा,

मणए मणए य होइ नायव्वे ॥ घट्टे तह संघट्टे, जिब्भे अव जिब्भए चेव ॥ २२३ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घण लोलुए य बोधव्वे ॥ बीयाए पुढवीए, इक्कारस इंदि
या एए ॥ २२४ ॥ तत्तो तविउ तवणो, तावसो पंचमो य निद्दड्डो ॥ छठो पुण पज्ज
लिउ, उप्पज्जलिउ य सत्तमउ ॥ २२५ ॥ संजलिउ अठमउ, संपज्जलिउ य नवमउ
भणिउ ॥ तइयाए पुढवीए, नवइंदिय नारया ए ए ॥ २२६ ॥ आरे तारे मारे, वच्चे
तमए य होइ नायव्वे ॥ खाड खडे खंडखडे, इंदय नरया य चउछीए ॥ २२७ ॥ खा
ए तमए य तहा, झसे झसंधए तहा तिमिसे ॥ इह पंचम पुढवीए, पंच निरइंद
या हुंति ॥ २२८ ॥ हिमवद्दल लल्लके, तिण्णिउनिर इंदयाय छठीए ॥ एगो य स
त्तमाए, अपइठाणो उ नामेणं ॥ २२९ ॥ पुव्वेण होइ कालो, अवरेण पइठिउ म
हाकालो ॥ रोरो दाहिणपासे, उत्तर पासे महारोरो ॥ २३० ॥ तेहिंतो दिसि विदिसिं,
विणिग्गया अठ निरय आवलिया ॥ पढमे पयरे दिसि गुण, वन्ना विदिसासु

अडयाला ॥ २३१ ॥ बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणाउ हुंति पंतीउ॥जा सत्तमि मज्झि पयरे, दिसि इक्किक्को विदिसि नत्थि ॥ २३२ ॥ इट्ठप्पयरे ग दिसि, संखअडगुणा चउ विणा इग संखा ॥ जह सीमंतय पयरे, एगुणनउया सया तिन्नी ॥२३३ ॥अपयट्ठाणे पंचउ, पढमो मुहमंतिमो हवइ भूमी ॥ मुह भूमि समासद्धं, पयरगुणं होइ सव्वधणं ॥२३४॥ छन्नवइ सय तिवन्ना, सत्तसु पुढवीसु आवली निरया ॥ सेस तियासी लक्खा, तिसय सियाला नवइ सहसा ॥ २३५ ॥ तिसहस्सुच्चा सव्वे, संखमसंखिज्ज वित्थरा यामा ॥ पणयाल लक्ख सीमं, तउय लक्खं अपइट्ठाणो॥२३६॥हिट्ठा घणो सहस्सा, उप्पिंसे कुट्ठडे सहस्सं तु ॥ मज्झे सहस्स सुसिरा, तिन्नि सहस्सुस्सिया निरया ॥ २३७ ॥ छसु हिट्ठोवरि जोयण, सहस्स बावन्न सड्ढ चरिमाए ॥ पुढवीए निरय रहिय, निरया सेसम्मि सव्वासु ॥२३८॥ बिसहस्सूणा पुढवी, तिसहस गुणिएहिं नियय पयरेहिं ॥ ऊणा रुवु

ण निय पयर, न्नाईयापत्र्रडंतरयं ॥२३९॥ तेसीया पंचसया, इक्कारस चेव जो यण सहस्सा॥ रयणा य पत्र्रडंतर, मेगोचिय जोयण तिन्नागो॥२४०॥ सत्ताण वइ सयाइं, बीयाए पत्र्रडंतरं होइ ॥ पणहत्तरि तिन्निसया, बारसहस्सा य तइ याए॥२४१॥ गवठसयं सोलस,सहस्स पंका य दोति न्नागा य ॥ अट्ठाइज्जस याइं, पणवीस सहस्स धूमाए ॥२४२॥ बावन्नसट्ठ सहसा, तमप्पन्ना पत्र्रमंतरं होइ॥एगोचिअपत्र्रमज, अंतररहिज तमतमाए॥२४३॥ पनणठ धणु ठ अं गुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं ॥ सेसासु डुगुण डुगुणं, पणधणु सय जावचरि माए ॥२४४ ॥रयणाय पढम पयरे, हत्रतियं देहमाणमणुपयरं ॥ ठप्पसंगुल सट्ठा,वुट्ठीजातेरसे पुसं ॥२४५॥जं देहपमाण उवरि, माए पुढवीइ अंतिमे प यरे ॥ तं चिय हिठि म पुढवी, पढमं पयरम्मि बोधव्वं ॥२४६॥ तं चेगूणग सगपय र, न्नइयं बीयाइ पयर वुट्ठिन्नवे॥ तिकर ति अंगुल करसत, अंगुला सट्ठि गु

ण वीसं ॥२४७॥ पणधणु अंगुलवीसं, पणरसधणु दुण्णिहच्छ सड्ढाय ॥ बासठ्ठि धणुहसड्ढा, पण पुढवी पयर वुड्ढिइमा ॥२४८॥ इय साहाविय देहो, उत्तर वेउ विउ य तद्दुगुणो ॥ छविहो वि जहस कमा, अंगुल असंख संखंसो ॥२४९॥ सत्तसु चउवीस मुहू, सग पनरदिणेग दु चउ छम्मासा ॥ उववाय चवणविरहो, उहे बारस मुहुत्त गुरू ॥२५०॥ लहुउ दुहावि समउ, संखा पुण सुरसमा मुणेयव्वा ॥ संखाउ पजत्त पणिं, दि तिरि नरा जंति निरएसु ॥२५१॥ मिच्छादिट्ठि महारं, भ परिग्गहो तिव्वकोह निस्सीलो ॥ नरयाउयं निबंधइ, पावमई रुद्दपरिणामो ॥२५२॥ असन्निसरिसिव पक्की, ससीह उरगिं च्छि जंति जा छट्ठिं ॥ कमसो उक्कोसेणं, सत्तम पुढवी मणुय मच्छा ॥२५३॥ वाला दाढी पक्की, जलयर नरयागया उ अइकूरा ॥ जंति पुणो नरएसु, बाहुल्लेणं न उण नियमो॥२५४॥दो पढम पुढवि गमणं, छेवठे कीलियाइ संघयणे ॥ इक्किक्क पुढवि वुड्ढी, आइ तिलेसा

उ नरएसु ॥२५५॥ दुसु काऊ तइयाए, काऊ नीला य नील पंकाए ॥ धुमा य
नीलकिण्हा, दुसु किण्ह हुंति लेस्साओ ॥२५६॥ सुर नारयाण ताओ, दव्वल्लेस्सा
अवठिया भणिया ॥ भाव परावत्तीए, पुणएसिं हुंति छल्लेस्सा ॥२५७॥ निर उ
वट्टा गब्भय, पजत्तसंखाउ लद्धिए पेसिं ॥ चक्कि हरिजुअल अरिहा, जिण जइ
दिसि सम्मपुढविकमा ॥२५८॥ रयणाएओहि गाउय, चत्तारि अद्धुठ गुरु लहु क
मेण ॥ पइ पुढवि गाउयद्धं, हायइ जा सत्तमि इगद्धं॥२५९॥(नरय दारं सम्म
त्तं, मणुयदारं भणइ)॥६॥गब्भनर ति पलियाऊ, ति गाऊ उक्कोस ते जहन्नेणं॥
मुच्छिम दुहावि अंत मु, हु अंगुल असंख भागतणू॥२६०॥बारस मुहुत्त गब्भे,
इयरे चउवीस विरह उक्कोसो ॥ जम्म मरणे सुसमओ, जहन्नसंखा सुरसमाणा
॥२६१॥ सत्तमि महि नेरइए, तेऊ वाऊ असंख नर तिरिए ॥ मुत्तूण सेसजीवा
उप्पजंति नरभवम्मि॥२६२॥सुर नेरइ एहिंचिय, हवंति हरि अरिह चक्किबल

देवा ॥ चउविह सुर चक्किबला, वेमाणिय हुंति हरि अरिहा ॥ २६३ ॥ हरिणो मणुस्स रयणा, इ हुंति नाणुत्तरेहिं देवेहिं ॥ जह संभव मुववाउ, हयगय एगिंदि रयणाणं ॥२६४॥ वामपमाणं चक्कं, छत्तं दंडं डुहत्थयं चम्मं ॥ बत्तीसंगुल खग्गो, सुवन्न कागिणि चउरंगुलिया ॥ २६५ ॥ चउरंगुलो डुअंगुल, पिहुलोय मणी पुरोहि गय तुरया ॥ सेणावइ गाहावइ, वठ्ठइ थी चक्कि रयणाइं ॥२६६॥ चउरो आयुज गेहे, भंमारे तिन्नि डुन्नि वेवठ्ठे ॥ एगं रायगिहम्मिय, नियनयरे चेव चत्तारि॥२६७॥नो सप्पे पंडुए, पिंगलए सव्वरयण महपउमे ॥ कालेय महाकाले, माणव गया महासंखे ॥२६८ ॥ जंबुद्दीवे चउरो, सयाइ वीसुत्तराइ उक्कोसं ॥ रयणाइ जहन्नं पुण,हुंति विदेहंमि छप्पणा ॥२६९॥ चक्कं धणुहं खग्गो, मणी गया तहय होइ वणमाला ॥ संखो सत्तइमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ॥ ॥२७०॥संखनरा चउसुगइ, सु जंति पंचसु वि पढम संघयणे॥इग डु ति जा अठ

सयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ॥२११॥ वीसि त्थि दस नपुंसग, पुरिसट्ठसयं तु एग समएणं ॥ सिज्झइ गिहिअन्न सलिं, ग चउदस अट्ठाहिय सयं च ॥२१२ गुरु लहु मज्झिम दोचउ, अट्ठसयं उड्ढहो तिरिय लोए ॥ चउ बावीसट्ठसयं, दुसमुद्दे तिन्नि सेसजले ॥२१३॥ नरय तिरिया गयादस, नरदेवगईउ वीस अ ट्ठसयं ॥ दसरयणा सक्कर वा, लुयाउ चउ पंक भू दगउ ॥२१४॥ छच्च वणस्सइ दस तिरि, तिरि त्थि दस मणुय वीस नारीउ ॥ असुराइ वंतरा दस, पण तद्देवी उ पत्तेयं ॥२१५॥ जोइ दस देविवीसं, विमाणियट्ठसय वीसदेवीउ ॥ तह पुव्वे एहिंतो, पुरिसो होऊण अट्ठसयं ॥२१६॥ सेसट्ठभंगएसु, दसदस सिज्झंति एग समएणं ॥ विरहो छमास गुरुउ, लहु समउ चवणमिह नत्थि ॥२१७॥अड स ग छ पंच चउ ति, न्नि दुन्नि इक्काय सिज्जमाणेसु ॥ बत्तीसाइसुसमया, निरंतरं अंतरं उवरिं ॥२१८॥ बत्तीसा अडयाला, सठी बावत्तरी य बोधव्वा ॥ चुलसीई

ठसवई, इगहियमत्तहुरसयं च ॥२७९॥ पणयाल लक्खजोयण, विक्खंभा सिद्धि
सिल फलिह विमला ॥ तदुवरि गजोयणंते, लोगंतो तत्थ सिद्धठिई ॥२८०॥
बहुमज्झदेसभाए, अठेवय जोयणाइ बाहिल्लं ॥ चरिमंते सुय तणुई, अंगुलसंखि
ज्जई भागं ॥२८१॥ तिन्निसया तित्तीसा, धणुत्ति भागोय कोसठब्भागो ॥ जं पर
मोगा हणाय, तंते कोसस्स ठब्भागो ॥२८२॥ एगा य होइ रयणी,अठेवय अं
गुलेहिं साहीया ॥ एसा खलु सिद्धाणं, जहन्न उगाहणा भणिया ॥२८३॥ मणु
यदारं समत्तं॥तिरियदारं भणइं॥४॥बावीस सग ति दस वा, स सहस गिण ति
दिण बेंदियाईसु॥बारस वासुण पण दिण,ठम्मास तिपल्लिय ठिई जिठा ॥२८४॥
सण्हाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्कराय खर पुढवी ॥ इग बार चउदसोलस,
ठारस बावीस समसहसा ॥२८५॥ गब्भ भुय जलयरो भय, गब्भोरग पुव्व को
डि उक्कोसा ॥ गब्भचउप्पय पक्खिसु, तिपल्लिय पलियाअसंखंसो ॥२८६॥पुव्वस्स

उपरिमाणं, सय्यरि खलु वास कोडि लरकाय ॥ छप्पसंच सहस्सा, बोधव्वा वा सकोडीणं ॥ १८७ ॥ संमुछि पणिंदि थल खयर उरग नूयगा जिठ ठिइ कम सो ॥ वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपन्न बायाला ॥ १८८ ॥ एसा पुढवाई णं, नव ठिईसंपयंतु कायठिई ॥ चउ एगिंदि सु णेया, उसप्पिणीउ असंखिज्जा, ॥१८९॥ ताउ वणंमि अणंता, संखिज्जा वास सहस विगलेसु ॥ पंचिंदि तिरि नरेसु, सत्तठ नवाउ उक्कोसा ॥१९०॥ सव्वेसिंपि जहन्ना, अंतमुहुत्तं नवेय का ए य ॥ जोयण सहस्स महियं,एगिंदियदेह मुक्कोसं ॥ १९१ ॥ बि ति चउरिंदि सरीरं,बारस जोयण तिकोस चउकोसं॥जोयण सहसपणिंदिय, उहे वुछं विसेसं तु॥१९२॥अंगुल असंखनागो,सुहुम निगोउ असंख गुणवाऊ॥तोअगणितउ आऊ,तत्तो सुहुमा नवे पुढवी॥१९३॥तो बायर वाउ गणी,आऊ पुढवी निगोय अणुकमसो ॥ पत्तेयवणसरीरं,अहियं जोयणसहस्सं तु ॥१९४॥उस्सेहंगुलजोय

ण,सहस्समाणे जलासए नेयं॥तं वल्लि पउम पमुहं,अउ परं पुढविरूवंतु॥२ए५॥ बारस जोयण संखो, तिकोस गुम्मीय जोयणं ज्ञमरो ॥ मुछिम चउपयजुय गुरग, गाऊधणु जोयण पहुत्तं ॥२ए६॥ गप्न चउप्पय छग्गा, उयाइं जुयगाउ गाउय पहुत्तं ॥ जोयण सहस्स मुरगा, मछा उन्नय विय सहस्सं ॥२ए७॥ पक्कि छुग धणुपहुत्तं, सव्वाणंगुल असंखन्नाग लहू ॥ विरहो विगला सन्नी, ण जम्म मरणे सुअंत मुहू ॥२ए८॥ गप्ने मुहुत्त बारस,गुरुउ लहु समय संखसुर तुल्ला ॥ अणुसमय मसंखिजा, एगिंदिय हुंतिय चवंति॥२एए॥वणकाइउ अणंता, इक्कि क्काउ वि जं निगोयाउ॥ निच्चमसंखो न्नागो, अणंतजीवो चयइ एइ ॥ ३०० ॥ गोलाय असंखिजा, असंख निग्गोय उ हवइ गोलो ॥ इक्किक्कंमि निगोए, अणंत जीवा मुणेयव्वा ॥३०१॥ अछि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥ उप्पजंति चयंति य, पुणोवि तछेव तछेव॥३०२॥सव्वोवि किसलउ खलु,

उगाममाणो अणंतउ जणिउ॥सोचेव विवट्टंतो,होइ परित्तो अणंतो वा॥३०३॥
जया मोहोदउ तिव्वो, अन्नाणं खु महप्नयं॥ पेमलं वेयणीयं तु, तया एगिंदियत्त
णं॥३०४॥तिरिएसु जंति संखा, उतिरिनिराजाउ कप्पदेवाउ ॥ पज्जत्तसंख गप्न
य, बायर नूदगपरित्तेसु ॥३०५॥ तो सहसारंत सुरा, निरया पज्जत्तसंखगप्नेसु॥
संखपणिंदिय तिरिया मरिउं चउसु वि गइसु जंति ॥३०६॥थावर विगला निय
मा, संखाउ य तिरि नरेसु गछंति ॥ विगला लप्तिज्जविरइं, सम्मंपि न तेउ वाउ
चुया॥३०७॥पुढवी दग परितवणा,बायर पज्जत्त हुंति चउलेसा॥गप्नय तिरि य
नराणं,बल्लेसा तिन्नि सेसाणं॥३०८॥अंतमुहुत्तंमि गए,अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव॥
लेसाहिपरिणयाहिं,जीवावच्चंतिपरलोयं॥३०९॥ तिरिनरआगामि नवे, लेस्साए
अइ गए सुरा निरया॥पुव्वनव लेस्ससेसे,अंतमुहुत्ते मरणमिंति॥३१०॥अंतमुहु
त्तठिइउ,तिरिय नराणं हवंति लेस्साउ ॥ चरिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्व

कोडीवि ॥३११॥ तिरियाण वि ठिइपमुहं, जणिय मसेसंपि संपई वुत्तं॥ अन्भि
हिय दारन्नहियं, चउगइ जीवाण सामन्नं ॥३१२॥ देवा असंख नर तिरि, इत्थी
पुं वेय गब्भ नर तिरिया ॥ संखाउया तिवेया, नपुंसगा नारयाईया ॥ ३१३ ॥
आयंगुलेण वत्थुं, सरीरमुस्सेह अंगुलेण तहा ॥ नग पुढवि विमाणाई, मिण
सु पमाणंगुलेणं तु॥३१४॥सत्थेण सुतिक्खेण वि, छित्तुं भित्तुं च जं किर न सक्का॥
तं परमाणुं सिद्धा, वयंतिआई पमाणाणं॥३१५॥परमाणू तसरेणू, रहरेणू वा
लअग्गलिक्खा य ॥ जूय जवो अट्ठगुणो, कमेण उस्सेह अंगुलयं ॥३१६॥ अं
गुलछक्कं पाउ, सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो ॥चउहत्थं धणु दु सहस, को
सो ते जोयणं चउरो ॥३१७॥ चउसयगुणं पमाणं, गुलमुस्सेहंगुलाउ बोधव्वं ॥
उस्सेहंगुलदुगुणं, वीरस्सायंगुलं भणियं ॥ ३१८ ॥ पुढवाइसु पत्तेयं, सग व
णपत्तेय णंतदस चउद ॥ विगले दु दु सुर नारय, तिरि चउ चउ चउदस नरेसु

॥३१९॥ जोणीण हुंति लक्खा, सव्वे चुलसी इहेव घिप्पंति॥समवन्नाईजेया, ए
गत्तेणेव सामन्ना ॥ ३२०॥ एगिंदिएसु पंचसु, बार सग तिसत्त अठवीसा य ॥
विगलेसु सत्त अड नव, जल खह चउपय उरग भुयगे ॥ ३२१ ॥ अद्धत्तेरस
बारस, दस दस नवगं नरामरे निरए ॥ बारस छवीस पणविस, हुंति कुले को
डि लक्खाइं ॥३२२॥ इग कोडि सत्तणवई, लक्खा सड्ढा कुलाण कोडीणं ॥ संवु
डजोणि सुरेगिं,दि नारया वियड विगल गब्भु भया ॥३२३॥ अचित्त जोणि सु
रनिरय, मीसग्गब्भे तिभेय सेसाणं ॥ सी उसिण निरय सुर गब्भ, मीसत्ते उ
सिण सेस तिहा ॥३२४॥ हय गब्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइ जायंति ॥ अ
रिह हरि चक्कि रामा, वंसी पत्ताइ सेस नरा ॥३२५॥ आउस्स बंधकालो, अबा
ह कालो य अंत समए य॥अपवत्तण णपवत्तण,उवक्कम णुवक्कमा भणिया॥३२६
बंधंति देव नारय, असंख नर तिरि छमास सेसाऊ ॥ परभविया ऊसेसा, नि

रुवक्कमतिभागसेसाउ ॥ ३२७ ॥ सोवक्कमा उया पुण, सेसतिभागे अहव नव मभागे ॥ सत्तावीस इमे वा, अंतमुहुत्तं तिमे वावि ॥३२८॥ जइमे भागे बंधो, आउस्स भवे अबाहकालो सो॥अंतेउजुगइ इग सम,य वक्क चउ पंच समयंता ॥३२९॥ उज्जु गइ पढम समए, परभवियं आउयं तहा हारो ॥ वक्काइ बीय स मए, परभवियाउं उदयमेई ॥३३०॥ इग दु ति चउ वक्कासु, दुगाइ समएसु प रभवाहारो ॥ दुग वक्काइ सु समया, इग दो तिन्नी अणाहारा ॥३३१॥ बहुका ल वेयणिज्जं, कम्मं अप्पेण जमिह कालेणं॥वेइजइ जुगवंचिय, उइन्न सव्वप्पए सग्गं ॥ ३३२ ॥ अपवत्तणिज्जमेयं, आउं अहवा असेसकम्मंपि ॥ बंध समए वि बद्धं, सिढिलं चिय तं जहाजोगं ॥ ३३३ ॥ जं पुण गाढ निकायण, बंधेणं पुव्वमेव किल बद्धं ॥ तं होइ अणपवत्तण, जुग्गं कम वेयणिज्ज फलं ॥३३४॥ उत्तम चरम सरीरा, सुर नेरइया असंख नर तिरिया ॥ हुंति निरुवक्कमाउ, दु

हावि सेसा मुणेयव्वा ॥३३५॥ जेणाउ मुवक्कमि जइ, अप्पसमुत्थेण इयर गेणा
वि ॥ सो अज्झवसाणाई, उवक्कम णुवक्कमो इयरो॥३३६॥अज्झवसाण निमित्ते,
आहारे वेयणा पराघाए ॥ फासेआणापाणू, सत्तविहं झिज्जए आउं ॥३३७॥
आहार सरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भासमणे ॥ चउ पंच पंच छप्पिय, इग
विगला सन्नि सन्नीणं ॥३३८॥ आहारसरीरिंदिय, ऊसास वउ मणोभिनिव्व
त्ती ॥ होइ जओ दलियाओ, करणं पइसाउ पज्जत्ती ॥३३९॥पण इंदिय तिबलू
सा, साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ ॥ इग दु ति चउरिंदीणं, असन्नि सन्नी
ण नव दस य॥३४०॥आहारे भय मेहुण, परिग्गहा कोह माण माया य ॥ लो
भे ओहे लोगे, दस सन्ना हुंति सव्वेसिं ॥ ३४१ ॥ सुह दुह मोहा सन्ना, वितिगि
च्छा चउदमा मुणेयव्वा ॥ सोए तह धम्म सण्णा, सोल समा हवइ मणुएसु ॥
॥३४२॥ संखित्तासंघयणी, गुरुतर संघयणि मज्झओ एसा ॥ सिरि सिरि चंद मु

णिंदे,ण निम्मिया अप्प पढणठा ॥३४३॥ संखित्तयरी उ इमा, सरीरमोगोदणा य संघयणा ॥ सन्ना संठाण कसा, य लेसिंदिय ङ समुग्घाया ॥ ३४४॥ दिठी दंसण नाणे, जोगु वर्जगो ववाय चवण ठिई॥पजत्ति किमाहारे,सन्निगई रागई वेए॥३४५॥तिरिया मणुया काया,तह गावीया चउक्कगा चउरो ॥ देवा नेरइया वा, अठारस नावरासीउ ॥३४६॥ एगा कोडी सत सठि,लक्का सतहुत्तरी सहस्साय ॥ दोय सया सोलहिया, आवलियाणं मुहुत्तंमि ॥३४७॥ पणसठि सहस पणसय, छत्तीसा इग मुहुत्त खुड्डभवा ॥ दोय सया छप्पन्ना, आवलिया एग खुड्डभवे ॥३४८॥ मलहारि हेमसूरि, ण सीसलेसेण विरइयं सम्मं ॥ संघयणि रयण मेयं, नंदउ जा वीरजिण तिठं ॥३४९॥ इतिश्रीत्रैलोक्यदीपिकानामसंग्रहणीसंपूर्णा ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॐश्रीजिनायनमः ॥ अथ श्रीरत्नशेखर सूरिकृत लघुक्षेत्रसमास प्रकरणं

लिख्यते॥वीरं जयसेहरपय, पइठियं पणमिऊण सुगुरुं च॥मंडत्ति ससरणठा, खित्तवियाराणु मुझामि ॥१॥ तिरि एगरज्जुखित्ते, असंखदीवो दहीउ ते सव्वे॥उ ध्धार पलियपणविस, कोमा कोडी समयतुल्ला ॥२॥ कुरुसग दिणाविअंगुल, रो मे सगवार विहिय अडखंडे ॥ बावससयं सहसा, सगनवई वीस लस्काणू ॥ ॥३॥ ते थूला पल्लेविहु, संखिजा चेव हुंति सव्वेवि ॥ ते इक्कि असंखे, सुहमे खंडेपकप्पेह ॥ ४ ॥ सुहमाणु निचिय उस्से,हंगुलचउकोस पल्लि घणवट्टे॥पइस मय मणुग्गह निठियंमि उध्धारपल्लिउति ॥५॥पढमो जंबू बीउं, धायइसंडो य पुरकरो तइउं ॥ वारुणिवरो चउत्थो,खीरवरो पंचमो दीवो ॥६॥ घयवर दीवोछ ठो ॥ इस्कुरसो सत्तमो य अठमउं ॥ नंदीसरो य अरुणो, नवमो इच्चाइअसं खिजा ॥७॥ सुपसछवत्थुनामा, तिपडोयारा तहा रुणाईया ॥ इगनामेवि असं खा, जाव य सूरावत्ता सुत्ति ॥८॥ तत्तो देवे नागे, जरके भूए सयंभुरमणे य ॥

एए पंच वि दीवा, इगेगनामा मुणेयव्वा ॥९॥ पढमे लवणो बीये, कालोदहि से
सएसु सव्वेसु ॥ दीवसम नामया जा, सयंभुरमणो दहीचरमो ॥१०॥ बीउ तइ
उ चरमो, उदगरसा पढमचउथ पंचमगा ॥ छठोवि सनामरसा, इक्खुरसामेस
जलनिहिणो ॥११॥ जंबूदीवपमाणं, गुलजोयणलक्खवट्ट विक्खंभो ॥ लवणाई
या सेसा, वलयाभा दुगुणदुगुणा य ॥ १२॥ वयरामईहि निय निय, दीवोदहि
मज्झिगणियमूलाहिं, अहुच्चाहिं बारस, चउमूले उवरि रुंदाहिं ॥१३॥ विछारदु
ग विसेसो, उस्सेहि विभत्तु खउ चउ होइ ॥ इय चूलागिरि कूवा, इ तुल्ल वि
क्खंभ करणाहिं ॥१४॥ गाउदु गुच्चाइ तय, छभाग रुंदाइ पउमवेईए ॥ देसूण
दु जोयणवर, वणाहि परिमंभिय सिराहिं ॥१५॥ वेईसमेण महया, घवक्ख क
डएण संपरित्ताहिं ॥ अठारसूणचउभ, त्त परिहिदारं तराहिं च ॥१६॥ अहुच्च
चउसु विछर, दुपाससक्कोस कुट्टदाराहिं ॥ पुव्वाइ महट्ठियदे, व दारविजयाइ ना

माहिं ॥ १७ ॥ नाणामणिमयदेहलि, कवाड परिघाइ दार सोहाहिं ॥ जगईहिं ते सव्वे, दीवोदहिणो परिक्खित्ता ॥ १८ ॥ वरतिण तोरण ऊयव, त्तवाविपासाय सेलसिलवट्ट ॥ वेइवणे वरमंम्व, गिहा सणेसू रमंति सुरा ॥१९॥ इह अहिगा रो जेसिं, सुराण देवीण ताण मुप्पत्ति ॥ नियदीवोदहिं नामे, अस्संखइमे स नयरीसु ॥ २०॥ जंबुद्दीवो बहि कुल,गिरीहि सत्ताहिं तहेव वासेहिं ॥ पुव्वावरदी हेहिं, परिछिन्नो ते इमे कमसो ॥ २१॥ हिमवं सिहरी महहिम, रुप्पी निसढो य नीलवंतो य ॥ बाहिरउ ङ ङ गिरिणो, उभउ विसवेइया सव्वे ॥ २२ ॥भरहेरव यत्ति ङगं, ङगं च हेमवयरस्सवयरूवं ॥ हरिवासरम्मयङगं, मज्झि विदेहुत्ति सग वासा॥२३॥दो दीहा चउ वट्टा, वेयड्ढा खित्तछक्कमज्झंमि॥ मेरूविदेहमज्झे, पमाण मित्तोकुलगिरीणं ॥ २४ ॥ इग दो चउ सय उच्चा, कणगमया कणगरायया कम सो ॥ तवणिज्ज सुवेरुलिया, बहि मज्झब्भिंतरा दो दो ॥ २५ ॥ ङग अड ङतीस

॥ ३६ ॥

अंका, लक्खगुणा कमेण नउयसयभइया ॥ मूलोवरि समरूवं, विहारं बिंति जुयलतिगे ॥ २६ ॥ बावन्नहिअ सहसो, बारकला बाहिराण विहारो ॥ मज्झिमगाण दसुत्तर, बायालसया दस कला य ॥ २७ ॥ अभिंतराण इकला, सोलसहस्स अडसया सबायाला ॥ चउचत्त सहस दोसय, दसुत्तरा दसकला सव्वे ॥ २८ ॥ इग चउ सोलस अंका, पुव्वत्तविहीइ खित्तजुयलतिगे ॥ विहारं बिंति तहा, चउसट्ठिं को विदेहस्स ॥ २९ ॥ पंचसया छव्वीसा, छच्च कलापढमखित्तजुयलम्मि, बीए इगवीससया, पणुत्तरा पंच य कला य ॥ ३० ॥ चुलसीसय इगवीसा, इक्ककला तइयगे विदेहि पुणो ॥ तित्तीससहस छस्सय, चुलसीया तह कला चउरो ॥ ॥ ३१ ॥ पणपन्नसहससग सय, गुणनउया नव कला सयलवासा ॥ गिरिखित्तं कसमासे, जोयण लक्खं हवइ पुन्नं ॥ ३२ ॥ पन्नास सुद्ध बाहिर, खित्ते दलियम्मि दु सय अडतीसा ॥ तिन्नि य कला य एसो, खंडचउक्कस्स विक्खंभो ॥ ३३ ॥

॥ ३६ ॥

गिरिउवरि सवेइदहा,गिरिउच्चत्ताउ दसगुणा दीहा ॥ दीहत्ति अद्धरुंदा, सब्बे द
सजोयणुब्बेहा ॥३४॥ बहि पउमपुंडरीया, मद्धे ते चेव हुंति महपुब्बा ॥ ते गिञ्छि
केसरीया,अब्भिंतरिया कमेणेसु॥३५॥सिरि लछी हिरि बुद्धी, धी कित्ती नामिया
उ देवीउ ॥ भवणवईउ पलिउ, वमाउ वरकमलनिलयाउ ॥३६॥ जलुवरि को
सदुगुच्चं, दहविछरपणासयंसविछारं ॥ बाहिल्लविछरद्धं, कमलं देवीण मूलि
ल्लं ॥ ३७ ॥ मूले कंदे नाले, तं वयरारिठवेरुलियरूवं ॥ जंवूणयमद्धतवणि,
जाबहिदलं रत्तकेसरयं ॥ ३८ ॥ कमलद्ध पायपिहुलु, च्च कणगमयकणिगोवरिं
भवणं ॥ अद्धेग कोसपिहु दी, ह चउदसय चाल धणुहुच्चं ॥३९॥ पछिमदिसि
विणुधणु पण, सउच्च ढाइज सयप्पिहु पवेसं ॥ दारतिगं इह भवणे, मद्धे दहदे
वि सयणिज्जं ॥४०॥ तं मूल कमलमद्ध, प्पमाण कमलाण अडहियसएणं ॥ प
रिखित्तं तब्भवणे, सुभूसणाईणि देवीणं॥४१॥मूलपउमाउ पुब्विं, महयरियाणं च

उसह चउपउमा ॥ अवराइ सत्त पउमा, अणिया हिवईण सत्तएहं ॥४२॥ वाय
व्वाइसु तिसु सिरि, सामन्नसुराण चउ सहस पउमा ॥ अठ दस बारसहसा,
अग्गेयाइसु तिपरिसाणं ॥४३॥ इय बीयपरिक्खेवो, तइए चउसु वि दिसासु दे
वीणं ॥ चउ चउ पउमसहस्सा, सोलसहस्साय रक्खाणं ॥ ४४ ॥ अन्निउगाइ
तिवलए, छत्तीस चत्ताडयालखकाइं ॥ इगकोडि वीस लरका, पन्नासहस्स
वीससयं ॥ ४५ ॥ पुव्वावरमेरुमुहं, दुसु दार तिगंपि सदिसि दहमाणा ॥
असीइजागपमाणं, सतोरणं निग्गयनईयं ॥४६॥ जामुत्तरदारछुगं, सेसेसु दहे
सु ताण मेरुमुहा ॥ सदिसि दहासिय जागा, तयद्धमाणा य बाहिरिया ॥४७॥
गंगा सिंधू रत्ता,रत्तवई बाहिरं नइचउक्कं॥बहि दहपुव्वावरदार, विछरं वहइ गि
रिसिहरे ॥४८॥ पंचसय गंतु नियगा, वत्तणकूमाउ बहिमुहं वलई ॥ पणसय
तेवीसेहिं, साहियतिकलाहिं सिहराउ ॥ ४९ ॥ निवमइ मगरमुहोवम, वयराम

यजिणियाहि वयरतले ॥ नियगे निवायकुंभे, मुत्तावलि समप्पवाहेण ॥५०॥दह दारविडराउ, विडरपमास जागजट्ठाउ ॥ जट्ठत्ताउ चउगुण, दीहाउ सव्वजिणी उ ॥५१॥ कुंभंतो अडजोयण, पिहुलो जलउवरि कोसडुगमुच्चो ॥ वेइजुउ नइ देवी, दीवो दहदेविसमभवणो ॥ ५२ ॥ जोयणसट्ठिपिहुत्ता, सवायछप्पिहुल वेइतिडुवारा ॥ एए दसुंरु कुंभा,एवं अन्ने वि नवरं ते ॥५३॥ एसिं विहारतिगं, पडुच्च सम डुगुण चउगुणट्ठगुणा ॥ चउसट्ठि सोल चउ दो, कुंभा सव्वेवि इह नवई ॥५४॥ एयं च नइचउक्कं, कुंडाउ बहिडुवार परिवूढं ॥ सगसहस नइसमेयं, वेयट्ठगिरिप्प निंदेई ॥५५॥ तत्तो बाहिर खित्त, द्ध मच्चउ वलइ पुव्वअवरमुहं ॥ नइसत्तसहससहियं, जगइतलेणं उदहिमेइ ॥ ५६॥ धुरि कुंडडुवारसमा, पज्जंते दसगुणा य पिहुलत्ते ॥ संव्वह महनईउ, विडरपमासजागुंडा ॥५७॥ प ण खित्तमहनईउ, सदारदिसि दहविसुद्धगिरिअद्धं ॥ गंतूणसजिणीहिं, निय

नियकुंडेसु निवडंति ॥५८॥ नियजिब्भियपिहुलत्ता, पणवीसंसेणमुत्तमद्धगिरिं ॥ जाममुहा पुव्वुदहिं, इयरा अवरोयहिमुविंति ॥ ५९ ॥ हेमवइ रोहियंसा, रोहीया गंगदुगुणपरिवारा ॥ एरन्नवय सुवन्न, रुप्पकुलाउ ताण समा ॥ ६० ॥ हरिवासे हरिकंता,हरिसलिला गंगचउगुणनईया ॥ एसि समा रम्मवए, नरकंता नारिकंता य ॥६१॥ सीउया सीयाउ, महाविदेहम्मि तासु पत्तेयं ॥ निवडइ पणलक्ख, छत्तीस सहस अडतीस नइसलिलं ॥ ६२ ॥ कुरुनइ चुलसीसहसा, छच्चे वंतरनईउ पइविजयं ॥ दो दो महानईउ, चउदस सहसाउ पत्तेयं ॥६३॥ अडसयरि महानइउ, बारस अंतरनईउ सेसाउ ॥ परियरनईउ चउदस, लक्खा छप्पन्न सहसा य ॥६४॥ एगारड नवकूडा, कुलगिरि जुयलत्तिगे वि पत्तेयं ॥ इय छप्पन्ना चउ चउ, वक्खारेसुत्ति चउसठी॥६५॥सोमणसि गंधमायणि, सग सग विज्जुपन्निमालवंति पुणो ॥ अठठ सयलतीसं, अडनंदणि अठ करि

कूडा ॥६६॥ इय पणसउच्च गास,।० सउ कुम्रा तेसु दीहर गिरीणं ॥ पुव्वनइमेरु दिसिअं, त सिद्धकूम्रेसु जिणज्ञवणा ॥६७॥ ते सिरिगिहाउ दो सय, गुणप्पमा णा तहेव तिडवारा ॥ नवरं अडवीसाहिय, सयगुण दारप्पमाणमिह ॥६८॥ प णवीसं कोससयं, समचउरसविड्डा डुगुणमुच्चा ॥ पासाया कूम्रेसु, पणसयउ च्चेसु सेसेसु ॥६९॥ बल हरिसह हरिकूडा, नंदनवणि मालवंति विज्जुपन्ने ॥ ई साणुत्तरदाहिण, दिसासु सहसुच्चकणगमया ॥७०॥ वेयद्धेसु वि नव नव, कूडा पणवीसकोसउच्चा ते ॥ सव्व तिसय ड्डुत्तर, एसु वि पुव्वंति जिणकूम्रा ॥७१॥ ताणूवरि चेइहरा, दहदेवी नवणतुल्लपरिमाणा ॥ सेसेसु य पासाया, अधेग कोसं पिहुच्चत्ते ॥७२॥ गिरिकरिकूडा उच्च,त्तणाउ सम अद्धमूलुवरि रुंदा॥रयण मया नवरिविय,द्ध मज्झिमा ति त्ति कणगरुवा॥७३॥जंवूणयरययमया,जगइसमा जंबुसामलीकूम्रा ॥ अठ्ठ तेसुदहदे, वि गिहसमा चारुचेइहरा ॥७४॥ तेसि स

मोसहकूडा, चउतीसं चुल्लकुंडजुयलंतो ॥ जंबूण एसु तेसु य, वेयड्ढेसुव्व पासा
या ॥७५॥ पंचसए पणवीसे, कूडा सव्वे वि जंबुदीवंमि ॥ ते पत्तेयं वरवण,जुया
हि वेईहि परिक्खित्ता ॥७६॥ छ सयरि कूडेसु तहा, चूलाचउवणतरूसु जिणभ
वणा ॥ भणिया जंबूदीवे, सदेवया सेस ठाणेसु ॥७७॥ करिकूड कुंड नइ दह,कु
रुकंचण जमलसमवियड्ढेसु ॥ जिणभवणविसंवाओ, जो तं जाणंति गीयत्था
॥७८॥ पुव्वावरजलहिंता, दसुच्च दसपिहुल मेहलचउक्का ॥ पणवीसुच्चा पन्ना,
स तीस दसजोयणपिहुत्ता ॥७९॥ वेईहिपरिक्खित्ता, सखयरपुर पन्नसट्ठिसेणि
दुगा ॥ सदिसिंदलोगपालो, वन्नोगउवरिल्लमेहलया ॥ ८० ॥ दु दु खंडविहिय
भरहे, रवया दु दु गुरु गुहा य रुप्पमया ॥ दो दीहा वेयड्ढा, तहा दुतीसं च वि
जयेसु ॥८१॥ नवरं ते विजयंता, सखयरपणपन्नपुरदुसेणीया ॥ एवं खयरपुरा
इं, सगतीस सयाइ चालाइं ॥८२॥ गिरि विवर दीहाओ, अडुच्च चउ पिहुपवे

सदाराउ ॥ बारस पिहुलाउ अगु,च्च याउ वेयट्ठ उउगुहाउ ॥८३॥ तंमवि उ जो यणअं, तराउ ति ति विन्नराउ उनईउ ॥ उम्मग्गनिमग्गाउ, कडगाउ महानइ गयाउ ॥८४॥ इह पइन्निंत्ति गुणव,स मंम्ले लिहइ चक्किउउसमुहे ॥ पणसय धणुहपमाणे, बारेगडजोयणुज्जोए ॥८५॥सा तिमिस गुहा जीए, चक्की पविसेइ मच्चखंडंतो ॥ उसहं अंकिय सो जी,इ वलइ सा खंडगपवाया ॥ ८६॥ कयमाल नट्टमालय, सुराउ वट्ठइ निबन्धसलिलाउ ॥ जा चक्की ता चिठइ, ताउ उग्घम्मि य दाराउ ॥ ८७ ॥ बहिखंम्तो बारस, दीहा नव विन्नडा अउच्चपुरी ॥ सा लव णावेयट्ठा, चउदहियसयं चिगारकला ॥८८॥ चक्किवसनइपवेसे, तिन्नउगं माग हो पन्नासो य ॥ ताणंतो वरदामो,इह सव्वे बिडुत्तरसयंति ॥८९॥ नरहेरवए छ छ अर,मयवसप्पिणीउसप्पिणीरूवं ॥ परिन्नमइ कालचक्कं,उवालसारं सया वि कमा ॥९०॥ सुसमसुसमा य सुसमा, सूसमउसमाय उसमसुसमाय ॥ उसमा य

उसमउसमा, कमुक्कमा उसु वि अरछक्कं ॥ ९१॥ पुव्वुत्तपल्लिसमसय, अणुगहणा निठिए हवइ पलिर्ज ॥ दस कोडिकोडिपल्लिए, हिं सागरो होइ कालस्स ॥ ९२॥ सागरचउतिडु कोडा, कोमिमिए अरतिगे नराण कमा ॥ आऊ तिडुइगपलिया, तिडुइगकोसा तणुच्चत्तं ॥ ९३॥ तिडुइगदिणेहि तूअरि, वयरामलमित्तमेसिमाहारो ॥ पिठकरंमा दोसय, उप्पन्ना तद्दलं च दलं ॥ ९४॥ गुणवणदिणे तह पनर, पन्नरअहिया अवच्चपालणया ॥ अवि सयलजिया जुयला, सुमणसरूवा सुरगईया ॥ ९५॥ तेसि मत्तंग जिंगा, तुडियंगा जोइ दीवचित्तंगा ॥ चित्तरसा मणियंगा, गेहागारा अणियय रक्का ॥ ९६॥ पाणं जायण पिब्बण, रविपह दीव पह कुसुममाहारो ॥ नूसण गिह वब्रासण, कप्पडुमा दसविहा दिंति ॥ ९७ ॥ मणुआउसमगयाई, चयाइ चउरंस जाइ अठंसा ॥ गोमहिसुट्टखराई, पणंस साणाइ दसमंसा ॥ ९८॥ इच्चाइ तिरच्चाण वि, पायं संवारएसु सारिच्छं ॥ तइया

रसेस कुलगर, नयजिणधम्माइउप्पत्ती ॥९९॥ कालडुगे तिचउद्धा, रगेसु एगूण
नवइपक्खेसु ॥ सेसगएसु य सिद्धं, ति हुंति पढमंतिमजिणिंदा ॥१००॥ बायाल
सहस वरसू, णिगकोडाकोडिअयरमाणाए ॥ तुरिए नराउपुव्वा, ण कोडितणु
कोसचउरंसं ॥१०१॥ वरिसेगवीससहस, प्पमाण पंचमरए सगकरुच्चा ॥ तीस
हियसयाउ नरा, तयंतधम्माइयाणंतो ॥१०२॥ सुयसूरिसंघधम्मो, पुव्वण्हे छिज्ज
ही अगणि सायं ॥ निव विमलवाहणो सुह, ममंति तद्धम्म मज्झण्हे॥१०३॥ खा
रग्गिविसाईहिं, हाहाभूया कयाइ पुहवीए ॥ खगबीय वियाड्ढइ सु, नराइबीयं
बिलाईसु ॥१०४॥ बहुमच्छचक्कवहनइ, चउक्कपासेसु नव नव बिलाइं ॥ वेयड्ढो
भयपासे, चउयालसयं बिलाणेवं ॥ १०५ ॥ पंचमसमछठारे, इकरुच्चा वीसव
रिसआउ नरा ॥ मच्छासिणो कुरूवा, कूरा बिलवासि कुगइगमा ॥१०६॥ निल्ल
ज्जा निव्वसणा, खरवयणा पियसुयाइठिइरहिया ॥ थीउ छवरिसगब्भा, अइदु

हपसवा बहुसुया य ॥१०७॥ इय अरछक्केण वस,प्पिणित्ति उस्सप्पिणी वि विव
रीया ॥ वीसं सागरकोमा, कोमीउ कालचक्कंमि ॥ १०८ ॥ कुरुडुगि हरिरम्मयडु
गि, हेमवएरन्नवयडुगि विदेहे ॥ कमसो सया वसप्पिणि, अरयचउक्काइसम
कालो ॥१०९॥ हेमवएरन्नवए, हरिवासे रम्मए य रयणमया ॥ सद्दावइ विय
डावइ, गंधावइ मालवंतरका ॥११०॥ चउ वट्टवियड्ढा सा,इ अरुण पउम प्पन्ना
स सुरवासा ॥ मूलुवरि पिहुत्ते तह,उच्चत्ते जोयणं सहसं ॥१११॥ मेरू वट्टो स
हस्स, कंदो लक्खूसिउ सहस उवरिं ॥ दसगुण भुवि तं सनवइ, दसिगारंसं
पिहुलमूले ॥११२॥ पुढवुवल वयर सक्कर, मयकंदो उवरि जाव सोमणसं ॥
फलिहंक रयय कंचण, मउ य जंबूणउ सेसो ॥११३॥ तडुवरि चालीसुच्चा, व
ट्टा मूलुवरि बार चउ पिहुला ॥ वेलुरिया वरचूला, सिरिभवणपमाण चेइहरा
॥११४॥ चूलातलाउ चउसय, चउणउए वलयरूववित्थरं ॥ बहुजलकुंडं पं

म्ग,वणं च सिहरे सयेईयं ॥११५॥ पन्नासजोयणेहिं, चूलाउ चउदिसासु जि
णभवणा ॥ सविदिसि सक्कीसाणं, चउवाविजुया य पासाया ॥११६॥ कुलगिरि
चेइहराणं, पासायाणं चिमे समठगुणा ॥ पणवीस रुंद दुगुणा,यामाउ इमाउ
वावीउ ॥११७॥ जिणहर बहिदिसि जोयण, पणसय दीहद्धपिहुल चउउच्चा ॥
अद्धससिसमा चउरो, सियकणगसिला सवेईया ॥११८॥ सिलमाणठ सहस्सं,
समाणसींहासणेहि दोहिं जुया ॥ सिलपंडु कंबलार, त्तकंबलापुव्वपच्छिमउ ॥
॥११९॥ जामुत्तराउ ताउ, इगेगसींहासणाउ अइपुव्वं ॥ चउसु वि तासु निया
सण,दिसिभवजिणमज्जणं होई ॥१२०॥ सिहरा छत्तीसेहिं, सहसेहिं मेहलाइ
पंचसए ॥ पिहुलं सोमण सवणं, सिलविणु पंडगवणसरिछं ॥१२१॥ तब्बाहि
रि विखंभो, बायालसयाहि दुसय रिजुयाइं ॥ अठेगारसभागा, मघे तं चेव
सहसूणं ॥१२२॥ तत्तो सड्ढदुसठी, सहसेहिं नंदणंपि तह चेव ॥ नवरि भव

णपासायं, तरठदिसि कुमरि कूडा वि ॥ १७३ ॥ नवसहस नवसयाइं, चउपला छच्चिगारजागा य ॥ नंदणबहिविक्कंजो, सहसूणो होइ मज्जंमि ॥१७४॥ तदहो पंच सएहिं, महियलि तह चेव जद्दसालवणं ॥ नवरंमिह दिग्गयच्चिय, कूडा वणविछरं तु इमं ॥१७५॥ बावीससहस्साइं,मेरूउ पुव्वउ य पछिमउ ॥ तं चारु सीविहत्तं, वणमाणं दाहिणुत्तरउ ॥१७६॥ छवीस सहस चउसय, पणहत्तरि गं तु कुरुनइपवाया ॥ जद्दउ विनिग्गया गय,दंता मेरुम्मुहा चउरो ॥ १७७ ॥ अग्गेयाइसु पयाहि, णेण दिसासु सियरत्त पियनीला ॥ जासोमणस विज्जुपह, गंधमायण मालवंतरका ॥१७८॥ अहलोगवासिणीउ, दिसाकुमारीउ अठ एए सि ॥ गयदंतगिरिवराणं, हिठा चिठंति जवणेसु ॥१७९॥ धुरि अंते चउ पण सय, उच्च त्ति पिहुत्ति पणसया सिसमा ॥ दीहत्ति इमे छकला, ङुसयनवुत्तरस हसतीसं ॥१८०॥ ताणं तो देवुत्तर, कुराउ चंदद्धसंठियाउ ङुवे ॥ दससहस वि

सुक्ष्मदहा, विदेहदलमाणपिहुलाउ॥ १३१॥ नइपुव्वावरकूले, कणगमया बल स
मा गिरी दो दो ॥ उत्तरकुराउ जमगा, विचित्तचित्ता य इयरीए ॥१३२॥ नइव
ह दीहा पण पण, हरया दुउदारया इमे कमसो ॥ निसहो तह देवकुरू, सूरो
सुलसो य विज्जुपहो॥१३३॥तह नीलवंत उत्तर, कुरु चंदे रवय मालवंतो त्ति ॥
पउमदहसमा नवरं, एएसु सुरा दहसमाना ॥ १३४ ॥ अडसय चउतीस जोय,
णाइं तह सेगसत्तभागाउ॥इक्कारसय कलाउ,गिरिजमलदहाणमंतरयं ॥१३५॥
दहपुव्वावर दसजो, यणेहि दस दस वियड्ढकूडाणं ॥ सोलसगुणप्पमाणा, कंच
णगिरिणो दुसय सव्वे ॥ १३६॥ उत्तरकुरुपुव्वद्धे, जंबूणयजंबुपीढमंतेसु ॥ कोस
दुगुच्चं कमि व,ड्ढमाण चउवीसगुण मज्झे ॥१३७॥ पणसयवट्टपिहुत्तं, तं परिखि
त्तं च पउमवेईए ॥ गाउ दुगेगुच्चपिहु,त चारुचउदारकलियाए॥१३८॥ तं मज्झे
अडविच्छर, चउच्च मणिपीढियाइ जंबुतरू ॥ मूले कंदे खंधे, वरवयरारिठवेरु

विउं ॥१३९॥ तस्स य साह पसाहा, दला य विंटा य पल्लवा कमसो ॥ सोव
ण्णजायरूवा, वेरुलितवणिज्जजंबुणाया ॥ १४० ॥ सो रययमयपवालो, राययवि
डिमो य रयणपुप्फफलो ॥ कोसदुगं उव्वेहो, थुम्हसाहा विडिमविक्खंभो ॥१४१॥
थुडसाहवडिमदीह, त्ति गाउए अठ पनर चउवीसं ॥ साहा सिरिसमभवणा,
तम्माणस चेइयं वम्मिं ॥१४२॥ पुव्विल्लि सिज्ज तिसुअा, सणाणि भवणेसु णा
ढियसुरस्स ॥ सा जंबू बारसवे,इयाहि कमसो परिक्खित्ता ॥१४३॥ दहपउमाणं
जं वि,छरं तुतमिहावि जंबुरुक्खाणं ॥ नवरं महयरियाणं, ठाणे इह अग्गमहि
सीउं ॥१४४॥ कोस दुसएहि जंबू , चउद्दिसिं पुव्वसालसमभवणा ॥ विदिसासु
सेस तिसमा, चउवाविजुया य पासाया ॥ १४५ ॥ ताणंतरेसु अड जिण, कूम्ा
तह सुरकुराइ अवरद्धे॥राययपीढे सामलि,रुक्खो एमेव गरुलस्स ॥ १४६ ॥ ब
त्तीस सोल बारस, विजया वक्खार अंतर नईउं ॥ मेरुवणाउ पुव्वा, वरासुकुल

गिरिमह नयंता ॥१४७॥ विजयाण पिहुत्ति सग, छन्नाग बारुत्तरा छवीस सया ॥ सेलाणं पंचसए, सवेइ नइ पणवीससयं ॥ १४८ ॥ सोलससहस्स पणसय, बाणउया तह य दो कलाउ य ॥ एएसिं सव्वेसिं, आयामो वणमुहाणं च ॥१४९॥ गयदंतगिरिचउक्का, वक्कारा ताणमंतरनईणं ॥ विजयाणं च निहाणा, इ मालवं ता पयाहिणाउ ॥१५०॥ चित्ते य बंभकूडे, नलिणीकूडे य एगसेले य ॥ तिउडे वेसमणे वि य, अंजण मायंजणे चेव ॥ १५१॥ अंकावइ पम्हावइ, आसीविस तह सुहावहे चंदे ॥ सूरे नागे देवे, सोलस वक्कारगिरिनामा ॥ १५२ ॥ गाहाव इ दाहावइ, वेगवई तत्त मत्त उम्मत्ता ॥ खीरोय सीयसोया, तह अंतोवाहि णी चेव ॥१५३॥ उम्मीमालिणि गंभी,रमालिणी फेणमालिणी चेव ॥ सव्वहवि दसजोयण, उंडाकुंडुब्भवा एया ॥१५४॥कच्छो सुकच्छो य महा, कच्छो कच्छावई त हा ॥ आवत्तो मंगलावत्तो, पुक्खलो पुक्खलावई ॥१५५॥ वच्छो सुवच्छो य महा,

वच्छो वच्छावई विया ॥ रम्मो य रम्मउ चेव, रमणी मंगलावई॥१५६॥पम्हो सुप म्हो य महा, पम्हो पम्हावई तहा ॥ संखो नलिणनामा य, कुमुदो नलिणाव ई ॥१५७॥ वप्पो सुवप्पो य महा,वप्पो वप्पावईविय ॥ वग्गू तहा सुवग्गू य,गं धिलो गंधिलावई ॥ १५८॥ एए पुव्वावरगय, वियड्ढदलियत्तिनई दिसिदलेसु ॥ नरकपुरीसमाउ, इमेहिं नामेहिं नयरीउ ॥ १५९ ॥ खेमा खेमपुरा विय, रिठा रिठावई य नायव्वा ॥ खग्गी मंजूसा विय, उसहपुरी पुंमरिगिणी य ॥ १६० ॥ सुसीमा कुंमला चेव, वराइ य पहंकरा ॥ अंकावइ पम्हावइ, सुभा रयणसं चया ॥१६१॥ आसपुरा सींहपुरा, महापुरा तह य चेव विजयपुरा ॥ अवरा इया य अवरा, असोग तह य वीयसोगा य ॥१६२॥ विजया य वेजयंती, ज यंति अपराजिया य बोधव्वा ॥ चक्कपुरा खग्गपुरा, होइ अवज्झा अउज्झा य ॥ ॥१६३॥ कुंमुप्पवा उ गंगा,सिंधूउ कच्छपम्हपमुहेसु ॥ अठठएसु विजये,सु सेसे

सु रत्त रत्तवई ॥१६४॥ अविवक्खिऊण जगई, सवेइवणमुहचउक्कपिहुलत्तं॥गु
णतीससय छवीसा,न इंति गिरिअंति एगकला ॥१६५॥ पणतीससहस चउस
य, छडुत्तरा सयलविजयविक्खंभो ॥ वणमुह छग विक्खंभो, अट्ठवाससया य च
उआला ॥१६६॥ सगसय पन्नासा नइ,पिहुत्ति चउवण सहस मेरुवणे ॥ गिरि
विछर चउसहसा, सव्वसमासो हवइ लक्खं ॥१६७॥ जोयण सयदसगंते, सम
धरणीउ अहो अहो गामा ॥ बायालीससहसेहिं,गंतुं मेरुस्स पछिमउ ॥१६८॥
चउ चउतीसं च जिणा, जहन्नमुक्कोसउ य हुंति कमा ॥ हरिचक्किबला चउरो,
तीसं पत्तेयमिह दीवे ॥१६९॥ ससिछग रविछग चारो, इह दीवे तेसिं चारखि
त्तं तु ॥ पणसय दसुत्तराइं, इगसठिभागा य अडयाला ॥ १७०॥ पनरस चुल
सीइसयं, छप्पन्न डयालभागमाणाइं ॥ ससिसूरमंडलाइं, तयंतराणि गिगहीणा
इं ॥१७१॥ पणतीस जोयणे भा,ग तीस चउरो य भाग सगभाया ॥ अंतरमा

णं ससिणो, रविणो पुण जोयणे ड्डुन्नि ॥१७२॥ दीवंतो असियसए, पण पणास
ठी य मंडला तेसिं ॥ तीसहिय तिसय लवणे, दस गुणवीसं सयं कमसो ॥
॥१७३॥ ससि ससि रवि रवि अंतरि, मश्ने इगलरकु तिसयसाढूणो ॥ साहिय
ड्डुसयरि पणचय, बहिलरको ठसय साठहिर्ज ॥१७४॥ साहियपणसहस तिहु,
त्तराइ ससिणो मुहुत्तगइ मश्ने ॥ बावन्नहिया सा बहि, पइमंमल पउणचउवुट्ठी
॥१७५॥ जा ससिणो सारविणो, अम्सयरिसएण सीसएण हिया ॥ किंचूणा
णं अठा, रसठिन्नागाणमिह वुट्ठी ॥१७६॥ मश्ने उदयछंतरि, चउणवइसहस्स
पणसय ठवीसा ॥ बायालसठिन्नागा, दिणं च अठारसमुहुत्तं ॥ १७७ ॥ पइमं
मल दिणहाणी, ड्डुन्हमुहुत्तेगसठिन्नागाणं ॥ अंते बारमुहुत्तं, दिणं निसा तस्स
विवरीया ॥१७८॥ उदयछंतरि बाहिं, सहसा तेसठि ठ सय तेसठि ॥ तह इग
ससिपरिवारो, रिस्कम वीसाम्सीइ गहा ॥ १७९ ॥ ठसठिसहस नवसय, पण

हत्तरी तारकोडिकोडीणं ॥ ससंतरेणमुस्से,हंगुलमाणेण वा हुंति ॥१८०॥ गह
रिक्ख तारगाणं, संखं ससिसंखसंगुणं काउं ॥ इच्छियदीवुदहिंमिय, गहाइमाणं
वियाणिज्जा ॥१८१॥ चउ चउ बारस बारस, लवणे तह धाइयंमि ससि सूरा ॥
परउंदहिदीवेसु य, तिगुणा पुव्विल्लसंजुत्ता ॥१८२॥ नरखित्तं जा समसे, णिचा
रिणो सिग्घसिग्घतरगइणो ॥ दिठिपहमिंति खित्ता,णुमाणउ ते नराण जहा ॥
॥१८३॥ पणसय सत्तत्तीसा, चउतीससहस्स लक्ख इगवीसा ॥ पुक्खरदीवड्ढन
रा, पुव्वेण वरेण पिछंति ॥१८४॥ नरखित्तवहिं ससिरवि, संखाकरणंतरेहि वा
होई ॥ तह तह य जोइसिया, अचलद्धपमाणसु विमाणा ॥१८५॥ जंबूपरिहि
तिलक्खा, सोलसहस दुसय पउणअडवीसा ॥ धणुअडवीस सयंगुल, तेरसस
ड्ढासमहिया य ॥ १८६ ॥ सगसय नउया कोडी,लक्खा छप्पन्न चउणवइ स[illegible]सा
॥ सड्ढसयं पउणड्ढको, स सढबासठि करगणियं ॥१८७॥ पट्टपरिहिं [illegible] गणियं,

अंतिमखंडाइ उसुजियं च धणुं ॥ बाहं पयरं च घणं, गणियव्वममेहि करणेहिं ॥१८८॥ विक्कंभवग्गदहगुण,मूलं वट्टस्स परिरउ होई ॥ विक्कंभपाय गुणिउ, परिरउ तस्स गणीयपयं ॥ १८९ ॥ उगाहु उसूसु च्चिय, उगणीसगुणो उसूक ला होई ॥ विउसुपिहुत्ते चउगुण, इसुगुणिए मूलमिह जीवा ॥ १९० ॥ उसुव ग्गि छगुणजीवा, वग्गजुए मूल होइ धणुपिठं ॥ धणुडुगविसेससेसं, दलियं बाहाडुगं होई ॥१९१॥ अंतिमखंडस्सुसुणा,जीवं संगुणि य चउहि भइऊणं॥ लद्धंमि वग्गिए दस,गुणंमि मूलं हवइ पयरो ॥ १९२॥ जीवा वग्गेण डुगे, मि लिए दलिए य होइ जं मूलं ॥ वेयड्ढाईण तयं, सपिहुत्तगुणं हवइ पयरो ॥ ॥१९३॥ एयं च पयरगुणियं, संववहारेण देसियं तेण ॥ किंचूणं होइ फलं,अ इहंपि हवइ सुहुमगणणा ॥ १९४ ॥ पयरो सोस्सेहगुणो, होइ घणोपरिरयाइ सव्वं वा ॥ करणगणणालसेहिं, जंतगलहियाउ दठव्वं ॥ १९५ ॥ इति श्री लघु

क्षेत्रसमासे प्रथम जंबूद्वीपाधिकारः समाप्तः ॥ दीवोलवणसमुद्दाहिगारो जणइ ॥ गोतिछं लवणोअय, जोयण पणनवइ सहस जा तह ॥ समभूतलाउ सग सय, जलवुड्ढी सहसमो गाढो ॥ १९६ ॥ तेरासिएण मझि,ह्व रासिणा संगुणिज्ज अंतिमगं ॥ तं पढमरासिभइयं, उव्वेहं मुणसु लवणजले ॥१९७ ॥ हिठुवरि सहसदसगं, पिहुलामूलाउ सतरसहसुच्चा ॥ लवणसिहा सा तउवरि, गाउदुगं वढ्ढइ डुवेलं ॥१९८॥ बहुमझ्झे चउदिसि चउ, पायाला वयरकलससंठाणा ॥ जोयणसहस्स जड्डा, तहसगुण हिठुवरि रुंदा ॥१९९॥ लक्खं च मझ्झि पिहुला, जोयणलक्खं च भूमिमो गाढा ॥ पुव्वाइसु वडवामुह, केजुव जूवे सर निहाणा ॥२००॥ अन्ने लहुपायाला, सगसहसा अडसया सचुलसीया ॥ पुव्वुत्त सयंस पमा,णा तह तह प्पएसेसु ॥२०१॥ कालो य महाकालो, वेलंब पभंजणोय चउसु सुरा ॥ पलिउंवमाउणो तह, सेसेसु सुरा तयझाऊ ॥ २०२ ॥ सव्वे सिमहो

भागे, वाऊ मझिल्लंयमि जलवाऊ ॥ केवलजलमुवरिल्ले, भाग उगे तह सासु
वे ॥२०३॥ बहवे उयारवाया,मुछंति खुहंति उसि वाराउ ॥ एगअहोरत्तं तो, त
या तया वेलपरिवुट्ठी ॥ २०४ ॥ बायालसट्ठि उसयरि, सहसा नागाण मझवरि
बाहिं ॥ वेलं धरंति कमसो, चउहत्तरुलक्ख ते सवे ॥२०५॥ बायालसहस्सेहिं,
पुवेसाणाइदिसि विदिसि लवणे ॥ वेलंधराणवेलं, धरराईणं गिरिसु वासा ॥
॥ २०६ ॥ गोथूभे दगभासे, संखे दगसीमनामि दिसि सेले ॥ गोथूभो सिवदे
वो, संखो य मणोसिलो राया ॥२०७॥ कक्कोडे विज्जुपहे, केलास रुणप्पहे वि
दिसि सेले ॥ कक्कोडग कद्दमउ, केलास रुणप्पहो सामी ॥ २०८॥ एए गिरिणो
सवे, बावीसहिया य दससया मूले ॥ चउसय चउवीसहिया, विछिस्सा हुंति
सिहरतले ॥२०९॥ सतरससय इगवीसे, उच्चत्ते ते सवेइया सव ॥ कणगंकरय
यफालिह,दिसासु विदिसासु रयणमया ॥२१०॥ नवगुणहत्तरि जोयण, बहिज

लुवरि चत्त पण नवइ जाया ॥ एए मज्झे नवसय, तेसठा जागसगसयरी॥२११॥ हिमवंतंता विदिसी, साणाइगयासु चउसु दाढासु ॥ सग सग अंतर दीवा, पढमचउक्कं च जगईउ ॥२१२॥ जोयणतिसएहि तउ, सयसयवुट्ठी य छसु चउक्केसु ॥ अन्नुन्न जगइ अंतरि, अंतरसमविछरा सव्वे ॥२१३॥ पढमचउक्कुच्चबहिं, अट्ठाइ य जोयणइ य वीसंसो ॥ सयारिं सवुड्ढिपुरउ, मज्झदिसिं सव्वि कोसदुगं ॥२१४॥ सव्वे सवेइयंता, पढमचउक्कंमि तेसि नामाइं ॥ एगोरुय आजासिय, वेसाणिय चेव लांगूले ॥ २१५ ॥ बीयचउक्के हयगय, गो सक्कुलि पुव्वकस्सनामाणो ॥ आयंस मिंढग अउ, गोपुव्वमुहा य तइयंमि ॥२१६॥ हय गय हरि वग्घमुहा, चउछए आसकस्स हरिकस्सो, अकस्स कस्स प्पावर, ण दीव पंचमचउक्कंमि ॥२१७॥ उक्कमुहो मेहमुहो, विज्जुमुहो विज्जुदंत छठंमि ॥ सत्तमगे दंतंता, घण लठ निगूढ सुध्दाय ॥२१८॥ एमेव य सिहरिंमि वि, अडवीसं सव्वि हुंति छप्प

न्ना ॥ एएसु जुअलरूवा, पलिआसंखंसआउ नरा ॥ २१९ ॥ जोयणदसमंस तणू, पिठिकरंडाणमेसि चउसठी ॥ असणं चउत्थाउ, गुणसीदिण वच्चपाल णया ॥२२०॥ पछिमदिसि सुठिय लव,णसामिणो गोयमुत्ति इगुदीवो ॥ उनउ वि जंबुलवणे, छ छ रविदीवा य तेसिं च ॥२२१॥ जगइ परुप्परि अंतरि, तह विछर बार जोयणसहस्सा॥एमेव य पुव्वदिसि,चंदचउक्कस्स चउ दीवा ॥२२२॥ एवंचिय बाहिरउ, दीवा अठठ पुव्वपछिमउ ॥ छ छ लवणे ठ ठ धायइ,संरु स सीणं रवीणं च ॥२२३॥ एए दीवा जलुवरि, बहि जोयण सढ्ढअठसीइ तहा ॥ भागावि य चालीसा, मझे पुण कोसढुगमेव ॥ २२४ ॥ कुलगिरिपासायसमा, पासाया एसु नियनियपहूणं ॥ तह लवणे जोइसिया, दगफालिह उढ्ढलेसागा ॥ २२५ ॥ इति श्री लवणसमुद्राधिकारो द्वितीयः समाप्तः ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ जामुत्तरदीहेणं, दससयसमपिहुल पणसय उच्चेण ॥ उसुयारगिरि दुगेणं,

धायइसंडो उह विहत्तो ॥२२६॥ खंडडुगे छ छ गिरिणो, सग सग वासा य अ
रविवररूवा ॥ धुरि अंति समा गिरिणो,वासा पुण पिहुलपिहुलयरा ॥२२७॥
दहकुंडुंडत्तममे,रु मुस्सयं विहरं वियट्ढाणं॥वट्टगिरीणं च सुमे,रुवज्जमिह जाण
पुव्वसमं ॥२२८॥ मेरुडुगंपि तहच्चिय, नवरं सोमणसहिठुवरि देसे ॥ सगअड
सहस्स ऊण,त्तिसहस पणसीइ उच्चत्ते ॥२२९॥ तहपणनवइचउरुसउ, य अड
चउरुसउ य अठ तीसाय ॥ दस य सया य कमेणं, पणठाणपिहुत्ति हिठाय
॥२३०॥ नइ कुंडदीववणमुह, दहदीहरसेलकमलविहारं ॥ नइउंडत्तं च तहा,
दह दीहत्तं च इह डुगुणं ॥२३१॥ इगलक्क सत्तसहसा, अमसय गुणसीइ न्न
हसालवणं ॥ पुव्वावरदीहंतं, जामुत्तरअठसीइन्नइयं ॥ २३२ ॥ बहिगयदंता दी
हा, पणलक्कण सयरिसहस ङ गुणठा ॥ इयरे तिलक्क छप्प,ससहस सयडुसि
सगवीसा ॥२३३॥ खित्ताणुमाणर्ड से, स सेलनईविजय वणमुहायामो ॥ चउ

लक्खु दीहवासा, वासविजयविहरो ऊइमो ॥ २३४ ॥ खित्तंकगुणधुवंके, दोसय बारुत्तरेहि पविजत्ते ॥ सव्वब वासवासो, हवेइ इह पुण इय धुवंका ॥२३५॥ धुरि चऊद लक्ख ऊसह, स दो सगनऊया धुवं तहा मञ्झे ॥ ऊसय अडुत्तर सतस, ठि सहसछव्वीसलक्खा य ॥ २३६ ॥ गुणवीस सयं बत्ती,स सहस गुणयाल लक्ख धुवमंते ॥ नइगिरिवणमाण विसु, द्ध खित्तसोलंसपिहु विजया ॥२३७॥ नवसहसा बसय तिहु, त्तरा य ब च्चेव सोलसाया य ॥ विजयपिहुत्त नइगिरि, वणविजयसमासचऊलक्खा ॥२३८॥ पुव्वंव पुरी य तरू, परमुत्तरकुरु सु धाइ महधाइ ॥ रुक्खा तेसु सुदंसण, पियदंसणनामया देवा ॥ २३९ ॥ धुव रासीसु य मिलिया, एगो लक्खो य अमसयरि सहसा ॥ अठसया बायाला, परिहितिगं धायईसंडे ॥ २४० ॥ कालोदहि सव्वबवि, सहसुंडो वेलविरहिउ त ब ॥ सुठियसम कालमहा, कालसुरा पुव्वपछिमऊ ॥ २४१ ॥ लवणंमिव जहसं

नव, ससिरविदीवा इहंपि नायव्वा ॥ नवरं समंतउ ते, कोसङ्गुव्वा जल
स्सुवरिं ॥२४२॥ पुक्करदलबहिजगइ, व्व संठिउं माणुसुत्तरो सेलो ॥ वेलंधरगि
रिमाणो, सींह निसाई निसढवन्नो ॥२४३॥ जह खित्तनगाईणं, संठाणो धाय
ए तहेव इहं ॥ डुगुणो य नहसालो, मेरुसुयारा तहा चेव ॥ २४४ ॥ इह बाहि
रगयदंता, चउरो दीहत्ति वीस सय सहसा ॥ तेयालीससहस्सा, गुणवीसहि
या सया डुन्नि ॥ २४५ ॥ अप्भिंतर गयदंता, सोलसलक्का य सहसछव्वीसा ॥
सोलहिय सयं चेगं, दीहत्ते हुंति चउरोवि ॥२४६॥ सेसा पमाणउ जह, जंबूदी
वाउ धाइए नणिया ॥ डुगुणा समा य ते तह, धायइसंडाउ इह नेया ॥२४७॥
अडसीलक्का चउदस, सहसा तह नवसया य इगवीसा ॥ अप्भिंतर धुवरासी,
पुव्वत्त विहीइ गणियव्वो ॥२४८॥ इगकोडि तेरलक्का, सहसा चउचत्त सगसय
तियाला ॥ पुक्करवरदीवड्ढे,धुवरासी एस मव्वंमि ॥२४९॥ एगा कोमी अमृती,

सलक्ख चउहत्तरीसहस्सा य ॥ पंचसया पणसठा, धुवरासी पुक्करद्धंते ॥२५०॥
गुणवीससहस सगसय, चउणउय सवाय विजयविक्खंभो ॥ तह इह बहिवह
सलिला, पविसंति य नरनगस्साहो ॥२५१॥ इह पउममहापउमो, रुक्का उत्त
रकुरूसु पुव्विव॥तेसु य वसंति देवा, पउमो तह पुंडरीउ य ॥२५२॥ पुक्करदल
पुव्वाहर, खंडंतो सहसङ्गपिहुकुम्भा ॥ अणियातठाणपुण, गीसद्धाचेव जाणंति॥
दो गुणहत्तरि पढमे, अड लवणे बीयदीव तइयद्धे॥पिहुपिहु पणसय चाला, इय
नरखित्ते सयलगिरिणो॥२५३॥तेरह सय सगवन्ना, ते पणमेरूहि विरहिया सव्वे
॥ उस्सेहपायकंदो, माणुससेलो वि एमेव ॥ २५४ ॥ धुवरासीसु तिलक्खा, पण
पन्नसहस्स छसय चुलसीया ॥ मिलिया हवंति कमसो, परिहितिगं पुक्करद्धस्स
॥२५५॥ नइदहघणथणियागणि, जिणाइ नरजम्ममरणकालाई ॥ पणयालल
क्खजोयण, नरखित्तंमुत्तु नो पुरउ ॥ २५६॥ चउस्सुवि इसुयारेसु, इक्किक्कं नरन

गंमि चत्तारि ॥ कूडोवरि जिणभवणा, कुलगिरिजिणभवणपरिमाणा ॥ २५७॥ तत्तो डुगुणपमाणा,चउदारा थुत्तवस्रियसुरूवा॥नंदीसरबावस्रा, चउ कुंमलि रु यगिचत्तारि ॥२५८॥ वहुसंखविगप्पे रुय, गदीव उच्चत्ति सहस चुलसीई ॥नर नगसमरुयगो पुण, विछरि सयठाण सहसंको ॥२५९॥ तस्स सिहरंमि चउदि सि, बीयसहस्सि गिगु चउछि अठ्ठ ॥ विदिसि चऊ इय चत्ता, दिसिकुमरि कूरू सहस्सुच्चा ॥२६०॥ इय कयवयदीवोदहि, वियारलेसो मएविमझणावि ॥ लिहिउं जिणगणहरगुरु, सुयसुयदेवीपसाएण ॥२६१॥ सेसाण दीवाण तहो दहीणं, वियारविछारमणोरपारं ॥ सया सुयाउ परिभावयंतु, सव्वंपि सव्वनुयइक्क चित्ता ॥२६२॥ सूरिहि जं रयणसेहरनामएहिं, अप्पछ मेव रइयं नरखित्तविस्कं ॥ तं सोहियं पयरणं सुयणाहि लोए, पावेउ तं कुसलरंगमयप्पसिद्धिं ॥२६३॥

इति श्री क्षेत्रसमासप्रकरणं संपूर्णम् ॥ इयखित्त समास पकरणस्सगठो० ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥ अथ श्रीदेवेंद्रसूरिकृतकर्मग्रंथमूलगाथाप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तम् ॥ सिरिवीरजिणं वंदिअ, कम्मविवागं समासउंवुडं ॥ कीरइ जिएण हेउहिं, जेणंतो भसए कम्मं ॥१॥ पयइ ठिइ रस पएसा, तं चउहा मोअगस्स दिठंता ॥ मूलपगइठ उत्तर, पगई अडवन्न सयभेअं ॥ २ ॥ इह नाण दंसणा वर,ण वेअ मोहाउ नाम गोआणी ॥ विग्घं च पण नव डुअ, ठवीस चउ ति सय डु पण विहं ॥ ३ ॥ मइ सुअ उंही मणके, वलाणि नाणाणि तब मइना ण ॥ वंजणवग्गह चउहा, मण नयण विणिंदिअ चउक्का ॥४॥ अवुग्गह ईहा वा,यधारणा करण माणसेहिं ठहा ॥ इअ अठवीस भेअं,चउदसहा वीसहा च सुअं ॥५॥ अस्कर सन्नी सम्मं, साईयं खलु सुपजवसिअं च ॥ गमिअं अंगप विठं, सत्तवि एए सपम्विस्का ॥६॥ पजय अस्कर पय सं, घाया पडिवत्ति तह य अणुउंगो ॥ पाहुडपाहुड पाहुड, वबू पुवाय ससमासा ॥ ७ ॥ अणुगामि

वड्ढमाणय, पडिवाई यरविहा ब्हा उंही ॥ रिउमइ विउलमई मण, नाणं केवल मिगविहाणं ॥८॥ एसिंजं आवरणं, पडुच्च चक्कुस्स तं तया वरणं ॥दंसण चउ पण निद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं ॥ ९ ॥ चक्कु दिठि अचक्कु, सेसिंदिय उंहिं केवलेहिं च ॥ दंसण मिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा ॥ १० ॥ सुह पडिबोहा निद्दा, निद्दा निद्दा य डुक्कपडिबोहा ॥ पयला ठिउंवविठ, स्स पयल पयला य चंकमउ ॥११॥ दिण चिंतिअब्ब करणी, थीणद्धी अद्धचक्कि अद्ध बला ॥ महुलित्त खग्गधारा, लिहिणं व डुहाउ वेअणिअं ॥ १२ ॥ उसन्नं सुरमणुए, सायमसायं तु तिरिअ निरएसु ॥ मजंव मोहणीअं, डुविहं दंसण चरण मोहा ॥ १३ ॥ दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तहेव मिछत्तं ॥ सुद्धं अद्ध विसुद्धं, अविसुद्धं तं हवइ कमसो ॥१४॥ जिअ अजिअ पुस पावा, सव संवर बंध मुक्क निजरणा ॥ जेणं सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाइ बहुनेअं ॥१५॥ मी

सा न रागदोसो, जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने ॥ नालिअर दीवमणुणो, मि
हं जिणधम्म विवरीअं ॥१६॥ सोलस कसाय नव नो, कसाय डुविहं चरित्त
मोहणियं ॥ अण अप्पच्चरकाणा, पच्चरकाणाय संजलणा ॥१७॥ जा जीव वरि
स चउमा, स परकग्गा निरय तिरिय नर अमरा ॥ सम्माणु सव्वविरई, अ
हखाय चरित्त घायकरा ॥१८॥ जल रेणु पुढवि पव्वय, राईसरिसो चउविहो को
हो ॥ तिणि सिलया कठठिअ, सेलडंगो वमोमाणो ॥ १९ ॥ माया वलेहि गो
मु,त्तिमिंढसिंग घणवंसमूलसमा ॥ लोहो हलिद्द खंजण, कद्दम किमिराग सा
माणो ॥२०॥ जस्सुदया होइ जिए, हास रइ अरइ सोग नय कुछा ॥ सनिमि
त्त मन्नहा वा, तं इह हासाइ मोहणिअं ॥२१॥ पुरिसिछि तडनयं पइ, अहि
लासो जव्व सा हवइ सोउ ॥ थी नर नपुं वेउदउ, फुंफुम तण नगरदाहसमो
॥२२॥ सुर नर तिरि निरयाउ, हडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं ॥ बायाल ति

नवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तठी ॥२३॥ गइ जाइ तणु उवंगा, बंधण संघाय णाणि संघयणा ॥ संठाण वन्न गंध र,स फास अणुपुव्वि विहगगई ॥२४॥ पिंडपयडित्ति चउदस,परघा उस्सास आय वुज्जोअं ॥ अगुरुलहु तित्थ निमिणो, वघाय मिअ अठपत्तेआ ॥२५॥ तस बायर पज्जत्तं, पत्तेय थिरं सुभं च सुभगं च ॥ सुसरा इज्ज जसं तस, दसगं थावरदसं तु इमं ॥ २६ ॥ थावर सुहुम अपज्जं, साहारण अथिर असुभ दुभगाणि ॥ दुसर अणाइज्जा जस, मिअनामे सेअरा वीसं ॥२७॥ तसचउ थिरछक्कं अथि,रछक्क सुहमतिग थावरचउक्कं ॥ सुभगतिगाइ विभासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं ॥२८॥ वन्नचउ अगुरुलहु चउ, तसाइ दु ति चउर छक्क मिच्चाइ ॥ इअ अन्नावि विभासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं ॥२९॥ गइआइअणुक्कमसो, चउ पण पण ति पण पंच छ छक्कं ॥ पण दुग पण ठ चउ दुग, इअ उत्तरभेअ पणसठी ॥३०॥ अडवीस जुआ तिनवइ,

संतेवा पनर बंधणे तिसयं ॥ बंधण संघाय गहो, तणूसु सामस्स वण्ण चक्क
॥ ३१ ॥ इअ सत्त ठी बंधो,दए अ नय सम्म मीसया बंधे ॥ बंधद ए सत्ताए,
वीस दुवीसठवस्ससयं ॥ ३२ ॥ नरय तिरि नर सुरगई, इग बिअ तिअ चउ
पणिंदि जाईउ ॥ उराल विउव्वा हा, र तेअ कम्मण पण सरीरा ॥ ३३ ॥ बा
हू रु पिठि सिर उर, उअरंग उवंग अंगुली पमुहा ॥ सेसा अंगोवंगा, पढ
म तणुतिगस्सुवंगाणि ॥३४॥ उरलाइ पुग्गलाणं, निबद्ध बझंतयाण संबंधं ॥
जं कुणइ जउ समंतं, बंधण मुरलाइ तणु नामा ॥३५॥ जं संघायइ उरला, इ
पुग्गले तिणगणं वदंताली ॥ तं संघायं बंधण,मिव तणु नामेण पंचविहं॥३६॥
उराल विउव्वा हा, र याण सग तेअ कम्मजुत्ताणं ॥ नव बंधणाणि इअर, दु
सहि आणि तिन्नि तेसिं च॥३७॥ संघयण मठिनिचउ, तं छद्धा वज्जरिसह ना
रायं ॥ तहय रिसह नारायं, नारायं अद्धनारायं ॥ ३८ ॥ कीलिअ छेवठं इह,

रिसहो पट्टो अ कीलिआवज्जं ॥ उसभं मक्कडबंधो, नारायं इममुरालंगे ॥ ३९॥ सम चउरंसं निग्गो, हा साइ खुज्जाइ वामणं हुंडं ॥ संठाणा वन्न किण्ह, नील लोहिय हलिद्द सिआ ॥४०॥ सुरही दुरही रस पण, तित्त कडु कसाय अंबिला महुरा ॥ फासा गुरु लहु मिउ खर, सी उण्ह सिणिद्ध रुक्खठा ॥ ४१ ॥ नील कसिणं दुगंधं, तित्तं कडुअं गुरुं खरं रुक्खं ॥ सीअं च असुह नवगं,इक्कारसगं सुभं सेसं ॥४२॥ चउहगइव्वणुपुव्वी, गइ पुव्वि दुगं तिगं निआउजुअं ॥ पुव्वी उदओ वक्के, सुह असुह वसु उट्ट विहग गई ॥ ४३ ॥ परघा उदया पाणी, परेसि बलिणंपि होइ दुद्धरिसो ॥ ऊससिण लद्धिजुत्तो,हवेइ ऊसासनामवसा ॥ ४४ ॥ रविबिंबेउ जिअंगं, तावजुअं आयवाउ नउजलणे ॥ जमुसिण फासस्स तहिं, लोहिअवन्नस्स उदउत्ति ॥४५॥ अणुसिण पयासरूवं, जिअंगमुज्जोअए इहुज्जो आ ॥ जइ देवुत्तर विक्किअ,जोइस खज्जोअ माइव ॥४६॥अंगं न

गुरु न लहुअ, जायइ जीवस्स अगुरु लहु उदया ॥ तित्थेण तिहुअणस्सवि, पुज्जो से उदउ केवलिणो ॥४७॥ अंगोवंग निअमिणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं ॥ उवघाया उव हम्मइ,सतणु अवयवलंबि गाईहिं ॥ ४८ ॥ बि ति चउ पणिंदितस्सा, बायरउ बायराजिआ थूला ॥ निअ निअ पज्जत्ति जुआ, पज्जत्ता लद्धिकरणेहिं ॥४९॥ पत्ते अ तणू पत्ते,उदएणं दंतअठिमाइ थिरं ॥ नाभुवरि सिराइ सुहं, सुभगाउ सव्वजणइठ्ठो ॥५०॥ सुसरा महुर सुहझुणी, आइज्जा सव्वलोअ गिज्झवउ ॥ जसउ जस कित्तीउ, थावर दसगं विवज्जत्थं ॥ ॥५१॥ गोअं दुहुच्च नीअं,कुलाल इव सुघड भुंभलाईअं ॥ विग्घं दाणे लाभे, भोगु व भोगेसु विरिएअ ॥५२॥ सिरि हरिअसमं एअं, जह पडिकूलेण तेण रायाई ॥ न कुणइ दाणाई अं,एवं विग्घेण जीवो वि॥५३॥पडिणीअत्तण निन्हव, उवघाय पउस अंतराएणं ॥ अच्चा सायणयाए, आवरण दुगं जिउ ज

यई ॥५४॥ गुरुभत्ति खंति करुणा, वय जोग कसायविजय दाण जुउ ॥ दृढ धम्माई अज्जइ, सायमसायं विवज्जयउ॥५५॥उम्मग्ग देसणाम,ग्ग नासणा देवदव्वहरणेहिं ॥ दंसणमोहं जिण मुणि, चेइअ संघाइ पडिणीउ ॥५६॥ दुविहं पि चरणमोहं, कसाय हासाइ विसय विव समणो ॥ बंधइ निरयाउ महा, रंभ परिग्गहरउ रुद्दो ॥५७॥ तिरिआउ गूढहिअउ,सढो ससल्लो तहा मणुस्साउ॥ पयई य तणुकसाउ, दाणरुई मज्झिमगुणो अ ॥ ५८ ॥ अविरइमाइ सुराउ, बालतवोऽकाम निज्जरोजयइ ॥ सरलो अगार विल्लो, सुहनामं अन्नहा असुहं ॥५९॥ गुण पेहीमय रहिउ, अज्झयण ज्झावणा रुई निच्चं ॥ पकुणइ जिणाइ भत्तो, उच्चं नीअं इअरहाउ ॥ ६० ॥ जिणपूआविग्घकरो, हिंसाइपरायणो जयइ विग्घं ॥ इय कम्मविवागोयं, लिहिउ देविंदसूरीहिं ॥ ६१ ॥ इति कर्मविपाकनामा प्रथमः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ १ ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

॥ श्री जिनाय नमः ॥ अथ श्रीद्वितीयकर्मग्रंथप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तम् ॥

तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणगणेसु सयलकम्माइ ॥ बंधुदयोदीरणया, सत्ता पत्ताणि खविआणि ॥१॥ मिछे सासणमीसे, अविरय देसे पमत्त अपमत्ते ॥ निअट्टि अनिअट्टि सुहु,मुवसम खीण सजोगि अजोगि गुणा ॥ २ ॥ अभिनव कम्मग्गहणं, बंधो उहेण तह वीस सयं ॥ तिछयरा हारग डुग, वज्जं मिछंमि सतर सयं ॥३॥ नरय तिग जाइ थावर,चउ हुंमा यव छिवठ नपु मिछं ॥ सोलं तो इगहिअसय, सासणि तिरि थीण डुहग तिगं ॥४॥ अण मज्झागिइ संघय,ण चउ नि उज्जोअ कुखगइ छित्ति ॥ पणवीसंतो मीसे, चउसयरि डुहाउअ अबंधा ॥५॥ सम्मे सग सयरि जिणा, उबंधि वइर नर तिअ बिअ कसाया ॥ उरल डुगंतो देसे, सत्तठी तिय कसायं तो ॥ ६ ॥ तेवठि पमत्ते सो,ग अरइ अथिर डुग अजस अस्सायं ॥ वुछिज्ज छच्च सत्तव, नेइ सुराउ जया

निठं ॥७॥ गुणसठि अप्पमत्ते, सुराउ बंधं तु जइ इहा गछे ॥ अन्नह अठाव
न्ना, जं आहारग दुगं बंधे ॥८॥ अडवन्न अपुव्वा इमि, निद्द दुगंतो छपन्न पण
भागे ॥ सुर दुग पणिंदि सुखगइ, तस नव उरल विणु तणु वंगा ॥९॥ समच
उर निमिण जिण व,न्न अगुरु लहु चउ छलंसि तीसंतो ॥ चरमे छवीस बंधो,
हास रई कुछ भय भेउ ॥१०॥ अनिअट्टि भाग पणगे, इगेगहीणोदुवीसविह
बंधो ॥ पुम संजलण चउण्हं, कमेण छेउ सतर सुहुमे ॥११॥ चउ दंसणुच्च ज
स ना,ण विग्घ दसगंति सोलसु छेउ ॥ तिसु साय बंध छेउ, सजोगि बंधंत अ
णंतो अ ॥१२॥ बंधो संमत्तो ॥१॥ उदउ विवाग वेअण,मुदीरण मपत्ति इह दु
वीस सयं ॥ सतर सयं मिछे मी,स सम्म आहार जिणणुदया ॥ १३ ॥ सुहुम
तिगा यव मिछं, मिछत्तं सासणे इगारसयं ॥ निरयाणु पुव्विणुदया, अण थाव
र इग विगल अंतो ॥१४॥ मीसे सय मणु पुव्वी,णुदया मीसो दएण मीसंतो ॥

चउसय मजए सम्मा,णु पुव्वि खेवा बिअ कसाया ॥ १५ ॥ मणुतिरिणु पुव्वि विउव, ठ दुहग अणाइञ्जदुग सतर छेउ ॥ सगसीइ देसि तिरि गइ, आउ नि उज्जोअ ति कसाया ॥१६॥ अठछेउ इगसी, पमत्ति आहार जुअल पखेवा ॥ थीण तिगा हारग दुग, छेउ छ सयरि अपमत्ते ॥ १७ ॥ समत्तं तिमसंघय, ण तिअग छेउ बिसत्तरि अपुव्वे ॥ हासाइ छक्क अंतो,छसठि अनिअट्टि वेअ तिगं ॥१८॥ संजलण तिगं छ छेउ,सठी सुहुमम्मि तुरिअ लोभंतो ॥ उवसंत गुणे गुण स,ठि रिसह नाराय दुग अंतो ॥१९॥ सगवन्न खीण दु चरिमि, निद्द दु गंतो अचरिमि पणवन्ना ॥ नाणंतराय दंसण, चउ छेउ सजोगि बायाला॥२०॥ तिहुदया उरला थिर, खगइ दुग परित्त तिग छ संठाणा ॥ अगुरु लहु वन्न चउ निमि,ण तेअ कम्माइग संघयणा॥२१॥सूसर दूसर साया, साए गयरं च तीस वुछेउ ॥ बारस अजोगि सुभगा, इज्ज जसन्नयर वेअणिअं ॥ २२ ॥ तस

तिग पणिंदि मणुआ,उ गइ जिणु ऽवंति चरिम समयंतो॥उदउ समत्तो॥२॥उद
उव्वुदीरणाया,परम पमत्ताइ सग गुणेसु॥पाठांतरं॥परम पमत्ताइसगतिगुणा॥२३
पाठांतरगाथा ॥ जं वेअणिआहारउ, गथीणतिगनराउअप्पमत्तता ॥ गुणयाल
सजोगिउदी, रणं तु अणुदीरगु अजोगी ॥२४॥ एसा पयमी तिगुणा, वेअणि
आहार जुअल थीण तिगं ॥ मणुआउ पमत्तंता, अजोगि अणुदीरगोभय
वं॥२५॥उदीरणा सम्मत्ता॥३॥सत्ता कम्माण ठिई, बंधाइअ लद्ध अत्त लाभा
णं ॥ संते अमयाल सयं, जा उवसमु विजिणु विअ तइए ॥२६॥ अपूव्वाइअ
चउक्के, अण तिरि निरयाउ विणु बिआलसयं ॥ सम्माइ चउसु सत्तग, खयं
मि इग चत्तसय महवा ॥२७॥ खवगंतु पप्प चउसुवि, पणयालं निरय तिरि सु
राउ विणा ॥ सत्तग विणु अडतीसं, जा अनिअट्टी पढम भागो ॥२८॥ थावर
तिरि निरया यव, दुग थीण तिगे ग विगल साहारं ॥ सोल खउ दुविस सयं,

बिअंसि बिअ तिअ कसायंतो ॥२९॥ तइआइसु चउदस ते,र बार छ पण च
उ तिहिअ सय कमसो ॥ नपु इत्थि हासछग पुस, तुरिअ कोहो मय माय ख
ओ ॥३०॥ सुहुमि दुसय लोहंतो, खीण दु चरिमेगसय दु निद्द खओ ॥ नवनव
इ चरिम समए, चउ दंसण नाण विग्घंतो ॥३१॥ पणसीइसजोगि अजो, गि
दु चरिमे देव खगइ गंध दुगं ॥ फासठ वन्न रस तणु, बंधण संघाय पण निमि
णं ॥३२॥ संघयण अथिर संठा,ण छक्क अगुरुलहु चउ अपजत्तं ॥ सायं च
असायं वा, परित्तुवंगातिग सुसर निअं ॥३३॥ बिसयरि खओ अचरिमे, तेरस
मणुअ तस तिग जसाइज्जं ॥ सुभग जिणुच्च पणिंदिअ, सायासा एगयर छेओ
॥३४॥ नर अणुपुव्वि विणा वा,बारस चरिम समयंमि जो खविउ ॥ पत्तो सिद्धिं
देविं,द वंदियं नमह तं वीरं ॥३५॥ सत्ता सम्मत्ता॥४॥इति कर्मस्तवाख्यो द्विती
यः कर्मग्रंथः संपूर्णः ॥ बंधविहाणविमुक्कं, वंदिअ सिरिवद्धमाण जिणचंदं॥ गइ

आईसु वुछं, समासओ बंधसामित्तं ॥१॥ गइइंदीए काए, जोए वेए कसाय नाणे
य ॥ संजमदंसणलेसा, भवसम्मे सन्निआहारे ॥२॥ जिण सुर विउवाहारग,
देवाउअनिरय सुहुम विगल तिगं ॥ एगिंदि थावरा यव, नपुमिछं हुंमछेवठं॥३॥
अण मझागिइ संघय, ण कुखगइ निअ इत्थि दुहग थीण तिगं ॥ उज्जोअ तिरि
दुगं तिरि, नराउ नर उरल दुग रिसहं ॥४॥ सुर इगुण वीस वज्जं, इगसउ ओ
हेण बंधहिं निरया ॥ तिछविणा मिछि सयं, सासणि नपु चउविणा छनुइ॥५॥
विणु अण छवीस मीसे, बिसयरि सिम्मंमि जिण नराउ जुआ ॥ इअ रयणाइ
सु भंगो, पंकाइसु तिछयरहीणो ॥६॥ अजिण मणु आउ ओहे, सत्तमिए नर
दुगुच्च विणु मिछे॥इग नवई सासाणे, तिरिआउ नपुंस चउवज्जं ॥ ७ ॥ अण
चउवीस विरहिया, सनर दुगुच्चाय सयरि मीस दुगे ॥ सतरसउ ओहि मिछे,
पज तिरिआ विणु जिणाहारं ॥८॥ विणु निरय सोल सासणि, सुराउ अण ए

गतीस विणु मीसे ॥ ससुराउ सयरि सम्मे, बीअ कसाए विणा देसे ॥९॥ इ
अ चउगुणेसु वि नरा, परमजया सजिण ओहु देसाइ ॥ जिण इक्कारस हीणं,
नव सय अपजत्त तिरिअ नरा ॥१०॥ निरयव्व सुरा नवरं, ओहे मिच्छे इगिंदि
तिग सहिआ ॥ कप्प दुगे विअ एवं, जिणहीणो जोइ भवण वणे॥११॥रय
णुव सणं कुमारा,इ आणयाइ उजोअ चउरहिआ ॥ अपज्ज तिरिअव नव स
य, मिगिंदि पुढवि जल तरु विगले॥१२॥छनवइ सासणि विणु सुहु,म तेर के
इ पुण बिंति चउनवइ॥ तिरिअ नरा ऊहि विणा, तणु पज्जत्तिं न जंति जउ ॥
॥१३॥ ओहु पणिंदि तसेगइ, तसे जिणिक्कार नर तिगुच्च विणा ॥ मणवय जोगे
ओहो, उरले नरभंगु तम्मिस्से॥१४॥आहार छग विणोहे, चउदससउ मिच्छि
जिण पणगहीणं ॥ सासणि चउ नवइ विणा, तिरिअ नराउ सुहुम तेर॥१५॥
अण चउवीसाइ विणा, जिणपण जुअ सम्मि जोगिणो सायं ॥ विणु तिरि न

राउ कम्मे, वि एवमाहारदुगि उहो ॥ १६ ॥ सुरउहो वेउव्वे, तिरिअ नराउ र हिउअ तम्मिस्से ॥ वेअ तिगा इम बिअ तिअ, कसाय नव दु चउ पंच गुणा ॥ १७ ॥ संजलण तिगे नव दस, लोभे चउ अजइ दु ति अनाण तिगे ॥ बार स अचक्खु चक्खुसु, पढमा अहखाइ चरिम चऊ ॥१८॥ मणनाणी सग जया इ, समइअ छेअ चउ दुन्नि परिहारो॥केवल दुगि दो चरिमा, अजयाइ नवमइ सु उहि दुगे ॥१९॥ अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिछ तिगि देसे ॥ सुहुमि सठाणं तेरस, आहारग निअ निअ गुणोहो ॥२०॥ परमुवसमि वट्टं ता, आउ न बंधंति तेण अजयगुणे ॥ देवमणुआउ हीणो, देसाइसु पुण सुरा उविणा ॥२१॥ उहे अठारसयं, आहार दुगूणमाइ लेसतिगे ॥ तं तिछोणं मि छे, साणाइसु सव्वहिं उहो ॥२२॥ तेऊ निरय नवूणा, उज्जोअ चउ निरय बार विणु सुक्का ॥ विणु निरय बार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिछे ॥२३॥ सव्व गुण

भवसन्निसु, अहु अभवा असन्नि मिछिसमा ॥ सासणि असन्नि सन्निव, कम्म णभंगो अणाहारे ॥२४॥ तिसु दुसु सुक्काइ गुणा, चउ सग तेरत्ति बंधसामित्तं ॥ देविंदसूरि रइअं, नेयं कम्मछयं सोउं ॥२५॥ इति बंधस्वामित्वाख्यस्तृतीयः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥३॥ ॥ ॥ ॥ ॥छ॥

नमिअ जिणं जिअमग्गण, गुणठाणुवओग जोग लेसाओ ॥ बंध प्पबहू भावे,संखिज्जाई किमवि वुछं ॥१॥ नमिअ जिणं वत्तवा, चउदस जिअठाणएसु गुणठाणा ॥ जोगुवओगो लेसा, बंधोदउ दीरणा सत्ता ॥२॥ (पाठांतरं)चउदसजियठाणेसु, चउदसगुणठाणगाणिजो गाय ॥ उवओगलेसबंधो, दउदीरणासंत अठपए॥२॥तह मूल चउद मग्गण,ठाणेसु बासठि उत्तरेसु यवि ॥ जिय गुण जोगुवओगा,लेस प्पबहुं च छठाणा॥३॥पाठांतरं ॥ चउदस मग्गणठाणे,सुमूलपएसु बिसठि इयरेसु ॥ जियगुणजोगुवओगा, लेसप्पबहुत्तछठाणा ॥ ३ ॥ चउदस गुणेसु

जिअ जो,गु वउंग लेसाय बंधहेऊ यं ॥ बंधाइअ चउ अप्पा, बहुं च तो नाव संखाई ॥४॥ (पाठांतरं) चउदसगुणठाणेसु, जियजोगुवउंग लेसबंधाय ॥ बंधुद दीरणाउं, संतप्पबहुत्तदसठाणा ॥ ४ ॥ दार गाहाउं ॥ अथ जीवस्थानानि उच्यन्ते ॥ इह सुहुम बायरेगिं, दि बि ति चउ असन्नि सन्नि पंचिंदी ॥ अपजत्ता पजत्ता, कमेण चउदस जिअठाणा ॥ ५ ॥ बायर असन्नि विगले, अपज्जि पढम बिअसन्नि अपजत्ते ॥ अजय जुअ सन्निपजे, सव्वगुणा मिछ सेसेसु ॥ ६ ॥ अपजत्त छक्कि कम्मु र, ल मीस जोगा अपज सन्नीसु ॥ ते सवि उवमीस एसु, तणु पजेसु उरलमन्ने ॥ ७ ॥ सव्वे सन्नि पजत्ते, उरलं सुहुमे सभासु तं चउसु ॥ बायरि सविउव्वि डुगं, पज सन्निसु बार उवउंगा ॥ ८ ॥ पज चउरिंदि असन्निसु, डु दंसडुअनाण दससु चक्खु विणा ॥ सन्निअपजे पण ना,ण चक्खु केवल डुग विहूणा ॥ ए ॥ सन्नि

इगि ठ लेस अप,ज्ज बायरे पढम चउ तिसेसेसु ॥ अथ बंधादीनि चत्वारि द्वाराणि प्रारभ्यन्ते ॥ सत्तठ बंधुदीरण, संतु दया अठ तेरससु ॥ १० ॥ सत्तठ ठेग बंधा, संतु दया सत्त अठ चत्तारि ॥ सत्तठ ठ पंच डुगं, उदीरणा सन्निपजत्ते ॥ ११ ॥ गइ इंदिए अ काए, जोए वेए कसाय नाणे सु ॥ संजम दंसण लेसा, नव सम्मे सन्नि आहारे ॥ १२ ॥ सुर नर तिरि निर य गइ, इग बिअ तिअ चउ पणिंदि ठक्काया ॥ भूजल जलणाडनिल वण, त सा य मण वयण तणू जोगा ॥१३॥ वेअ नरि छि नपुंसग, कसाय कोह मय माय लोभित्ति ॥ मइ सुअवहि मण केवल, विभंग मइ सुअ नाण सागारा ॥१४॥ सामाइअ ठेअ परिहा,र सुहुम अहखाय देस जय अजया ॥ चक्कु अ चक्कू उंही, केवल दंसण अणागारा ॥ १५ ॥ किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्क भविअरा ॥ वेअग खइगुवसम मि,छ मीस सासाण सन्निअरे ॥ १६ ॥

आहारे अर नेआ, सुर निरय विभंग मइसु उंहि दुगे ॥ सम्मत्त तिगे पम्हा,
सुक्का सन्नीसु सन्निदुगं ॥ १७ ॥ तमसन्नि अपजजुअं, नरे सबायर अपज ते
ऊए ॥ थावर इगिंदि पढमा, चउ बार असन्नि दुदु विगले ॥१८॥ दस चरिम
तसे अजया, हारग तिरि तणु कसाय दु अनाणे ॥ पढमति लेसा नविअर,
अचक्खु नपु मिछि सव्वेवि ॥१९॥ पज सन्नि केवल दुग, संजम मणनाण देस
मण मीसे ॥ पण चरिम पज वयणे, तिय छवि पजिअर चक्खुंमि ॥२०॥ थी न
र पणिंदि चरमा, चउ अणहारे दुसन्नि छ अपजा ॥ ते सुहुम अपज विणा,
सासणि इत्तो गुणे वुच्छं ॥२१॥ पण तिरि चउ सुर निरए, नर सन्नि पणिंदि भ
व तसि सव्वे ॥ इग विगल भूदगवणे, दु दु एगं गइ तस अभव्वे ॥ २२ ॥ वेअ
ति कसाय नव दस, लोभे चउ अजइ दु ति अनाण तिगे ॥ बारस अचक्खु
चक्खुसु, पढमा अहखाइ चरिम चउ ॥२३॥ मणनाणि सग जयाई, समइअ

छेअ चउ दुन्नि परिहारे ॥ केवल दुगि दो चरिमा, जयाइ नव मइसु ओहि दुगे ॥२४॥ अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कार मिच्छ तिगि देसे ॥ सुहुमे स्स ठाण तेर,स जोग आहार सुक्काए ॥ २५ ॥ असन्निसु पढम दुगं, पढम तिलेसासु छच्च दुसु सत्त ॥ पढमं तिम दुग अजया, अणाहारे मग्गणासु गुणा ॥ ॥ २६ ॥ सच्चे अर मीस अस,च्च मोस मणवय विउव्वि आहारा ॥ उरलं मीसा कम्मण, इअ जोगा कम्म अणाहारे ॥२७॥ नर गइ पणिंदि तस तणु, अचक्खु नर नपु कसाय सम्मदुगे ॥ सन्नि छलेसा हारग, भव मइ सुअ ओहि दुगि स व्वे ॥२८॥ तिरि इत्थि अजय सासण, अनाण उवसम अभव्व मिच्छेसु ॥तेराहार दुगूणा, ते उरलदुगूण सुर निरए ॥२९॥ कम्मुरलदुगं थावरि,ते सविउव्वि दुग पंच इग पवणे ॥ छ असन्नि चरिम वइजुअ,तेविउव्वि दु गूण चउविगले॥३०॥ कम्मुरलमीस विणु मण, वय समइअ छेअ चक्खु मणनाणे ॥ उरल दुग कम्म

पढमं,तिम मण वय केवल दुगंमि ॥३१॥ मणवय उरला परिहा,र सुहुमि नव तेउ मीसि सविउव्वा ॥ देसे सविउव्वि दुगा, सकम्मुरल मीस अहखाए ॥ ३२ ॥ ति अनाण नाण पण चउ, दंसण बार जिअलक्खणु वओगा ॥ विणु मण नाण दु केवल, नव सुर तिरि निरय अजएसु ॥३३॥ तस जोअ वेअ सुक्का, हार न र पणिंदि सन्नि भवि सव्वे ॥ नयणे अरपण लेसा, कसाय दस केवल दुगूणा ॥३४॥ चउरिंदि असनि दु अना,ण दुदंस इग बि ति थावरि अचक्खु ॥ ति अनाण दंसण दुगं, अनाण तिगि अभवि मिछ दुगे ॥३५॥ केवलदुगं निअ दुगं, नव ति अनाणविणु खइअ अहखाए ॥ दंसण नाण तिगं दे,सि मीसि अन्नाण मीसंतं ॥३६॥ मण नाण चक्खु वज्जा, अणहारे तिन्नि दंस चउ नाणा ॥ चउ नाण संजमो वस,म वेअगे ओहि दंसेअ ॥ ३७ ॥ दो तेर तेर बारस, म णेकमा अठ दु चउ चउ वयणे ॥ चउ दु पण तिन्नि काए, जिअ गुण जोगोव

उगन्ने ॥३८॥ छसु लेसासु सठाणं, एगिंदि असन्नि भूदगवणेसु ॥ पढमा चउ रो तिन्निउ, नारय विगलग्गि पवणेसु ॥३९॥ अहखाय सुहुम केवल, दुगि सुक्का छवि सेस ठाणेसु ॥ नर निरय देव तिरिआ, थोवा दु असंखणंतगुणा॥ ॥४०॥ पण चउ ति दु एगिंदी, थोवा तिन्नि अहिआ अणंत गुणा ॥ तस थोव असंखग्गी, भू जल निल अहिअ अणंता ॥४१॥ पण वयण काय जोगी, थोवा असंख गुणा अणंतगुणा ॥ पुरिसा थोवा इत्थी, संखगुणाणंतगुण कीवा ॥४२॥ माणी कोही माई, लोभी अहिअ मणनाणिणो थोवा ॥ उहि असंखा मइ सुअ,अहिय सम असंख विब्भंगा ॥४३॥ केवलिणोणंतगुणा, मइ सुअ अन्नाणिणंतगुण तुल्ला॥सुहुमा थोवा परिहा,र संख अहखाय संखगुणा॥४४॥ छेआ समइअ संखा,देस असंखगुणाणंत गुण अजया ॥ थोव असंख दुणंता, उहि नयण केवल अचक्खू ॥४५॥पच्छाणु पुव्वि लेसा, थोवा दोसंखणंत दो अ

हिआ॥अजवि अर थोवमणंता, सासण थोवो वसमसंखा ॥ ४६ ॥ मीसा सं
खा वेअग, असंख गुण खइअ मिछ उ अणंता ॥ सन्नि अर थोवणंता,अण
हार थोवेअर असंखा ॥४७॥ सव जिअगण मिछे, सग सासणि पण अपज
सन्नि डुगं ॥ सम्मे सन्नी डुविहो, सेसेसु सन्नि पजत्तो ॥४८॥मिछ डुगिअ जइ
जोगा, हार डुगूणा अपुव पण गेउ ॥ मणवय उरल सविउवि, मीसी सविउ
वि डुग देसे॥४ए॥ साहारदुग पमत्ते, ते विउवाहार मीस विणु इअरे ॥ कम्मुरल
दुगंता इम, मण वयण सजोगि न अजोगि ॥५०॥ ति अनाण दुदंसा इम,
दुगे अजय देसि नाण दंस तिगं ॥ ते मीसि मीस समणा,जयाइ केवल दु अं
त दुगे ॥५१॥ सासण जावे नाणं, विउव गाहारगे उरल मिस्सं ॥ नेगिंदिसु
सासाणो, नेहाहि गयं सुअ मयंपि॥५२॥ छसु सवा तेउ तिगं, इगि छसु सुक्का
अजोगि अल्लेसा ॥ बंधस्स मिछ अविरइ,कसाय जोगत्ति चउ हेऊ॥५३॥ अ

निगहिअ मणनिगहिआ, निनिवेसिअ संसइअ मणा नोगा ॥ पण मिछ बार अविरइ, मण करणानिअमु छ जिअवहो ॥ ५४ ॥ नव सोल कसाया पन, रि जोग इअ उत्तरा उसगवन्ना॥इग चउ पण ति गुणेसु, चउ ति दु इग पच्च उं बंधो॥५५॥चउ मिछ मिछ अविरइ, पच्चइआ साय सोल पणतीसा ॥ जोग विणु ति पच्चइआ,हारग जिण वज्जसेसाउं ॥५६॥पणपन्न पन्न तिअ छहि, अचत्त गुणचत्त छ चउ दुगवीसा ॥ सोलस दस नव नव स,त्त हेउ णो नउ अजोगम्मि ॥५७॥ पणपन्न मिछि हारग, दुगूण सासाणि पन्न मिछविणा ॥ मीस दुग कम्म अण विणु, तिचत्त मीसे अह छ चत्ता ॥ ५८॥ सदुमीस कम्म अजए, अविरइ कम्मुरलमीस बिकसाए ॥ मुत्तु गुण चत्त देसे, छवीस साहार दु पमत्ते ॥५९॥ अविरइ इगार तिकसा,य वज्ज अपमत्ति मीस दुग रहिआ ॥ चउवीस अपुव्वे पुण,दुवीस अविउव्वि आहारा ॥ ६० ॥ अ छहास सोल बायरि,

सुहुमे दस वेअ संजलण ति विणा ॥ खीणु वसंति अलोभा, सजोगि पुव्वुत्त सग जोगा ॥६१॥ अपमत्तंता सत्त, ठ म्मीस अपुव्व बायरा सत्त ॥ बंधइ छस्सु हमो ए, ग मुवरिमाबंधगा जोगी ॥ ६२ ॥ आसुहुमं संतुदए, अठवि मोह वि णु सत्त खीणंति ॥ चउ चरिम दुगे अठउ, संते उवसंति संतुदए ॥ ६३ ॥ उइरं ति पमत्तंता, सगठ मीसठ वेअ आउ विणा ॥ छग अपमत्ताइ तउ, छ पंच सु हुमो पणु वसंतो ॥६४॥ पण दो खीण दु जोगी, णुदीरगु अजोगि थोव उव संता ॥ संख गुण खीण सुहुमा, निअट्टि अपुव्व सम अहिआ ॥६५॥ जोगि अ पमत्त इयरे,संख गुणादेस सासणा मीसा ॥ अविरइ अजोगि मिच्छा,असंख चउरोदुवेणंता ॥ ६६ ॥ उवसम खय मीसोदय, परिणामा दु नव छारइगवीसा ॥ तिअ भेअसन्नि वाइअ, सम्मं चरणं पढम भावे ॥६७॥ बीए केवल जुअलं, सम्मं दाणाइ लद्धि पण चरणं ॥ तइए सेसुव उगा, पण लद्धी सम्म विरइ दु

गं ॥ ६८ ॥ अन्नाण मसिद्धत्ता, संजम लेसा कसाय गइ वेआ ॥ मिच्छे तुरिए भव्वा, अभव्वत्त जिअत्त परिणामे ॥ ६९ ॥ चउ चउ गईसु मीसग, परिणामुदएहि चउसु खइएहिं ॥ उवसम जुएहि वा चउ, केवलि परिणामुदय खइए ॥ ७० ॥ खय परिणामे सिद्धा, नराण पण जोगु वसम सेढीए ॥ इअ पनर संनिवाइअ, भेआ वीसं असंभविणो ॥७१॥ मोहो वसमो मीसो, चउघाइसु अठ कम्मसु असेसा ॥ धम्माइ पारिणामिअ, भावे खंधा उदइ एवि ॥ ७२ ॥ सम्माइ चउसु तिग चउ, भावा चउ पणु वसामगुवसंते ॥ चउखीण पुव्वे ति, न्निसेस गुण ठाणगे गजिए ॥७३॥ संखिज्जेग मसंखं, परित्तजुत्त निअ पय जुअं तिविहं ॥ एव मणंतंपि तिहा, जहन्न मज्झुक्कसा सव्वे ॥ ७४ ॥ लहु संखिज्जं डुच्चिअ, अउ परं मज्झिमंतु जागुरुअं ॥ जंबूदीवपमाणय, चउपल्ल परूवणाइ इमं ॥७५॥ पल्लाणवट्ठिअ सिला, ग पडिसिलागा महासिलागक्का ॥ जोअण सहसो गाढा,

सवेइ अंता ससिह नरिआ ॥७६॥ तो दीवुदहिसु इक्कि, क सरिसवं खीवि अ निहिए पढमे ॥ पढमं व तदंतं चिअ,पुण नरिए तंमि तह खीणे ॥७७॥ खिप्प इ सिलाग पल्ले,गु सरिसवोइय सिलाग खिवणेणं ॥ पुन्नो बीउ अ तउ, पुव्वंपि व तंमि उद्धरिए ॥७८॥ खीणे सिलागि तइए, एवं पढमेहि बीअयं नरसु ॥ ते हिअ तइअं तेहिअ, तुरिअंजा किरपुन्ना चउरो ॥ ७९ ॥ पढमति पल्लुद्धरिआ, दीवुदही पल्ल चउ सरिस वाय ॥ सव्वो वि एस रासी,रूवूणो परमसंखिज्जं ॥८०॥ रूव जुअंतु परित्ता, ऽसंखं लहु अस्सरासि अब्भासे ॥ जुत्ता संखिज्जं लहु, आवलिआ समय परिमाणं ॥८१॥ बि ति चउ पंचम गुणणे, कम्मासग संख पढम चउ सत्त ॥ णंता ते रूवजुआ, मझारूवूण गुरुपछा ॥ ८२ ॥ इय सुत्तुत्तं अन्ने, वग्गिअ मिक्कसि चउत्थय मसंखं ॥ होइ असंखासंखं, लहुरूवजुअं तु तं मझं ॥८३॥ रूवूण माइमं गुरु, तिवग्गिउं तत्थिमे दसखेवे ॥ लोगागासपए

सा, धम्माधम्मेगजिअ देसा ॥८४॥ ठिइ बंधज्झवसाया, अणुभागा जोग छेअ
पलिभागा ॥ दुण्हय समाण समया, पत्तेअ निगोअए खिवसु ॥ ८५ ॥ पुण तं
मि ति वग्गिअए, परित्तणंत लहु तस्स रासीणं ॥ अब्भासे लहु जुत्ता, अंतं
अभव्व जिअमाणं ॥८६॥ तव्वग्गे पुण जायइ, णंता णंत लहु तंच तिक्खुत्तो ॥
वग्गसु तह विनतं हो,इ णंत खेवे खिवसु छ इमे ॥८७॥ सिद्धा निगोअ जीवा,
वणस्सई काल पुग्गला चेव ॥ सव्व मलोग नहं पुण, तिवग्गिउं केवल दुगंमि
॥८८॥ खित्ते णंताणंतं, हवेइ जिठं तु ववहरइ मझं ॥इय सुहमछ विआरो, लि
हिउं देविंदसूरीहिं ॥ ८९ ॥ इति षडशीतिकाख्यश्चतुर्थः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥
॥ ४ ॥ अथ शतकनामा पंचमः कर्मग्रंथः प्रारभ्यते ॥ नमिअ जिणं
धुव बंधो, दय सत्ता धाइ पुण्ण परिअत्ता ॥ सेअर चउह विवागा, वुछं
बंधविह सामी अ ॥ १ ॥ वण्ण चउ तेअ कम्मा, गुरु लहु निमिणो वघाय

नय कुडा ॥ मिछ कसाया वरणा, विग्घं धुवबंधि सगचत्ता॥२॥तणु वंगा गिइ संघयण जाइ गइ खगइ पुब्वि जिणु सासं ॥ उज्जो आयव परघा, तसवीसा गोअ वेयणियं ॥३॥ हासाइ जुअल दुग वे,अ आउ तेउत्तरी अधुव बंधो ॥ नंगा अणाइ साई, अणंतं संतुत्तरा चउरो ॥४॥ पढम विआ धुव उदइसु, धुवबंधिसु तइअ वज्ज नंगतिगं ॥ मिछंमि तिन्नि नंगा, दुहावि अधुवा तुरिअ नंगा ॥५॥ निमिण थिर अथिर अगुरुअ, सुह असुहं तेअ कम्म चउवन्ना ॥ नाणंतराय दंसण, मिछं धुव उदय सगवीसा ॥६॥ थिर सुन्न अर विणु अध्रुव, बंधी मिछ विणु मोह धुवबंधी ॥ निद्दोव घाय मीसं, सम्मं पण नवइ अधुवुदया ॥७॥ तस वस वीस सगते,अ कम्म धुव बंधि सेस वेय तिगं ॥ आगिइ तिग वेअणिअं, दु जुअल सग उरल सास चऊ ॥८॥ खगई तिरि दुग नीअं, धुव सत्ता सम्ममी स मणुअ दुगं ॥ विउव्विकार जिणाउं, हारस गुच्चा अधुवस

त्ता ॥९॥ पढम तिगुणेसु मिछं, निअमा अजयाइ अठ गे नजं ॥ सासाणे ख लु सम्मं, सत्तं मिछाइ दसगेवा ॥१०॥ सासण मीसेसु धुवं, मीसं मिछाइ नव सु नयणाए ॥ आइ छुग अण नियमा, नइआ मीसाइ नवगम्मि ॥११॥ आ हार सत्तगं वा, सब्ब गुणे बि ति गुणे विणा तिछं ॥ नो नय संते मिछो, अंत मुहुत्तं नवे तिछे ॥१२॥ केवल जुअला वरणा, पण निद्दा बारसाइम कसाया ॥ मिछंति सब्ब घाई, चउ नाण ति दंसणा वरणा ॥१३॥ संजलण नो कसाया, विग्घं इअ देस धाइअ अघाइ ॥ पतेअ तणु ठाऊ, तस वीसा गोअ छुग व सा ॥१४॥ सुर नर तिगुच्च सायं, तस दस तणु वंग वइर चउरंसं ॥ परघासग तिरिआऊ, वस चउ पणिंदि सुनखगइ ॥१५॥ बायाल पुस पगइ, अपढम संठाण खगइ संघयणा ॥ तिरि छुग असाय नीजं, वघाय इग विगल निरय तिगं ॥१६॥ थावर दस वन्न चउ, क्क घाय पणयाल सहिअ बासीई ॥ पाव पय

डित्ति दोसु वि, वन्नाइगहा सुहा असुहा ॥१७॥ नाम धुव बंधि नवगं, दंसण पण नाण विग्घपरघायं ॥ भय कुछ मिछ सासं, जिण गुण तीसा अपरियत्ता ॥१८॥ तणु अठ वेअ छु जुअल, कसाय उज्जोअ गोय छुग निद्दा ॥ तस वीसा उ परित्ता, खित्तविवागाणुपुव्वीउ ॥ १९ ॥ घणघाइ छु गोअ जिणा, तसिअर तिगसुनग छुनग चउ सासं ॥ जाइ तिग जिअ विवागा, आऊ चउरो नव वि वागा ॥ २० ॥ नाम धुवोदय चउ तणु, वघाय साहारणियजोअतिगं ॥ पुग्गल विवागि बंधो, पयइ ठिइ रस पएसत्ति ॥ २१ ॥ मूल पयडीण अड स, त्त छेग बंधेसु तिन्नि नूगारा ॥ अप्पतरा तिअ चउरो, अवठिआ नहु अवत्त व्वो ॥२२॥ एगादहिगे नूउ, एगाई ऊणगम्मि अप्पतरो ॥ तम्मत्तो अवठिय उ, पढमे समए अवत्तव्वो ॥ २३ ॥ नव छ चऊदंसे छुछु, ति छु मोहे छु इगवीस सत्तरस ॥ तेरस नव पण चउ ति छु, इक्को नव अठ दस छुन्नि ॥२४॥ ति पण

ठ अठ नवहिया, वीसा तीसेगतीस इग नामे ॥ छस्सग अठ तिबंधो, सेसे
सु ठाणमिक्किक्कं ॥२५॥ वीसयर कोमि कोडी, नामे गोए य सत्तरी मोहे ॥ ती
सयर चउसु उदही, निरय सुराउंमि तित्तीसा ॥२६॥ मुत्तूञ कसाय ठिइ, बार
मुहुत्ता जहन्न वेयणिए ॥ अठ ठ नाम गोए, सु सेसएसु मुहुत्तं तो ॥२७॥ वि
ग्घा वरण असाए, तीसं अठार सुहुम विगल तिगे ॥ पढमा गिइ संघयणे, द
स इसु चरिमेसु इग वुढ्ढी ॥२८॥ चालीस कसाएसु, मिउ लहु निध्दुण्ह सुरहि
सिय महुरे ॥ दसदो सढ्ढ समहिया, ते हालिदं बिलाईणं ॥२९॥ दस सुह विह
गइ उच्चे, सुरदुग थिर छक्क पुरिस रइ हासे ॥ मिछे सत्तरि मणु दुग, इत्थी सा
एसु पन्नरस ॥३०॥ भय कुछ अरइ सोए, विउव्वि तिरि उरल निरय दुग नीए॥
तेअ पण अथिर छक्के, तस चउ थावर इग पणिंदि ॥ ३१ ॥ नपु कुखगइ सा
सचउ, गुरु कक्खडरुक्ख सीय दुग्गंधे॥वीसं कोडा कोडी, एवइआ बाह वाससया

॥३२॥ गुरु कोडि कोडि अंतो, तित्थाहाराण भिन्न मुहु बाहा ॥ लहु ठिइ सं
ख गुणूणा, नर तिरियाणाउ पल्ल तिगं ॥३३॥ इग विगल पुव्व कोडी, पलिया
संखंस आउ चउ अमणा ॥ निरुवक्कमाण छमासो, अबाह सेसाण भवंतंसो ॥
॥३४॥ लहु ठिइ बंधो संजल,ण लोह पण विग्घ नाण दंसेसु ॥ भिन्न मुहुत्तं
ते अ,ठ जसुच्चे बारसय साए ॥ ३५ ॥ दो इग मासो पक्खो, संजलण तिगे पुम
ठ वरिसाणि ॥ सेसाणुक्कोसाउ, मिच्छत्तठिइ ए जलद्धं ॥३६॥ अय मुक्कोसो गिं
दिसु, पलियाऽसंखं सहीण लहु बंधो ॥ कमसो पणवीसाए, पन्नासय सहस
संगुणिउ ॥३७॥ विगल असन्निसु जिठो, कणिठउ पल्लसंख भागूणो ॥सुर नि
रयाउ समादस, सहस्स सेसाउ खुड्ड भवं ॥३८॥ सव्वाणवि लहु बंधे, भिन्न मु
हु अ बाह आउ जिठेवि ॥ केइ सुराउ समजिण, मंत मुहु बिंति आहारं ॥
॥३९॥ सत्तरस समहिआ किर,इ गाणु पाणंमि हुंति खुड्डभवा ॥ सगतीस स

य तिहुत्तर, पाणू पुण इग्ग मुहुत्तंमि ॥४०॥ पणसट्ठि सहस पण सय, छत्तीसा इग मुहुत्त खुड्डभवा ॥ आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एग खुड्डभवे ॥४१॥ अ विरय सम्मो तित्थं, आहार दुगा मराउ अपमत्तो ॥ मिच्छादिट्ठी बंधइ, जिट्ठ ठिइ सेस पयडीणं ॥४२॥ विगल सुहुमाउग तिगं, तिरि मणुयाऽसुर विउव्वि निरय दुगं ॥ एगिंदि थावरा यव, आईसाणा सुरुक्कोसं ॥४३॥ तिरिउरल दुगु जोअं, छिवठ सुरनिरय सेसचउ गइआ ॥ आहार जिण मपुव्वो, नियट्टि संजलण पुरिस लहू ॥४४॥ सायजसु च्चावरणा, विग्घं सुहुमो विउव्वि छ असन्नि ॥ सन्नीविआ उ बायर, पज्जेगिंदीउ सेसाणं ॥४५॥ उक्कोस जहन्नीयर, भंगासाई अणाइ धुव अधुवा ॥ चउहा सग अजहन्ना, सेसतिगे आउ चउसु दुहा ॥४६॥ चउभेउ अजहन्नो, संजलणा वरण नवग विग्घाणं ॥ सेस तिगिसाइ अधुवो, तह चउहा सेस पयडीणं ॥४७॥ साणाइ अपुव्वंतो, अयरंतो कोडि

कोम्हिउ नहिगो ॥ बंधो नहु हीणो नय, मिहे नव्वियरसन्निंमि ॥४८॥ जइ लहु बंधो बायर, पज असंख गुण सुहुम पजाहिगो ॥ एसि अपजाण लहू, सुहुमे अर अपज पज गुरु॥४९॥लहु बिअ पज अपजो,अपजि अर बिअ गुरु अहिगो एवं ॥ ति चउ असन्निसु नवरं,संख गुणा बिअ अमण पजे ॥५०॥ तो जइ जिहो बंधो, संख गुणो देस विरय हस्सिअरो ॥ सम्म चउ सन्नि चउरो, ठिइ बंधाणु कम संखगुणा ॥ ५१ ॥ सब्वाणवि जिठठिइ, असुहा जं साइ संकिलेसेणं ॥ इअराविं सोहिउ पुण, मुत्तं नर अमर तिरिआउ ॥५२॥सुहुम निगोआइ खण,प्पजोग बायरपविगल अमणामणा ॥ अपज लहु पढम दु गुरु, पजहस्सि अरो असंखगुणो ॥ ५३ ॥ असमत्त तमुक्कोसो, पज जहन्नअर एव ठिइ ठाणा ॥ अपजेयर संख गुणा, परमपज बिए असंख गुणा ॥ ५४ ॥ पइखिण मसंख गुणविरि, य अपज ठिइ असंख

लोग समा ॥ अज्झवसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंख गुणा ॥ ५५ ॥ अथोत्कृष्टस्थित्यंतरबंधमाह ॥ तिरि निरय तिजोयाणं, नरजवजुअ सच उपज्ज तेसठं ॥ थावर चउ इग विगला, यवेसु पणसीइ सय मयरा ॥ ५६ ॥ अपढम संघयणा गिइ, खगई अण मिछ ज्ञजग थीण तिगं ॥ निअ नपु इछि ज्ञतीसं, पणिंदि सुअबंध ठिइ परमा ॥५७॥ विजयाइसु गेविज्जे, तमाइ दहि सय ज्ञतीस तेसठं ॥ पणसीइ सयय बंधो, पल्लतिगं सुर विउव्वि ज्ञगे ॥ ५८ ॥ समया दसंख कालं, तिरि ज्ञग नीएसु आउ अंत मुहू ॥ उरलि असंख पर ट्टा, साय ठिइ पुव्व कोडूणा ॥ ५ए ॥ जलहि सयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदि तस चउगे ॥ बत्तीसं सुह विहगइ, पुम सुजग तिगुच्च चउरंसे ॥६०॥ असुदख गइ जाइ आगिइ, संघयणा हारनिरयुजो य ज्ञगं ॥ थिर सुज जस थावर द स, नपु इछी ज्ञ जुअल मसायं ॥६१॥ समयादंत मुहुत्तं, मणु ज्ञग जिण वइर

उरलुवंगेसु ॥ तित्ती सयरा परमो, अंत मुहू लहु विआउ जिणा ॥६२॥ इति स्थितिबंधः ॥ तिव्वो असुह सुहाणं, संकेत विसोहि उविवजयउ ॥ मंदरसो गिरि महिरय, जल रेहा सरिस कसाएहिं॥६३॥चउ ठाणाइ असुहो, सुहन्नहा विग्घ देस आवरणा ॥ पुम संजलणिग डुति चउ, ठाण रसा सेस डुगमाइ॥ ॥६४॥ निबुइन्हुरसो सहजो, डु ति चउ जाग कढि इक्क जागं तो ॥इग ठाणा ई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥६५॥ तिव्वमिग थावरायव, सुर मिब्ठा विगल सुहुम निरय तिगं ॥ तिरि मणुआउ तिरिनरा, तिरि डुग छेवठ सुर निरया ॥६६॥ विउवि सुराहारग डुग, सुख गइ वन्न चउ तेय जिण सायं॥स मचउ परघा तस दस, पणिंदि सासु च्च खवगाउ ॥६७॥ तमतमगा उजोयं, सम्मसुरा मणुय उरल डुग वइरं ॥ अपमत्तो अमराउ, चउ गइ मिब्ठाउ से साणं ॥६८॥ थीण तिगं अण मिब्ठं, मंद रसं संजमुम्मुहो मिब्ठो ॥ बिय तिय

कसाय अविरय,देस पमत्तो अरइ सोए॥६९॥अपमाइ हारग दुगं,दुनिद्द असु
वन्न हासरइ कुच्छा ॥ भय मुवघाय मपुव्वो, अनियट्टि पुरिस संजलणे ॥ ७० ॥
विग्घावरणे सुहुमो, मणु तिरिआ सुहुम विगल तिग आउ ॥ वेउव्वि छक्क म
मरा, निरया उजोय उरल दुगं ॥७१॥ तिरि दुग नियं तमतमा, जिण मविर
य निरय विणिग थावरयं ॥ आसुहु मायवसम्मो,वसाय थिर सुह जसा सियरा
॥७२॥ तस वन्न तेअचउ मणु, खगइ दुग पणिंदि सास परघुच्चं ॥ संघयणा गि
इ नपु थी, सुभगि अरति मिछ चउ गइआ ॥७३॥ चउ तेअ वन्न वेअणि,अ
नाम णुक्कोस सेस धुवबंधी ॥ घाईणं अजहन्नो, गोए दुविहो इमो चउहा॥७४॥
सेसंमि दुहा इग दुग, णुघाइ जा अभवणंत गुणिआणू ॥ खंधा उरलो चि अ
व,ग्गणाउ तहअगहणतिरिया ॥७५॥ एमेव विउव्वाहा, र तेअ भासाणु पाण
मण कम्मे ॥ सुहुमा कमावगाहो,ऊणूणं गुल असंखंसो ॥७६॥ इक्किक्क हिया

सिद्धा, णंतंसो अंतरेसु अग्गहणा ॥ सव्वत्थ जहन्नुचिया, नियणंतं साहिआ जिट्ठा ॥७७॥ अंतिम चउ फास दुगं,ध पंचवन्नरस कम्म खंध दलं ॥ सव्व जियणंत गुण रस, अणुजुत्त मणंतय पएसं ॥ ७८ ॥ एग पएसो गाढं, निअ सव्व पएसउ गहेइ जिउ ॥ थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिउ ॥७९॥ विग्घावरणे मोहे, सव्वोवरि वेअणीइ जेणप्पे ॥ तस्स फुडत्तं न हवइ, ठिई विसेसेण सेसाणं ॥८०॥ निअ जाइ लद्ध दलिआ, णंतंसो होई सव्व घाईणं ॥ बज्झंतीण विभज्जइ, सेसं सेसाण पइ समयं ॥ ८१ ॥ सम्मदेस सव्व विरइ, उअण विसंजोअ दंस खवगेअ ॥ मोह सम संत खवगे, खीण सजोगि अर गुण सेढी ॥८२॥ गुणसेढी दल रयणा, णुसमयमुदया दसंख गुणणाए ॥ एअगुणा पुण कमसो, असंख गुण निज्जरा जीवा ॥ ८३ ॥ पलिआ संखंसमुहू, सासण इअर गुण अंतरं हस्सं ॥ गुरु मिच्छि बे छसठी,इयरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥८४॥ उ

ऽार अ६ खित्तं, पलिय तिहा समय वाससय समए ॥ केसव हारो दीवो, द हि आउ तसाय परिमाणं ॥ ८५ ॥ दव्वे खित्ते काले, भावे चउह उह बायरो सुहुमो ॥ होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गल परट्टो ॥ ८६ ॥ उरलाइ सत्तगेणं, एग जिउ मुअइ फुसिअ सव्व अणु ॥ जित्तिअ कालिसथूलो, दव्वे सुहुमो सगन्नयरा ॥८७॥ लोग पएसो सप्पिणि, समयाअणुभाग बंध ठाणा य ॥ जह तह कम मरणेणं, पुठा खित्ताइं थूलियरा ॥८८ ॥ अप्पयर पयडिबंधी, उक्कड जोगी अ सन्नि पजत्तो ॥ कुणइ पए सुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे॥८९॥ मिछ अजय चउ आउ, बि ति गुण विणुमोहि सत्त मिछाइ ॥ छण्हं सतरस सुहुमो, अजया देसा बि ति कसाए ॥९०॥ पण अनिअट्टि सुखगई, नराउ सुर सुभग तिग विउव्वि डुगं ॥ सम चउरंस मसायं, वइरं मिछो व सम्मोवा ॥९१॥ निद्दा पयला डु जुअल, भय कुछा तिछ संमगो सुजई ॥ आहार डुगं सेसा,

उक्कोस पएस गामिछो ॥९२॥ सुमुणी दुन्नि असन्नी, नरय तिग सुराउ सुर वि
उव्वि दुगं ॥ सम्मो जिणो जहन्नं, सुहुम निगोआइ खणि सेसा ॥९३॥ दंसण
छग भय कुच्छा, बि ति तुरिअ कसाय विग्घ नाणाणं ॥ मूल छगेणुक्कोसो, चउ
ह दुहा सेसि सव्वहं ॥९४॥ सेढि असंखिज्जंसे, जोगट्ठाणाणि पयडि ठिइ भे
आ॥ठिइ बंधज्झवसाया, अणुभागट्ठाण असंख गुणा॥९५॥तत्तो कम्म पएसा,
अणंत गुणिया तउ रसच्छेया ॥ जोगा पयडि पएसं, ठिइ अणुभागं कसाया
उ ॥९६॥ चउदस रज्जू लोगो, बुद्धिकउ सत्त रज्जु माण घणो ॥ तद्दीहेग पए
सा, सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥९७॥ अण दंस नपुंसि च्छी, वेअ छक्कं च पुरिस
वेअं च ॥ दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥९८॥ अण मिच्छ मीस
सम्मं, तिआउ इग विगल थीण तिगु जोअं ॥ तिरि निरय थावर दुगं, साहा
रायव अड नपुंसि च्छी ॥९९॥ छग पुम संजलणा दो, निद्दा विग्घा वरण खए

नाणी॥देविंदसूरि लिहिअं,सयगमिणं आय सरणठा ॥ १०० ॥ इति शतकना
मा पंचमः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ५ ॥
॥ अथ श्री सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः प्रारभ्यते॥ सिद्धपएहिं महडं, बंधोद
य संत पयडि ठाणाणं ॥ वुछं सुण संखेवं, नीसंदं दिठि वायस्स ॥१॥ कइ बंधं
तो वेअइ, कइ कइ वासंत पयडि ठाणाणि ॥ मूलुत्तर पगईसु, नंग विगप्पा मु
णेअव्वा ॥२॥ अठ विह सत्त छव्वं, धएसु अठे च उदय संतंसा ॥ एग विहे ति
विगप्पा, एग विगप्पा अबंधंमि ॥३॥ सत्तठ बंध अठुद,यसंत तेरस सुजीव ठा
णेसु ॥ एगंमि पंच नंगा, दो नंगा हुंति केवलिणो ॥४॥ अठसु एग विगप्पो, छ
स्सु विगुण सन्निएसु ङ विगप्पा ॥ पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदय संत कम्माणं ॥ ५ ॥
पंच नव ङुन्नि अठा, वीसा चउरो तहेव बायाला ॥ ङुन्निय पंच य नणिया, प
यडीउ आणुपुव्वीए ॥६॥ बंधोदय संतंसा, नाणावरणं तराइए पंच ॥बंधो चरमे

वि उदय, संतंसा हुंति पंचेव॥७॥बंधस्स य संतस्स य, पगइ ठाणाइ तिन्नि तु
ल्लाइं ॥ उदयठाणाइ दुवे, चउ पणग दंसणा वरणे ॥८॥ बीयावरणे नव बं, ध
एसु चउ पंच उदय नव संता ॥ छच्चउ बंधे चेवं, चउ बंधुदये छ लंसाय ॥ ९ ॥
उवरय बंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छच्च उसंता ॥ वेयणियाउ अ गोए, वि
भज मोहं परं वुछं ॥१०॥ गोअम्मि सत्त भंगा, अठय भंगा हवंति वेयणिए
॥ पण नव नव पण भंगा, आउ चउक्केवि कमसोउ ॥ ११ ॥ बावीस इक्कवीसा,
सत्तरसं तेरसे व नव पंच ॥ चउ तिग दुगं च इक्कं,बंधठाणाणि मोहस्स ॥१२॥
एगं च दोव चउरो, एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा ॥ उहेण मोहणिज्जे, उदए ठ
णाणि नव हुंति ॥१३॥ अठय सत्तय छच्चउ, तिग दुग एगाहिआ भवे वीसा ॥
तेरस बारिक्कारस, इत्तो पंचाइ एगूणा ॥ १४ ॥ संतस्स पयडिठाणा, णि ताणि
मोहस्स हुंति पन्नरस ॥ बंधोदय संते पुण, भंग विगप्पे बहू जाण ॥१५॥छब्बा

वीसे चउ इग, वीसे सत्तरस तेरसे दो दो ॥ नव बंधगे वि दुण्णि उ, इक्किक्क अउ परं भंगा ॥१६॥ दस बावीसे नव इग, वीसे सत्ताइ उदय कम्मंसा ॥ छाइ नव सत्तरसे, तेरे पंचाइ अठेव ॥ १७॥ चत्तारि आइ नव बंध, एसु उक्कोस सत्त मुदयंसा ॥ पंच विह बंधगे पुण, उदयो दुण्हं मुणेअव्वो ॥१८॥ इत्तो चउ बंधाइ, इक्किक्कुदया हवंति सव्वे वि ॥ बंधो चरमे वि तहा, उदया भावे विवाहुज्जा ॥१९॥ इक्कग छक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क इक्कगं चेव ॥ एए चउवीस गया, बार दुगिक्कम्मि इक्कारा ॥२०॥ नव तेसीइ सएहिं, उदय विगप्पेहि मोहिआ जीवा ॥ अउणुत्तरि सीआला, पयविंद सएहि विन्नेआ ॥२१॥ नव पंचाण उसए, उदय विगप्पेहि मोहिआ जीवा ॥ अउणत्तरि एगुत्तरि, पय विंद सएहि विन्नेआ ॥२२॥ तिन्नेवय बावीसे, इगवीसे अठवीस सत्तरसे ॥ छच्चेव तेर नव बंधएसु पंचेव ठाणाणि ॥२३॥ पंचविह चउविहेसु, छ छक्क सेसेसु जाण पंचेव॥

पत्तेअं पत्तेअं, चत्तारि अ बंधु वुछेए ॥२४॥ दस नव पन्नरसाई, बंधोदय संत पयडि ठाणाणि ॥ भणिआणि मोहणिज्जे, इत्तो नामं परं वुछं ॥२५॥ तेवीस पन्नवीसा, छव्वीसा अठवीस गुणतीसा ॥ तीसेगतीस मेगं, बंध ठाणाणि नामस्स ॥२६॥ चउ पणवीसा सोलस, नव बाण उई सयाय अडयाला ॥ एयालुत्तरछया, लसयाइक्किक्कि बंध विही ॥ २७ ॥ वीसिगवीसा चउवी,स गाउ एगाहियाय इगतीसा ॥ उदय ठाणाणि भवे, नव अठय हुंति नामस्स ॥२८॥ इक्क बयालिक्कारस, तित्तीसा छस्सयाणि तित्तीसा ॥ बारस सत्तरससया, णहि गाणि बिपंच सीईहिं ॥२९॥ अउणत्ती सिक्कारस, सयाणि हिय सतर पंच सठीहिं॥ इक्किक पंच वीसा, दहुदयंतेसु उदयविही ॥३०॥ ति दुनउई गुण नउई, अडसी छलसी असीइ गुणसीई ॥ अठय छप्पन्नत्तरि, नव अठय नाम संताणि ॥ ३१॥ अठय बारस बारस, बंधोदय संत पयडि ठाणाणि ॥ उहेणाएसेणय, जह ज

हा संजवं विन्नजे ॥३२॥ नव पणगोदय संता, तेवीसे पन्नवीस ठवीसे ॥ अठ
चउरठवीसे, नव सत्ति गुण तीस तीसंमि ॥३३॥ एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय
अठ संतंमि ॥ उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि ठाणाणि ॥३४॥ तिविगप्प
पगइ ठाणेहिं जीव गुणसन्निएसु ठाणेसु ॥ नंगापउं जियव्वा, जब जहा संन
वो नवइ ॥३५॥ तेरस सुजीव संखे, वएसु नाणंतराय तिविगप्पो ॥ इक्कंमिति
उ विगप्पो, करणं पइ इब अविगप्पो॥३६॥तेरे नव चउ पणगं, नव सत्ते ग
म्मि नंगमिक्कारा ॥ वेअणिअआउ गोए, विनजमोहं परं वुबं ॥३७॥ पजत्त
ग सन्निअरे, अठ चउक्कंच वेयणिय नंगा ॥ सत्तय तिगं च गोए,पत्तेअं जीव
ठाणेसु ॥३८॥ पजत्ता पजत्तग, समणा पजत्त अमण सेसेसु ॥ अठावीसं दस
गं, नवगं पणगं च आउस्स ॥३९॥ अठसु पंचसु एगे, एग डुगं दसय मोह
बंध गए ॥ तिग चउ नव उदय गए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥४०॥ पण उ

ग पणगं पण चउ, पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ॥ पण छप्पणगं छछ, प्पणगं अठ छ दसगंति ॥४१॥ सत्तेव अपजत्ता, सामी सुहुमा य बायरा चेव ॥ विगि लिंदिआउ तिन्निउ, तहय असन्नी अ सन्नी अ ॥४२॥ नाणंतराय ति विहम, वि दससु दो हुंति दोसु ठाणेसु ॥ मिछा साणे बीए, नव चउ पण नवय संतं सा ॥४३॥ मिस्साइ नियट्टीउं, छ च्चउपण नवय संत कम्मंसा ॥ चउ बंध तिगे चउ पण, नवंसु दुसु जुअल छस्संता ॥४४॥ उवसंते चउपण नव, खीणे चउ रुदय छच्च चउसत्ता ॥ वेअणिअ आउ गोए, विभज्ज मोहं परं वुछं ॥४५॥ च उ छस्सु दुन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेअणि अ भंगा ॥ गोए पण चउ दो तिसु, एगठसु दुन्नि इक्कंमि ॥४६॥ अठछाहिगवीसा, सोलस वीसं च बारस छ दोसु ॥ दो चउसु तीसु इक्कं, मिछाइसु आउए भंगा ॥४७॥ गुणठाणगेसु अठ ग, इक्किक्कं मोह बंध ठाणं तु ॥ पंचानिअट्टि ठाणा, बंधोवरमो परं तत्तो ॥४८॥

सत्ताइ दसउ मिछे, सासायण मीसए नवुक्कोसो ॥ छाई नव उअ विरई, देसे पंचाइ अठेव ॥४९॥ विरए खउवसमिए, चउराई सत्त छच्च पुव्वंमि॥ अनियट्टि बायरे पुण, इक्कोवडुवेव उदयंसा ॥५०॥ एगं सुहुम सरागो, वेएइअ वेअगा भवे सेसा ॥ भंगाणं च पमाणं, पुव्वुद्दिठेण नायव्वं ॥५१॥ इक्कग छक्किक्कियारि, क्कारसइक्कारसेव नव तिन्नि ॥ एए चउवीस गया, बारडुगं पंच इक्कंमि ॥५२॥ बारस पणसठिसया, उदय विगप्पेहिं मोहिआ जीवा ॥ चुलसीई सत्तुत्तरि, पयविंद सएहि विन्नेआ ॥५३॥ अठग चउ चउ चउर, ठगाय चउरो अ हुंति चउवीसा ॥ मिछाइअ पुव्वंता, बारस पणगंच अनिअट्टी ॥५४॥ अठठीबत्तीसं, बत्तीसं सठि मेव बावन्ना ॥ चोआल दोसुवीसा, मिछामाईसु सामन्नं ॥५५॥ जोगोवउग लेसा, इएहिं गुणिआ हवंति कायव्वा ॥ जे जछ गुणठाणे, हवंति ते तछ गुणकारा ॥५६॥ तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग पुव्वे ॥ इक्कार

बायरंमिउ, सुहुमो चउ तिन्नि उवसंते ॥ ५७ ॥ छन्नव छक्क तिग सत, डुगं डुगं तिग डुगं तिअठ चउ ॥ डुग छ चउ डुग पण चउ,डुग चउ चऊ पणग एग चउ ॥५८॥ एगेग मठ इगेग, मठछ छउमठ केवल जिणाणं ॥ एगं चउ एगं चउ,अठ चउ डुछक्क मुदयंसा ॥५९॥ चउ पणवीसा सोलस, नव चत्तालासयाय बाणउइ ॥ बत्तीसुत्तर गया, लसया मिछस्स बंध विही ॥६०॥ अठसया चउसठी, बत्तीस सयाइ सासणे भेआ ॥ अठावीसाईसु, सवाणठाहि छन्नउइ ॥६१॥ इग चत्ति गार बत्ती, छसय इगतिसिगार नव नउइ॥ सत्तरि गंसि गुत्तिस, चउदइगार चउसठि मिछदया ॥६२॥ बत्तीस डुन्नि अठय, बासीइ सयाय पंच नव उदया ॥ बारहिआ तेवीसं, बावन्निक्कारससयाय ॥६३॥ दो छक्क ठ चउक्कं, पण नव इक्कार छक्कगं उदया ॥ नेरइआइसु सत्ता,ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥६४॥ इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अठ बंध ठाणाणं॥पण छक्किक्कारुद

या,पण पण बारसय संताणि ॥६५॥ इय कम्मपगइ ठाणा,णि सुहु बंधुदय संत कम्माणं॥गइआएहिं अठसु, चउप्पयारेण नेआणि॥६६॥गइ इंदिए अ काए, जोए वेए कसाय नाणे अ ॥ संयम दंसण लेसा,नव संमे सन्नि आहारे ॥६७॥ संतपयं परूवणाया, दव्व पमाणं च खित्त फुसणा य ॥ कालंतरं च नावो, अप्पा बहुयं च दाराइ ॥६८॥ उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताउ नविज्जइ विसेसो॥मुत्तूणय इगयालं, सेसाणं सव्व पयडीणं ॥६९॥ नाणंतराय दसगं, दंसण नव वेयणिज्ज मिछत्तं ॥ सम्मत्त लोन वेआ, उआणि नव नाम उच्चं च ॥७०॥ मणुयगइ जाइ तस बा, यरं च पज्जत्त सुनग आइज्जं ॥ जसकित्ती तिछयरं, नामस्स हवंति नव एया ॥७१॥ तिछयरा हारग विर, हिआउ अज्जेइ सव्व पयडीउ ॥ मिछत्तवे अगोसा, साणो गुणवीस सेसाउ ॥७२॥ गयाल सेस मीसो, अविरय सम्मो तियाल परिसेसा ॥ तेवन्न देस विरउ, विरउ सगवन्न सेसाउ ॥ ७३ ॥ इगु स

ठि मपमत्तो, बंधइ देवाउ अस्सइअरोवि ॥ अठावन्न मपुव्वो, उप्पन्नं वावि उ वीसं ॥७४॥ बावीसा एगूणं, बंधइ अठारसंत अनिअठी ॥ सत्तर सुहुम स रागो, सायममोहो सजोगित्ती ॥७५॥ एसोउ बंध सामि, त्त उहु गइ आइए सुवि तहेव ॥ उहा उसा हिज्जइ, जउ जहा पयम्मि सब्भावो ॥७६॥ तिछयर देव निरिआ, उअंच तिसु तिसु गईसु बोधव्वं ॥ अवसेसा पयडीउ, हवंति सव्वासु विगईसु ॥७७॥ पढम कसाय चउक्कं, दंसण तिग सत्तगा वि उवसंता ॥ अवि रय सम्मत्ताउ, जाव नियठित्ति नायव्वा ॥७८॥ सत्तठ नवय पनरस, सोलस अठारसे व इगुवीसा ॥ एगाहि दु चउवीसा, पणवीसा बायरे जाण ॥ ७९ ॥ सत्तावीसं सुहुमे, अठावीसं च मोहपयडीउ ॥ उवसंत वीअरागे, उवसंता हुं ति नायव्वा ॥८०॥ पढम कसाय चउक्कं, इत्तो मिछत्त मीस सम्मत्तं ॥ अविरय सम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीयंति ॥८१॥ अनिअट्टि बायरेथी,ण गिध्दि ति

ग निरय तिरिअ नामाउ ॥ संखिज्ज इमे सेसे, तप्पाउ गाउ खीयंति ॥८२॥ इ
त्तो हणइ कसाय, ठगंपि पछा नपुंसगं इछी ॥ तो नोकसाय छक्कं, बुभइ संज
लणकोहम्मि ॥८३॥ पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए ॥ मायं
च बुहइ लोहे, लोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥८४॥ खीण कसाय ड चरिमे, निदं प
यलं च हिणइ छउमछो ॥ आवरणमंतराए, छउमछो चरम समयंमि ॥८५॥
देवगइ सहगयाउ, ड चरिम समयम्मि नविअ खीअंति ॥ सविवागे अर ना
मा, नीआ गोअंपि तछेव ॥८६॥ अन्नयर वेअणिज्जं, मणुआउअ मुच्चगोअ
नवनामे ॥ वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोस जहन्न मिक्कारे ॥८७॥ मणुअ गइ जा
इ तस बा,यरं च पजत्त सुन्नग आइज्जं ॥ जस कित्ती तिछयरं, नामस्स हवंति
नव एआ ॥८८॥ तच्चाणुपुव्वि सहिया, तेरस नव सिद्धिअस्स चरमंमि ॥ सं
तं सग मुक्कोसं, जहन्नयं बारस हवंति ॥८९॥ मणुअ गइ सहगयाउ, नव खि

त्त विवाग जिअ विवागाउ ॥ वेअणिअ अन्न रुखं, चरम समयंमि खीयंति ॥९०॥ अह सुइअ सयल जग सिह, र मरुअ निरुवम सहाव सिद्धि सुहं॥ अनियण मवाबाहं, तिरयणसारं अणुहवंति ॥९१॥ दुरहिगम निउण परम, ठ रुइर बहु भंग दिठि वायाउ ॥ अठा अणुसरिअवा, बंधोदय संत कम्मा णं ॥९२॥ जो जठ अपमिपुन्नो, अठो अप्पा गमेण बंधोति ॥ तं खमिऊण ब हुसुआ, पूरेऊणं परि कहंतु ॥ ९३ ॥ गाहग्गं सयरीए, चंद महत्तर मयाणु सारीए ॥ टीगाइ नियमिआणं, एगूणा होइ नउईउ ॥९४॥ ॥ इति श्री सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ श्रीरत्नाकरसूरिकृतरत्नाकरपंचविंशिकाप्रारंभः ॥ उपजातिछंदः ॥ श्रेयः श्रियां मंगलकेलिसद्म, नरेंद्रदेवेंद्रनतांघ्रिपद्म॥सर्वज्ञ सर्वातिशयप्रधान, चिरं जय ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥ जगत्रयाधार कृपावतार, दुर्वारसंसारविकारवैद्य ॥

श्रीवीतराग त्वयि मुग्धभावा, द्विज्ञ प्रभो विज्ञपयामि किंचित् ॥ २ ॥ किं
बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ॥ तथा यथार्थं
कथयामि नाथ, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च,
न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् ॥ शुभो न भावोऽप्यभवद्भवेऽस्मिन्, विभो
मया भ्रांतमहो मुधैव ॥ ४ ॥ दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यम
होरगेण॥ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया, जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम् ॥५॥
कृतं मयामुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश सुखं न मेऽभूत् ॥ अस्मादृशां
केवलमेव जन्म, जिनेश जज्ञे भवपूरणाय ॥६॥ मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्तं, त्व
दास्यपीयूषमयूखलाभात् ॥ द्रुतं महानंदरसं कठोर, मस्मादृशां देव तदश्मतो
ऽपि ॥७॥ त्वत्तः सुदुःप्रापमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं भूरि भवभ्रमेण ॥ प्रमादनिद्रा
वशतो गतं तत् कस्याग्रतो नायक पूत्करोमि ॥ ८ ॥ वैराग्यरंगः परवंचनाय, ध

र्मोपदेशो जनरंजनाय ॥ वादाय विद्याध्ययनं च मेऽभूत्, कियद्ब्रुवे हास्यक
रं स्वमीश ॥९॥ परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ॥ चेतः परा
पायविचिन्तनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं ॥१०॥ विडंबितं यत्स्मरघस्मरा
र्त्ति,दशावशात्स्वं विषयांधलेन ॥ प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ सर्वं स्वय
मेव वेत्सि ॥११॥ ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठिमंत्रः, कुशास्त्रवाक्यैर्निहतागमोक्तिः॥
कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगा, दवांछि हे नाथ मतिभ्रमो मे ॥१२॥ विमुच्य दृग्लक्ष
्यगतं भवंतं, ध्याता मया मूढधिया हृदंतः ॥ कटाक्षवक्षोजगभीरनाभि, कटी
तटीयाः सुदृशां विलासाः ॥१३॥ लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन, यो मानसे रागलवो
विलग्नः ॥ न शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये, धौतोऽप्यगात्तारक कारणं किम् ॥ १४ ॥
अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोपि कलाविलासः ॥ स्फुरत्प्रभान प्र
भुता च कापि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥१५॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि,

गतं वयो नो विषयाभिलाषः ॥ यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोह
विडंबना मे ॥ १६ ॥ नाऽत्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपी
यं ॥ अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव धिङ् माम् ॥१७॥ न दे
वपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥ लब्ध्वापि मानुष्यमिदं
समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यम् ॥१८॥ चक्रे मया सत्स्वपि कामधेनु, कल्प
द्रुचिंतामणिषु स्पृहार्त्तिः ॥ न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश मे पश्य विमूढ
भावं ॥ १९ ॥ सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च ॥
दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिंति नित्यं मयकाऽधमेन ॥२०॥ स्थितं न सा
धोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च ॥ कृतं न तीर्थोद्धरणादि कृत्यं,
मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥ वैराग्यरंगो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां
वचनेषु शांतिः ॥ नाऽध्यात्मलेशो मम कोपि देव, तार्यः कथंकारमयं भवा

ब्धिः ॥ २२ ॥ पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य, मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ॥
यदीदृशोहं मम तेन नष्टा, भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ॥ २३ ॥ किंवा मुधाऽहं ब
हुधा सुधाभुक्, पूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं ॥ जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप,
निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र॥२४॥ शार्दूलविक्रीडितं छंदः ॥ दीनोद्धारधुरंधरस्त्व
दपरो नास्ते मदन्यः कृपा, पात्रं नात्रजने जिनेश्वर तथाप्येतां न याचे श्रियम्॥
किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं, श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलयश्रेयस्करं
प्रार्थये ॥ २५ ॥ इति श्रीवीतरागस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीरत्नाकरसूरिकृता
रत्नाकरपंचविंशतिका समाप्ता ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ अर्थ ॥ ज्ञान अने आनंद तेहिज स्वरूप छे जेनुं, वली औदारिकादिक रूपथकी रहित छे, तथा रक्षक छे अने सर्वथी उत्कृष्ट तेज छे जेनुं एवा श्रीपरमेश्वर परमात्माने म्हारो नमस्कार हो ॥ १ ॥ ॥ जेना स्वरूपने ध्यानरूपिणी दृष्टियें करीनें मननी शुद्धिने धरता योगीश्वर देखे छे, ते परमेश्वरने हुं स्तवुं छुं ॥ २ ॥ ॥ सर्व प्राणी चिदानंदस्वरूपाय, रूपातीताय तायिने ॥ परमज्योतिषे तस्मै, नमः श्रीपरमात्मने ॥ १ ॥ पश्यन्ति योगिनो यस्य, स्वरूपं ध्यानचक्षुषा ॥ दधाना मनसः शुद्धिं, तं स्तुवे परमेश्वरम् ॥ २ ॥ जन्तवः सुखमिछन्ति, तुः सुखं तछिवे जवेत् ॥ तद्ध्यानात्तन्मनः शुद्ध्या, कषायविजयेन सा ॥ ३ ॥ सर्विंद्रिय मात्र सुखनी वांछा करे छे ते संपूर्ण सुख तो जीवने मोक्षमां छे, ते मोक्षनी प्राप्ति ध्यानथी थाय छे, अने ध्यान मननी शुद्धिथी थाय छे, अने मनःशुद्धि कषाय जीतवाथी थाय छे ॥ ३ ॥ ॥ ते कषायनुं जीतवुं पांच इंद्रियना जीतवाथी थाय छे, अने ते इंद्रियजय रूडा आचारथी थाय छे, ते रूडो आचार जला उपदेशथी होय छे, ते उपदेश

मनुष्यने गुणनो कारणभूत होय ॥ ४ ॥ ॥ उपदेशथी रूडी बुद्धि थाय, रूडी बुद्धि
थी सारा गुणोनो उदय थाय, ते माटे उपदेश सांभलवा संभलाववा माटे आ आचा
रोपदेशनामें ग्रंथ प्रारंभीयें छैयें ॥ ५ ॥ ॥ रूडा आचारना विचारें करीने भलो

जयेन स्यात्, सदाचारादसौ भवेत् ॥ स जायते तूपदेशान्नृणां गुणनिबन्धन
म् ॥ ४ ॥ सुबुद्धिश्चोपदेशेन, ततोऽपि च गुणोदयः ॥ इत्याचारोपदेशाख्य,
ग्रन्थः प्रारभ्यते मया ॥ ५ ॥ सदाचारविचारेण, रुचिरश्चतुरोचितः ॥ देवा
नन्दकरो ग्रन्थः, श्रोतव्योऽयं शुभात्मभिः ॥ ६ ॥ पुद्गलानां परावृत्त्या, दुर्लभं
जन्म मानुषम् ॥ लब्ध्वा विवेकेन धर्मे, विधेयः परमादरः ॥ ७ ॥ ॥

अने पंडितने भणवा वांचवा योग्य तथा देवताने आनंदकारी एवो आ ग्रंथ ते पुण्य
वंत मनुष्यें सांभलवो ॥ ६ ॥ ॥ पुद्गल परावर्त्तेंकरी पामवो दुर्लभ एवो आ मनुष्य
नो भव छे, ते पामी करीने विवेकेंकरी मनुष्यें धर्मने विषे घणो आदर करवो ॥ ७ ॥

धर्म जे छे, ते सांजल्यो, पोतें जाण्यो, पोतें कीधो, बीजाने कराव्यो, अने अनु मोद्यो थको निश्चें सात कुलने पवित्र करे छे ॥ ७ ॥ ॥ धर्म, अर्थ, अने काम ए त्र ण साध्या विना मनुष्यनो जन्म ते पशुनीपरें निःफल जाणवो. ते त्रणमां पण उत्त म धर्म छे, केमके, धर्म विना बीजा बे न पामीयें ॥ ए ॥ ॥ एक मनुष्यनो जव, बीजो

धर्मः श्रुतोऽपि दृष्टोऽपि,कृतोऽपि कारितोऽपि च॥ अनुमोदितो नियतं, पुनात्या सप्तमं कुलम् ॥७॥ विना त्रिवर्गं विफलं, पुंसो जन्म पशोरिव ॥ तत्र स्यादुत्तमो धर्मस्तं विना न यतः परौ ॥ ए ॥ मानुष्यमार्यदेशश्च, जातिः सर्वाक्षपाटव म् ॥ आयुश्च प्राप्यते तत्र, कथं चित्कर्मलाघवात् ॥ १० ॥ प्राप्तेषु पुण्यतस्ते

आर्यदेश, त्रीजी उत्तमजाति, चोथी इंडियोनी सदृढता, पांचमुं महोटुं आयुष्य, एट लांवानां केम पामीयें ! जो कांइक कर्म हलवां होय तो पामीयें ॥ १० ॥ ॥ ए स र्वे वानां पुण्यथकी पामे थके पण श्रीवीतरागनां वचन उपर श्रद्धा आववी डुर्लज छे

ते श्रद्धा आव्या पछी रूडा गुरुनो योग जो मोहोटुं भाग्य होय तो पामीयें ॥११॥
ए सर्व वस्तु पामी, पण जेम राजा न्यायें करी शोभे, फूल सुगंधें करी शोभे, भोज
न घृतेंकरी शोभे, तेम भला आचारें करी शोभवुं एवी सामर्थी पामवी दुर्लभ छे ॥ १२ ॥

पु, श्रद्धा भवति दुर्लभा ॥ ततः सद्गुरुसंयोगो, लभ्यते गुरुभाग्यतः ॥ ११ ॥
लब्धं हि सर्वमप्येतत्सदाचारेण शोभते ॥ न्यायेनेव नृपः पुष्पं, गन्धेना
ज्येन भोजनम् ॥ १२ ॥ शास्त्रे दृष्टेन विधिना, सदाचारपरो नरः ॥ परस्परा
विरोधेन, त्रिवर्गं साधयेन्मुदा ॥ १३ ॥ तुर्ये यामे त्रियामायां, ब्राह्मे काले कृ
तोद्यमः ॥ मुञ्चेन्निद्रां सुधी पञ्च, परमेष्ठिस्तुतिं पठन॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

माटे जेवो विधि शास्त्रमां दीठो, तेवा विधियेंकरी जे सदाचारमां तत्पर रहे, ते प्राणी
मांहोमांहे विरोध विना त्रिवर्गनें हर्ष करी साधे ॥ १३ ॥ ॥ जे पंडित छे,ते रात्रिने
चोथे पोहोरे ब्राह्मकाले एटले बे घडी पाछली रात्रें उठवानो उद्यम करीने नवकारनी

स्तुति नणतो थको निद्रानो त्याग करे ॥ १४ ॥ ॥ सदा सर्वदा शय्याथी उठतां डाबी अथवा जमणी, जे नासिका वहेती होय, ते तरफनो पग उठती वखत प्रथम धरती उपर आपे ॥ १५ ॥ ॥ पछी रात्रें सूतानां वस्त्र मूकीनें बीजां वस्त्र पहेरीने नला स्थानकें बेसीनें

वामा तु दक्षिणा वापि, या नाडी वहते सदा ॥ शय्योत्थितस्तमेवादौ, पादं दद्याद्भुवस्तले ॥१५॥ मुक्त्वा शयनवस्त्राणि, परिधायापराणिच ॥ स्थित्वा सुस्थानके धीमान्, ध्यायेत्पञ्चनमस्क्रियाम् ॥१६॥ उपविश्य च पूर्वाशाभिमुखो वाप्युदङ्मुखः ॥ पवित्राङ्गः शुचिस्थाने, जपेन्मन्त्रं समाहितः ॥ १७ ॥ अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ॥ ध्यायेत्पञ्चनमस्कारान्, सर्वपापैः प्र

बुद्धिवंत जीव प्रथम नवकारनुं ध्यान करे ॥ १६ ॥ ॥ ते पूर्वदिशि सन्मुख अथवा उत्तर दिशि सन्मुख, पवित्र शरीरें पवित्र स्थानकें बेसी मन स्थिर राखीने श्रीनवकार मंत्रनो जाप करे ॥ १७ ॥ ॥ अपवित्र अथवा पवित्रपणें सुखियो अथवा दुःखियो थको

पण जे प्राणी नवकार प्रत्यें ध्यावे, ते प्राणी सर्व पापथकी मूकाय ॥ १८ ॥ ॥ अंगुलीने टेरवे जे नवकारनो जाप करे, जे मेरु उलंघीने जाप करे, वली जे संख्यारहित जाप करे, तेनुं प्राये अल्प फल होय ॥ १९ ॥ ॥ जाप त्रण प्रकारें थाय, एक उत्कृष्टो, बीजो मध्यम अने त्रीजो अधम, ए त्रण भेद जाणवा. तेमां कमलादिकना

मुच्यते ॥ १८ ॥ अङ्गुल्यग्रेण यज्जप्तं, जप्तं यन्मेरुलङ्घनैः ॥ संख्याहीनं च यज्जप्तं, तत्प्रायोऽल्पफलं भवेत् ॥ १९ ॥ जपो भवेत्त्रिधोत्कृष्ट, मध्यमाधमभेदतः ॥ पद्मादिविधिना मुख्यो, मध्यः स्याज्जपमालया ॥ २० ॥ विना मौनं विना संख्यां, विना चेतोनिरोधनम् ॥ विना स्थानं विना ध्यानं, जघन्यो

विधियें जे गुणे, ते प्रथम मुख्य एटले उत्कृष्ट जाप जाणवो, तथा नोकरवालीयें गुणे' ते बीजो मध्यम जाप जाणवो ॥ २० ॥ ॥ तथा मौन धारण कस्या विना, संख्या विना मन स्थिर राख्या विना, स्थानक विना अने ध्यान विना जे गुणे, ते त्रीजो ज

धन्य जाप जाणवो ॥ २१ ॥ ॥ तेवार पछी उपाश्रये अथवा पोताना घरने विषे ज
ईने पोतानां पाप शुद्ध करवाने अर्थे पंमित पुरुष, पडिक्कमणुं करे ॥ २२ ॥ ॥ एक
रात्रि पडिक्कमणुं, बीजुं दैवसिकपडिक्कमणुं, त्रीजुं पाखीपडिक्कमणुं, चोथुं चौमासी पडिक्क

जायते जपः ॥ ७१ ॥ ततो गत्वा मुनिस्थान, मथवात्मनिकेतने ॥ निजपाप
विशुद्ध्यर्थं, कुर्यादावश्यकं सुधीः ॥ ७७ ॥ रात्रिकं स्याद्दैवसिकं, पाक्षिकं चातु
र्मासिकम् ॥ सांवत्सरं चेति जिनैः, पंचधावश्यकं कृतम् ॥ ७३ ॥ कृतावश्यक
कर्मा च, स्मृतपूर्वकुलक्रमः ॥ प्रमोदमेदुरस्वान्तः, कीर्तयेन्मङ्गलस्तुतिम्
॥ ७४ ॥ मङ्गलं जगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमः प्रभुः ॥ मङ्गलं थूलिजडाद्या,

मणुं अने पांचमुं संवछरी पडिक्कमणुं, ए जगवंते पांच प्रकारे पडिक्कमणुं करवुं कह्युं छे
॥ २३ ॥ ॥ पडिक्कमणरूप कर्म करीनें पोतानो कुलक्रम संजारतो हर्षे करी पुष्ट छे चित्त
जेनुं एवो जन ते मांगलिकनी स्तुति जणे ॥ २४ ॥ ॥ मंगलिक श्रीजगवंत महावीर

स्वामीजी, मंगलिक श्रीगौतमस्वामीजी, श्रीथूलभद्रादिक साधुजी,अने मंगलिक जैनधर्म
मंगलिक करो ॥ २५ ॥ ॥ श्रीऋषभादिक चोवीश तीर्थंकर, भरतादिक बार चक्रवर्त्ति तथा
वासुदेव अने बलदेव, ए सर्वे मंगलिक करो ॥ २६ ॥ ॥ नाभिराजा, सिद्धार्थ राजा
आदिक चोवीश जिनना पिता, जेमणें अखंड राज्य पाळ्यां छे, ते मुजने जय
जैनो धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥ २५ ॥ नाभेयाद्या जिनाः सर्वे, भरताद्याश्च च
क्रिणः ॥ कुर्वन्तु मङ्गलं सर्वे, विष्णवः प्रतिविष्णवः ॥ २६ ॥ नाभिसिद्धार्थ
भूपाद्या, जिनानां पितरः समे ॥ पालिताखण्डसाम्राज्या, जनयन्तु जयं मम
॥ २७ ॥ मरुदेवीत्रिशलाद्या, विख्याता जिनमातरः ॥ त्रिजगज्जनितानन्दा,
मङ्गलाय भवन्तु मे ॥ २८ ॥ श्रीपुंडरीकेन्द्रभूति, प्रमुखा गणधारिणः ॥ श्रुत
आपो ॥ २७ ॥ ॥ मरुदेवीजी त्रिशला प्रमुख जे जगतमां प्रसिद्ध, जेमणें त्रण जगतने
आनंद आप्यो एवी जिनजीनी चोवीश माताओ ते मुजने मंगलिक माटे हो ॥ २८ ॥
पुंडरीक गणधर, गौतम गणधर आदे देईनें चौदशें बावन गणधर बीजा पण श्रुतकेव

ली साधु, चौद पूर्वधर ते मुऊनें मंगलिक प्रत्यें आपो ॥ २ए ॥ ॥ ब्राह्मी, चंदनबाला दिक जे महोटी साधवीयो अखंड शीलनी लीला जेमनी ठे एवी ते सर्व मुऊने मंग लिक प्रत्यें आपो ॥ ३० ॥ ॥ चक्रेश्वरी देवी, सिद्धायिका प्रमुख चोवीश देवी जे स

केवलिनोऽपीह, मङ्गलानि दिशन्तु मे ॥ २ए ॥ ब्राह्मीचन्दनबालाद्या, महा सत्यो महत्तराः ॥ अखंम्डशीललीलाद्या, यच्छंतु मम मंगलम् ॥ ३० ॥ चक्रे श्वरीसिद्धायिकामुख्यः शासनदेवताः ॥ सम्यग्दृशां विघ्नहरा, रचयन्तु जय श्रियम् ॥ ३१ ॥ कपर्दिमातंगमुख्या, यक्षा विख्यातविक्रमाः ॥ जैनविघ्नहरा नित्यं, दिशन्तु मंगलानि मे ॥ ३२॥ यो मङ्गलाष्टकमिदं, पटुधीरधीते प्रातर्नरः

म्यगदृष्टि जीवोना विघ्ननी हरनारी ते जयलक्ष्मी रचो अथवा करो ॥ ३१ ॥ ॥ कपर्दि, मातंग प्रमुख चोवीश यक्ष प्रसिद्ध पराक्रमना धणी जिनशासनना विघ्नना हरनार ठे, ते मुऊने सदा मंगलिक आपो ॥ ३२ ॥ ॥ जे जली बुद्धिनो धणी, पुण्यें जावित ठे मननी

वृत्ति जेनी, सौभाग्य भाग्य सहित एवो अने गयां छे सर्व विघ्न जेनां एवो पुरुष ए पूर्वे कह्या जे मंगलिकना आठ श्लोक तेने प्रभाते भणे, ते मनुष्य जगतने विषे नित्यें घणां मंगलिक पामे ॥ ३३ ॥ ॥ तेवार पछी देरासरें जाय, त्यां कीधी छे निसिहीनी क्रिया जेणें

सुकृतभावितचित्तवृत्तिः ॥ सौभाग्यभाग्यकलितो धुतसर्वविघ्नो, नित्यं स म ङ्गलमलं लभते जगत्याम् ॥३३॥ ततो देवालये यायात्, कृतनैषधिकीक्रियः ॥ त्यजन्नाशातनाः सर्वास्त्रिः प्रदक्षिणयेज्जिनम् ॥ ३४ ॥ विलासहासनिष्ठीवा, निद्राकलहदुःकथाः ॥ जिनेंद्रभवने जह्यादाहारं च चतुर्विधम् ॥ ३५ ॥ नम स्तुभ्यं जगन्नाथेत्यादिस्तुतिवदंवदः ॥ फलमक्षतपूगं वा, ढौकयेद्वीजिनाग्रतः

एवो ते समस्त देरासरनी आशातनाउने टालतो श्री भगवंतनें त्रण प्रदक्षिणा दीये ॥ ३४ ॥ ॥ स्त्री साथे विलास, हास्य, श्लेष्म, त्याग, निद्रा, कलह, माठी कथा अने चार प्रकारनो आहार भगवंतने देहेरे छांडे ॥ ३५ ॥ ॥ 'नमो जिनाय' इत्यादिक स्तु

तिनां पद नणतो थको फल, अक्षत अथवा सोपारी श्रीनगवंतने आगल मूके ॥ ३६ ॥ ठाले हाथें न जाय. राजाने, देवने, गुरुने, नैमित्तिक जे आयुष्य जाणे ते ज्योतिषीने ठाले हाथें न जोवा. फलें करीनें फलनी प्राप्ति थाय ॥ ३७ ॥ ॥ जमणे पासें पुरुष, डावे पासें स्त्री ऊनी रहीने नगवंत प्रत्यें वांदे. जघन्य नव हाथथी मांडी साठ हाथ अव ॥३६॥ रिक्तपाणिर्न पश्येत्तु, राजानं दैवतं गुरुम् ॥ नैमित्तिकं विशेषेण, फलेन फलमादिशेत् ॥ ३७ ॥ दक्षवामांगनागस्थो, नरनारीजनो जिनम् ॥ वन्देताव ग्रहं मुक्त्वा, षष्टिं नव करान्विनो ॥३८॥ ततः कृत्तोत्तरासंगः, स्थित्वा सद्योग मुड्या ॥ ततो मधुरया वाचा, कुरुते चैत्यवन्दनम् ॥ ३९ ॥ उदरे कूर्परौ न्यस्य, कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुद्रा नवेदियम् ग्रह मूकी एटले नगवंतथी वेगला रहीने वांदे ॥ ३८ ॥ ॥ तेवार पछी उत्तरासण करे, ते करीने नली योगमुद्रायें रहीनें पछी मीठी वाणीयें करी चैत्यवंदन करे ॥ ३९ ॥ ॥ पेट उपर बे कोणी मूकीनें कमलना डोडानें आकारें मांहे मांहे दश आंगुली नेली क

रीयें ते योगमुद्रा होय ॥ ४० ॥ ॥ पछी पोतानें घेर जईने प्रज्ञात समयनी क्रिया करे, पछी जोजन, वस्त्र तथा घरना माणसनी चिंता करे ॥ ४१ ॥ ॥ बांधवने तथा दास प्रमुखनें पोतपोताना कार्यने विषे थापीनें आठ बुद्धिना गुणें सहित थको वली पोशालें एटले उपासरे जाय ॥ ४२ ॥ ॥ एक गुरुनी सेवा, बीजो धर्म सांजलवो, त्रीजो

॥ ४० ॥ पश्चान्निजालयं गत्वा, कुर्यात्प्राज्ञातिकीं क्रियाम् ॥ विदधीत गेहचिन्तां, जोजनाछादनादिकाम् ॥ ४१ ॥ अनादिस्वस्वकार्येषु, बंधून् कर्मकरानपि ॥ पुण्यशालां पुनर्यायादष्टजिर्धीगुणैर्युतः ॥ ४२ ॥ शुश्रूषा श्रवणं चैव, ग्रहणं धारणं तथा ॥ ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं, तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥ ४३ ॥ श्रुत्वा धर्मं विजानाति, श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम् ॥ श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति, श्रुत्वा

ग्रहण करवो, चोथो धारवो, पांचमो "विचारवो", छठो ऊहापोह करवो, सातमो अर्थ जाणवो, अने आठमो तत्त्वज्ञान ए आठ बुद्धिना गुण जाणवा ॥ ४३ ॥ ॥ शास्त्र सांजल्या थकी धर्मनो जाण थाय, सांजलवाथी दुष्टमतिनुं बांडवुं थाय, सांजल्या थकी

ज्ञान पामे, सांभळ्याथी वैराग्य. पामे ॥ ४४ ॥ ॥ बे हाथ, बे पग अने मस्तक ए
पंचांग खमासमण गुरु अने बीजा साधुने देईने गुरुनी आशातना टाळतो थको धर्म
सांभळवा बेसे ॥ ४५ ॥ ॥ मस्तकें बे हाथ लगाडीने बे ढिंचणें करी धरती प्रत्ये विधि

वैराग्यमेव च ॥ ४४ ॥ पंचाङ्गप्रणिपातेन, गुरून् साधून्परानपि ॥ उपावि
शेन्नमस्कृत्य, त्यजन्नाशातना गुरोः ॥ ४५ ॥ उत्तमाङ्गेन पाणिभ्यां, जानुभ्यां
च भुवस्तले ॥ विधिना स्पृशतः सम्यक्पंचाङ्गप्रणतिर्भवेत् ॥ ४६ ॥ पर्यस्थि
कां न बध्नीयान्न च पादौ प्रसारयेत् ॥ पादोपरि पदं नैव, दोर्मूलं न प्रदर्शयेत्
॥ ४७ ॥ न पृष्ठे न पुरो वापि, पार्श्वयोरुभयोरपि ॥ स्थेयान्नालापयेदन्य, मा

सहित सम्यक् प्रकारें फरसीयें, ते पंचांग नमस्कार कहीयें ॥ ४६ ॥ ॥ गुरुपासें बेठा
पग न बांधीयें, पग लांबा पसारीयें नही, पग उपर पग न चडावीयें, बे कांख उंची
करीने नही देखाडीयें ॥ ४७ ॥ ॥ गुरुनी पाछळ बेसे नही, आगळ बेसे नही, जमणे

तथा भावे ए बे पासें पण बेसे नही. बीजा आव्या माणसने गुरुना बोलाव्या विना प्रथम पोतें न बोलावे ॥ ४८ ॥ ॥ नावभेद जाणवामां निपुण एवो पंडित जे छे ते गुरुना मुख उपर दृष्टि राखतो मन एकाग्र करीनें धर्मशास्त्रने सांभले ॥४९॥ पोताना मनना संदेह टाले, वखाण कर्या पछी पंडित होय ते देव गुरुना गुण गानारने एटले

गतं पूर्वमात्मना ॥ ४८ ॥ सुधीर्गुरुमुखन्यस्त, दृष्टिरेकाग्रमानसः ॥ शृणुयाद्धर्म शास्त्राणि, नावभेदविचक्षणः ॥४९॥ अपाकुर्यात्स्वसंदेहान्, जाते व्याख्यानके सुधीः ॥ गुर्वर्हद्गुणगातृभ्यो, दद्याद्दानं निजोचितम् ॥ ५० ॥ अकृतावश्यको दत्ते, गुरूणां वन्दनानि च ॥ प्रत्याख्यानं यथाशक्ति, विदध्याद्विरतिप्रियः ॥ ५१॥ तिर्यग्योनिषु जायन्ते, विरतादानिनोऽपि ह ॥ गजाश्वादिनवे नोगान्,

नाट नोजकनें यथाशक्तियें पोताने आपवा योग्य दान आपे ॥ ५० ॥ ॥ जेणें पडि क्कमणुं नथी कीधुं, ते गुरुनें पगें वांदणा आपे, पछी जेने विरतिपणुं वाहालुं छे, ते नो कारसी प्रमुख यथाशक्तियें पच्चरकाण करे ॥ ५१ ॥ ॥ विरति विना जे दातार होय

ते पण तिर्यंचनी योनिमां जइ ऊपजे. हाथी घोमानो नव पामे. त्यां नोग नोगवता पण बंधनमां पड्या थका रहे ॥ ५२ ॥ ॥ जे दातार होय ते नरकें न जाय, जे पच्चरकाण सहित होय ते तिर्यंचमां न जाय, जे दयावंत होय ते आयुष्यहीन न होय, अने जे सत्यवादी होय तेनो माठो स्वर न होय ॥ ५३ ॥ ॥ तपस्या जे ठे ते सर्व

भुञ्जाना बन्धनान्वितान् ॥ ५२ ॥ न दाता नरकं याति, न तिर्यग् विरतो नवेत् ॥ दयालुर्नायुषा हीनः, सत्यवक्ता न दुःस्वरः ॥ ५३॥ तपः सर्वाक्षसारंग, वशीकरणवागुरा ॥ कषायतापमृद्वीका, कर्माजीर्णहरीतकी ॥५४ ॥ यद्दूरं यदुराराध्यं, यत्सुरैरपि दुष्करम् ॥ तत्सर्वं तपसा साध्यं, तपो हि दुरतिक्रमम्

इंद्रियरूप जे मृगलां तेने वश करवाने जालसमान ठे, तथा कषायरूप ताप टालवाने द्राक्षा समान ठे, अने कर्मरूप अजीर्ण टालवाने हरडे समान ठे ॥ ५४ ॥ ॥ जे वस्तु वेगली होय, दूर होय के दुःखें आराध्य होय, तथा जे देवताने पण दुर्लन

होय, ते सर्व तपस्यायें करी सधाय छे. ते तपने पोताना गुणें करी उल्लंघन करी जाय एवुं बीजुं साधन नथी ॥ ५५ ॥ ॥ हवे बजारमां जइ धर्मनो विधियें करीने पं रीत, द्रव्य कमावानो पोतपोतानो व्यापार करे ॥ ५६ ॥ ॥ मित्रना उपकारने अर्थें, बंधु एटले जाइना उदयने अर्थें, उत्तम पुरुष लक्ष्मी उपार्जन करे, केवल पो

॥ ५५ ॥ चतुष्पथं ततो यायात्, कृतधर्मविधिः सुधीः ॥ कुर्यादर्थार्जनोपायं, व्यवसायं निजं निजम् ॥५६॥ सुहृदामुपकाराय, बन्धूनामुदयाय च ॥ अर्ज्यते विभवः सद्भिः, स्वोदरं को विभर्ति न ॥ ५७॥ व्यवसायभवा वृत्तिः, सोत्कृष्टा मध्यमा कृषिः ॥ जघन्या भुवि सेवा तु, भिक्षा स्यादधमाधमा ॥५८ ॥ ॥

तानुं पेट तो कोण नथी जरतो? ॥ ५७ ॥ ॥ व्यापारनी आजीविकायें पेट जराय, ते उत्कृष्ट आजीविका जाणवी, खेतिवाडी करी आजीविका चलाववी ते मध्यम जाणवी, पारकी सेवा करी आजीविका चलाववी, ते पृथिवीने विषे जघन्य जाणवी

अने निक्षा मागी पेट नरवुं ते अधमाधम आजीविका जाणवी ॥ ५७ ॥ ॥ ते माटे नीच व्यापार पोतें न करे, बीजा पासें न करावे, लक्ष्मी पुण्यथी प्राप्त थाय पण पापथी क्यारें पण वधे नही ॥ ५ए ॥ ॥ घणा आरंनरूप महापाप जेमां बे, लोकमां जेनी निंदा थाय बे, तथा जे उनयलोक विरुद्ध होय, ते कर्म आचरे नही ॥ ६० ॥ ॥

व्यवसायमतो नीचं, न कुर्यान्नापि कारयेत्॥ पुण्यानुसारिणी संपत्, न पापाद्वर्द्धते क्वचित् ॥ ५ए॥ बह्वारंनमहापापं, जने चेज्जनगर्हितम् ॥ इहामुत्रविरुद्धं यत्, तत्कर्म्म न समाचरेत् ॥ ६० ॥ लोहकारचर्मकारमद्यकृत्तैलिकादिनिः ॥ सत्यप्यर्थागमे कामं, व्यवसायं परित्यजेत् ॥ ६१॥ एवं चरन् प्रथमयामविधिं

लोहार साथें, मोची अथवा चमार साथें, मद्यना करनार साथें अने तेली आदिक साथें जो घणुं धन प्राप्त थतुं होय तोपण व्यापार न करे ॥ ६१ ॥ ॥ ए प्रकारें प्रथम पोहोरनो सर्व विधि प्रत्यें करतो, श्रद्धायुक्त, नला विनयनो धणी न्यायें करी

शोजतो, विज्ञानने मान आपवुं तथा लोकने रीजववुं तेनेविषे सावधान, एवो श्रा
वक इहलोक अने परलोकसंबंधि पोताना बे जन्म सफल करे ॥ ६२ ॥ ॥ इति श्री
रत्नसिंहसूरि, तत् शिष्य श्रीचारित्रसुंदरगणिना विरचित आचारोपदेशग्रंथमां प्रथमपो

समग्रं, आढ्यो विशुद्धविनयो नयराजमानः ॥ विज्ञानमानजनरंजनसावधा
नो, जन्मद्वयं विरचयेत्सफलं स्वकीयम् ॥ ६२ ॥ इति श्रीरत्नसिंहसूरिशिष्य
श्रीचारित्रसुन्दरगणिविरचिते आचारोपदेशे प्रथमप्रहरवर्गः ॥ १ ॥ अ
थ स्वमन्दिरे यायाद्, द्वितीये प्रहरे सुधीः ॥ निर्जन्तु भुवि पूर्वाशाभिमुखः स्ना
नमाचरेत् ॥ १॥ सप्रणालं चतुष्पादं, स्नानार्थं कारयेद्वरम् ॥ तदुद्धृते जले य

होरवर्गनो बालावबोध संपूर्ण ॥ १॥ ॥ हवे बीजे पोहोरें ते पंडित पोताने घरे जइ जीव
रहित धरतीने विषे पूर्वदिशि सन्मुख बेशीने स्नान करे ॥ १॥ ॥ नला परनाला सहित
बाजोठ स्नानने अर्थे करावे, ते उष्ण पाणी बाजोठमां रह्याथी जीवनी हिंसा न थाय॥२॥

रजस्वला स्त्रीनो अथवा चंडालनो स्पर्श थयो होय अथवा घरमां सूतक थयुं होय, तथा स्वजनादिकनुं मृत्यु थयुं होय तो मस्तकथी मांमीने सर्वांगे स्नान करे ॥ ३ ॥ अन्य अवसरें मस्तक वर्जीने बीजुं शरीर पखाले, एटलुं विशेष जाणवुं, तथा कांइक उष्ण एवा थोडे पाणीयें करी पुण्यवंत जीव देवपूजाने अर्थे स्नान करे ॥ ४ ॥ ॥

स्माज्जंतुबाधा न जायते ॥ २ ॥ रजस्वलाया मलिनस्पर्शे जाते च सूतके ॥ मृतस्वजनकार्ये च, सर्वाङ्गस्नानमाचरेत् ॥ ३ ॥ अन्यथा शीर्षवर्जं च, वपुः प्रक्षालयेत्परम् ॥ कवोष्णेनाल्पपयसा, देवपूजाकृते कृती ॥ ४ ॥ चन्द्रादित्यकरस्पर्शात्पवित्रं जायते जगत् ॥ तदाधारं शिरो नित्यं, पवित्रं योगिनो विडुः ॥ ५ ॥ दयासाराः सदाचारास्ते सर्वे धर्महेतवे ॥ शिरःप्रक्षालनान्नि

चंडमा अने सूर्यना किरण स्पर्श्याथी सर्व जगत् पवित्र थाय छे, ते जगत्नो आधार मस्तक छे माटे ते मस्तक निरंतर पवित्र छे, एम योगीश्वर कहे छे ॥५ ॥ ॥ जीवदया छे सारजूत जेमां एवा सर्व आचार धर्मनां कारण छे, ते माटे मस्तक धोवाथी नित्य

मस्तकना जीवने उपद्रव होय तेथी अधर्म थाय, माटे मस्तक स्नान नित्य करवुं वर्ज्य छे ॥ ६ ॥ ॥ मस्तक क्यांहि अपवित्र न होय. केमके ! सदा ते लुगडांथी वींटयुं रहे, वली निर्मल तेजनो धरनार एवो आत्मा जे जीव, तेनी स्थिति एटले रहेवुं ते निरंतर मस्तकें छे, माटे क्यारें पण मस्तक अपवित्र थतुं नथी ॥ ७ ॥ ॥ स्नानने अर्थें पाणी नाख्या

त्यं, तज्जीवोपद्रवो भवेत् ॥ ६॥ नापवित्रं भवेच्छीर्षं, नित्यं वस्त्रेण वेष्टितम् ॥ अध्यात्मनः स्थिते सत्वनिर्मलद्युतिधारिणः ॥ ७ ॥ स्नानायेति जलोत्सर्गाद् घ्नंति जन्तून् बहिर्मुखान् ॥ मलिनं कुर्वते जीवं, शोधयंति वपुर्हि ते॥८॥विहाय पोतकं वस्त्रं, परिधाय जिनं स्मरन् ॥ यावज्जलार्द्रौ चरणौ, तावत्तत्रावतिष्ठते

थी जीव हणाय छे, एवा स्नान धर्मथी मिथ्यात्वी जनो पोताना जीवने मलीन करे छे अने शरीरने पवित्र करे छे ॥ ८ ॥ ॥ स्नान करेलुं पोतीयुं मूकीने बीजुं वस्त्र पहेरीने जिनेश्वरनुं स्मरण करतो छतो ज्यांसुधी भीना पग होय त्यांसुधी त्यांज उभो रहे ॥९॥

अन्यथा त्रीना पग उपर मल लागे, तेवारें वली पग अपवित्र थाय, तथा ते त्रीजेला पगे जीव लागे तेमनी घात थाय, तेथी महोटुं पाप लागे ॥ १० ॥ ॥ घरना देरासर पासें जइने धरती पूंज्या पछी धोयेलां पूजानां वस्त्र पहेरीने आठ पडनो मुखकोश बांधे ॥ ११ ॥ ॥ देवपूजाने अवसरें एक मन, बीजुं वचन, त्रीजी काया, चोथुं

॥ ए ॥ अन्यथा मलसंश्लेषादपवित्रौ पुनः पदौ ॥ तल्लीनजीवघातेन, जवेद्धा पातकं महत् ॥ १० ॥ गृहचैत्यांतिकं गत्वा, जूमिसंमार्जनादनु ॥ परिधाय च वस्त्राणि, मुखकोशं दधात्यथ ॥११॥ मनोवाक्कायवस्त्रेषु, जूपूज्योपकरस्थितौ॥शुद्धिः सप्तविधा कार्या, देवतापूजनक्षणे॥१२॥पुमान् परिदधेन्न स्त्रीवस्त्रं

वस्त्र, पांचमी जूमि, छठ्ठां पूजानां उपकरण अने सातमी स्थिति स्थैर्य, ए सात वानां देव पूजवाने अवसरें शुद्ध करवां ॥ १२ ॥ ॥ पूजा करती वखतें क्यारें पण पुरुषें स्त्रीनुं वस्त्र पहेरवुं नही, अने स्त्रीयें पुरुषनुं वस्त्र न पहेरवुं. जो पहेरे, तो कामनी त

था रागनी वृद्धि थाय ॥ १३ ॥ ॥ ज्ञारीयें करी पाणी लावी ते पाणीयें करी जगवंतनी अंग पखाल करीने अंगलूहणे करी जगवंतनुं शरीर सूकुं करे. तेवार पछी अष्ट प्रकारनी पूजा करे, ते कहे छे ॥ १४ ॥ ॥ कस्तूरी केशर कपूर तेणेकरी मिश्रित करेलुं एवुं

पूजाविधौ क्वचित् ॥ न नारी नरवस्त्रं तु, कामरागविवर्धनम् ॥ १३ ॥ भृंगारानीतनीरेण, संस्नाप्यांगं जिनस्य तु ॥ रूक्षीकृत्य सुवस्त्रेण,पूजां कुर्यात्ततोऽष्टधा ॥ १४॥ सच्चन्दनेन घनसारविमिश्रितेन, कस्तूरिकाऽवयुतेन मनोहरेण ॥ रागादिदोषरहितं महितं सुरेन्द्रैः, श्रीमज्जिनं त्रिजगतः पतिमर्चयामि ॥ १५ ॥ जातीजपाबकुलचम्पकपाटलाद्यै, र्मन्दारकुन्दशतपत्रवरारविन्दैः ॥ संसारनाश

मनोहरचंदन तेणें करीने,राग द्वेषादिके रहित अने जेने चोसठ इंद्रे पूज्या एवा जे श्रीजगवंत त्रण जगतना स्वामी तेने हुं अर्चुं छुं ॥ १५ ॥ इति प्रथमा चंदनपूजा ॥ १ ॥ ॥ तेवार पछी जाइनां फूल, जासूलनां फूल, बोलसिरि, चंपक, पारूल, मंदार, मचकुंद, सो

पांखडीनां कमल, तथा बीजां पण फूलें करी, संसारना नाश करनार, करुणायें
करी प्रधान, एवा भगवंतने हुं पूजुं छुं ॥ १६ ॥ इति द्वितीया पुष्पपूजा ॥ २ ॥
काला अगरनो करेलो साकर सहित घणा कपूरें करी सहित घणा यत्नें कस्यो बहु
हर्ष आपनारो एवो धूप भक्तियें करी म्हारा पोताना पापनो नाश करवाने अर्थे हुं

करणं करुणाप्रधानं, पुष्पैः परैरपि जिनेन्द्रमहं यजामि ॥१६॥ कृष्णागुरुप्रचु
रितं सितया समेतं, कर्पूरपूरमहितं विहितं सुयत्नात् ॥ धूपं जिनेन्द्रपुरतो गुरु
तोषपोषं, भक्त्योत्क्षिपामि निजदुष्कृतनाशनाय ॥ १७ ॥ ज्ञानं च दर्शनमथो
चरणं विचिन्त्य, पुंजत्रयं च पुरतः प्रविधाय भक्त्या॥चोक्षाक्षतैः कणगणैरपरै

भगवंत आगल उखेवुं छुं ॥ १७ ॥ इति तृतीया धूप पूजा ॥ ३ ॥ ॥ ज्ञान, दर्शन अने
चारित्र ए त्रण भाव मनमां चिंतवी त्रण ढगला आखे स्वच्छ चोखायेंकरी तथा बीजा
पण सारा कण धान्य तेणेकरी भगवंत आगल करीने ते भगवंत श्रीआदीश्वर प्रत्यें

अक्षतें करी हुं पूजुंछुं॥१८॥इति चतुर्थी अक्षत पूजा॥४॥ ॥जलां एवां नालियेर, फनस, आमलां, बीजोरां, जंबीर, सोपारी अने आंबां प्रमुख फलेंकरीने स्वर्गादिक देवलोकादिक घणा फलना देनार एवा श्रीदेवाधिदेव एटले सर्व देव थकी अधिक देव जे श्रीज

रपीह, श्रीमन्तमादिपुरुषं जिनमर्चयामि ॥ १८ ॥ सन्नालिकेरपनसामलबीजपूरजंबीरपूगसहकारमुखैः फलैस्तैः ॥ स्वर्गाद्यनल्पफलदं प्रमदाप्रमोदं, देवाधिदेवमशुभप्रशमं महामि ॥ १९ ॥ इति फलपूजा ॥ सन्मोदकैर्वटकमंडकशालिदालिमुख्यैरसंख्यरसशालिभिरन्नभोज्यैः ॥ क्षुत्तृड्व्यथाविरहितं स्वहिताय नित्यं, तीर्थाधिराजमहमादरतो यजामि ॥ २० ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥

गवंत ते प्रत्यें हर्षें करी हुं पूजुं छुं ॥१९॥ इति पंचमी फल पूजा ॥५॥ ॥भला एवा लाडुवा, वडां, मांडा, चोखा, दाल प्रमुख घणा रससहित भोजनतां एवां नैवेद्य तेणेकरीने भूख अने तृषानी पीडा रहित एवा भगवंत तीर्थंकरने पोताना हितने अर्थें नि

त्य प्रत्यें हुं आदरेंकरी पूजुं बुं ॥२०॥ ॥ इति षष्ठी नैवेद्य पूंजा ॥ टाळ्यो बे पापनो स
मूह जेणें, नित्यें उदयवंत, त्रण विश्वने एटले त्रण जगतने जोवानी कला तेणेंकरी
सहित एवा नगवंत प्रत्यें नक्तियें करी महारुं तम जे अज्ञान ते शमाववामाटे शमताना
समुद्र एवा नगवंत प्रत्यें नक्तियें करी हुं दीपक करुं बुं ॥२१॥ ॥इति सप्तमी दीपक

विध्वस्तपापपटलस्य सदोदितस्य, विश्वावलोकनकलाकलितस्य नक्त्या ॥ उ
द्द्योतयामि पुरतो जिननायकस्य, दीपं तमःप्रशमनाय शमांबुराशेः॥२१॥ इति
दीपकपूजा ॥ तीर्थोदकैर्धुतमलैरमलस्वनावं, शश्वन्नदीह्रदसरोवरसागरोत्थैः ॥
दुर्वारमारमदमोहमहाहिताक्ष्यं, संसारतापशमनाय जिनार्चयामि ॥ २२ ॥

पूजा ॥ हे जिन! निरंतर निर्मल बे स्वनाव जेमनो, कंदर्प तथा आठ मद अने मोहरूप
सर्प तेने हणवाने गरुम समान एवा तमने नदी, द्रह, सरोवर अने समुद्र तेना निर्मल
पाणीयें करी संसारनो ताप शमाववाने अर्थें हुं पूजुं बुं ॥ २२ ॥ ॥ इत्यष्टमी जल

पूजा॥ए पूजानां महोटां आठ काव्यनी स्तुति ते भणीने ए पूर्वे कह्यो जे भलो विधि, ते वि
धियें करी जे पूजा करे, ते पुण्यवंत श्रावक देवताना तथा मनुष्यना अखंड सुख पूर्ण
भोगवीने थोडा कालमां मोक्षना सुख प्रत्यें पामे ॥ २३ ॥ ॥ इति पूजाष्टकम् ॥

इति जलपूजा ॥ पूजाष्टकस्तुतिमिमामसमामधीत्य, योऽनेन चारुविधिना वित
नोति पूजाम् ॥ भुक्त्वा नरामरसुखान्यविखंभितानि, धन्यः सुवासमचिराल्ल
भते शिवेऽपि ॥२३॥ इति पूजाष्टकम् ॥ शुचिप्रदेशे निःशल्ये, कुर्याद्देवालयं सु
धीः ॥ सौधे यातां वामभागे, सार्द्धहस्तोच्चभूमिके ॥ २४ ॥ पूर्वाशाभिमुखोऽ
र्चासु, उत्तराभिमुखोऽथवा ॥ विदिशांसंमुखो नैव, दक्षिणां वर्जयेद्दिशम् ॥२५॥

घरमां जातां ते डाबे हाथे दोढ हाथ उंची धरतीने विषे शल्य रहित एवा पवित्र स्था
नकें पंडितजन देरासर करे ॥ २४ ॥ ॥ पूजानो करनार पूर्वदिशि साहामो अथवा
उत्तरदिशि साहामो बेसे; पण विदिशिनी साहामो न बेसे; अने दक्षणदिशि वर्जे ॥

॥ २५ ॥ ॥ पूर्वदिशि साहामो बेसी पूजा करे तो लक्ष्मी पामे, अग्निखुणें से स पामे, दक्षिण दिशियें मरण पामे, अने नैऋत्य खुणे उपद्रव उपजे ॥२६॥ ॥ पश्चिम दिशियें पुत्रनुं दुःख होय, वायु खुणे संतान न होय, उत्तर दिशियें घणो लाभ थाय,

पूर्वस्यां लभते लक्ष्मीमग्नौ संतापसंभवः ॥ दक्षिणस्यां भवेन्मृत्युर्नैर्ऋते स्यादुपद्रवः ॥२६॥ पश्चिमायां पुत्रदुःखं, वायव्यां स्यादसंततिः ॥ उत्तरस्यां महालाभ, ईशान्यां धाम्नि नो वसेत् ॥ २७ ॥ अंघ्रिजानुकरांसेषु, मस्तके च यथाक्रमम् ॥ विधेया प्रथमं पूजा, जिनेन्द्रस्य विवेकिभिः ॥२८॥सचंदनं च काश्मीरं, विनार्चा न विरच्यते ॥ ललाटकंठहृदये, जठरे तिलकं पुनः ॥ २९ ॥ ॥

ईशान खुणे घरने विषे न रहे ॥ २७ ॥ ॥ बे पग, बे ढीचण, बे हाथ, बे खभा अने एक मस्तक ए नवे अंगें अनुक्रमें डाबा पासाथी विवेकी श्रावकें श्रीजिनेंद्रनी प्रथम पूजा करवी ॥२८॥ ॥ भला चंदन अने सारा केशर विना पूजा न करवी, वली ल

लाटें, कंठें, हृदयें अने पेट ऊपर श्रीनगवंतने तिलक करे ॥ २ए ॥ ॥ प्रनातें पवित्र वास करे, बे पोहोरें फूलनी पूजा करे, तेम सांजें धूप दीप करी पूजा करे एम पंक्ति तें त्रिकाल पूजा करवी ॥ ३० ॥ ॥ पूजा करतां एक फूलना बे कटका न करवा, क

प्रनाते शुद्धवासेन, मध्याह्ने कुसुमैस्तथा ॥ संध्यायां धूपदीपाभ्यां, विधेयार्चा मनीषिन्निः ॥३०॥ नैकं पुष्पं द्विधा कुर्यान्न छिन्द्यात्कलिकामपि ॥ पत्रकुड्मलन्नेदेन, हत्यावत्पातकं नवेत् ॥३१॥ हस्तात्प्रस्खलितं पुष्पं, लग्नं पादेऽथवा नुवि ॥ शीर्षोपरि धृतं यच्च, तत्पूजार्हं न कर्हिचित् ॥३२॥ निर्गन्धमुग्रगन्धं च, तत्त्याज्यं कुसुमं समम् ॥ स्पृष्टं नीचजनैर्दृष्टं, कीटैः कुवसनैर्धृतम् ॥ ३३ ॥ ॥

ली पण छेदवी नही, पत्रथी फूल जूडुं न करवुं. एम करवाथी हत्या सरखुं पाप लागे ॥ ३१ ॥ ॥ हाथथी पमी गयेलुं, जेने पग लाग्यो, जे नूमियें पड्युं, तथा जे मस्तक उपर आव्युं, एवुं जे फूल ते पूजायोग्य कहेवाय नही ॥ ३२ ॥ ॥ गंध रहित, ७ ॥

गंधवालुं, नीच मनुष्यें फरश्युं, कीडे डंस्युं, माठे वस्त्रें लावेलुं, एवुं फूल वांडवुं, जामां लेवुं नही ॥ ३३ ॥ ॥ जगवंतने डावे पासें धूप देवो, जलनो कुंज सन्मुख ढोववो, नागरवेलनां पान फल ते जगवंतना हाथने विषे देवां ॥ ३४ ॥ ॥ १ स्नात्र, २ चंदन, ३ दीवो, ४ धूप, ५ फूल, ६ नैवेद्य, ७ जल, ८ ध्वजा, ए वासदेप, १० अ

वामांगे धूपदाहः स्याज्जदपात्रं तु संमुखे ॥ हस्ते दद्याज्जिनेन्डस्य, नागवल्लीदलं फलम् ॥ ३४॥ स्नात्रैश्चन्दनदीपधूपकुसुमैर्नैवेद्यनीरध्वजै, र्वासैरहतपूगपत्रसहितैः सत्कोशवृद्ध्या फलैः ॥ वादित्रध्वनिगीतनृत्यनुतिजिश्छत्रैर्वरैश्चामरै, र्जूषाजिश्च किलैकविंशतिविधा पूजा जवेदर्हताम् ॥ ३५ ॥ इत्येकविंशतिविधां रच

हत,११ सोपारी,१२ तांबूल, १३ देव जंमारमां वृद्धि करवी, १४ फल, १५ वाजित्रध्वनि, १६ गीतगान, १७ नाटक, १८ स्तुति, १ए छत्र, २० जलां चामर, २१ जलां आजरण, ए एकवीश प्रकारें करीने श्रीअरिहंत देवनी पूजा होय ॥३५॥ ॥ ए एकवीश प्रकारें

करी जे नगवंतनी पूजा छे तेने रूडा जीव नला पर्वने दिवसें करे, अथवा तीर्थें जइने करे अने प्रथम कही जे उत्तम आठ प्रकारनी पूजा ते नित्य करवी, तथा बीजी पण वली जे जे नली वस्तु होय ते नावें करी पूजामां जोडीयें ॥ ३६ ॥ ॥ तेवार पछी विशेष थकी धर्म पामवानी इछाएं अपवित्र मार्ग प्रत्यें मूकतो, धौतवस्त्र

यन्ति पूजां, नव्याः सुपर्वदिवसेऽपि च तीर्थयोगे ॥ पूर्वोक्तचारुविधिनाष्टविधां च नित्यं, यद्यद्वरं तदिह नाववशेन योज्यम् ॥३६ ॥ ग्रामचैत्यं ततो यायाद्विशेषाद्धर्म्मलिप्सया ॥ त्यजन्नशुचिमध्वानं, धौतवस्त्रेण शोनितः ॥३७ ॥ यास्यामीति हृदि ध्यायंश्चातुर्थं फलमश्नुते ॥ उत्थितो लनते षाष्ठं, त्वाष्टमं पथि च

पहेरवे करी शोनतो गामना देरासरने विषे जाय ॥३७॥ ॥ देरासरें जइशुं एम मनमां धरतो थको चोथनुं एटले एक उपवासनुं फल पामे, अने जेवारें देरासरें जावाने ऊठे तेवारें छठनुं फल थाय, देरासरने मार्गे जातां अठम फलनो लान थाय ॥ ३८ ॥ ॥

देरासरने दीठे थके दशमनो एटले चार उपवासनो लाज थाय, देरासरने बारणे गया थकां डुवादसनो लाज थाय, देरासरनी मांहे प्रवेश करे त्यारें पन्नर उपवासनो लाज थाय, जगवानने पूजतां मासखमणनो लाज थाय ॥ ३ए ॥ ॥ पढी त्रणवार निसिही कहीने पंडित होय ते देरासरमां प्रवेश करे, तिहां देरासरनी चिंता प्रत्यें करीने पढी व्रजन् ॥ ३७ ॥ दृष्टे चैत्ये च दशमं, द्वारे द्वादशकं लनेत् ॥ मध्ये पक्षोपवासस्य, मासस्य च जिनार्चने ॥ ३ए॥ तिस्रो नैषेधिकीः कृत्वा, चैत्यं तत्प्रविशेत्सुधीः ॥ चैत्यचिंतां विधायाथ, पूजयेच्छ्रीजिनं मुदा ॥ ४० ॥ मूलनायकमन्यर्च्य, अष्टार्हत्प्रतिमाः पराः ॥ पूजयेच्चारुपुष्पौघैः, शिष्टाश्चांतर्बहिःस्थिताः ॥ ४१ ॥ अवग्रहाद्बहिर्गत्वा, वन्देतार्हन्तमादरात् ॥ विधिना पुरतः स्थित्वा, रचयेच्चैत्य हर्षे करी श्रीजगवंतने पूजे ॥ ४० ॥ ॥ प्रथम आठ प्रकारें जला फूलना समूहें श्रीमूलनायकजीनी प्रतिमा पूजीने पढी अनुक्रमें बीजी आठ बाहिरनी प्रतिमा प्रत्यें पूजे ॥ ४१ ॥ ॥ पढी अवग्रहथी बाहेर जइने आदरथी श्रीअरिहंतने वांदे, पढी

विधियें सहित आगल रहीने चैत्यवंदन करे ॥ ४२ ॥ ॥ एक नमुत्थुणेंकरी प्रथम जघन्य चैत्यवंदन जाणवुं, बे नमुत्थुणेंकरी बीजुं मध्यम चैत्यवंदन जाणवुं, पांच नमुत्थुणेंकरी त्रीजुं उत्तम चैत्यवंदन जाणवुं. बीजां पण त्रण प्रकारें चैत्यवंदन छे, ते कहे छे ॥ ४३ ॥ ॥ नमुत्थुणंनो पाठ योगमुद्रायें जणीजें, तथा जावंति चेइआइं वन्दनम् ॥ ४२ ॥ एकशस्तु जघन्या स्याद्, द्वाभ्यां भवति मध्यमा ॥ पञ्चभिस्तूत्तमा ज्ञेया, जायते सा त्रिधा पुनः ॥४३॥ स्तुतिपाठे योगमुद्रा, जिनमुद्रा तु वन्दने ॥ मुक्ताशुक्तिकमुद्रा तु, प्रणिधाने प्रयुज्यते ॥ ४४ ॥ उदरे कूर्परौ न्यस्य, कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुद्रा भवेदियम् ॥ ४५ ॥ पुरोंगुलानि चत्वारि, पश्चादूनानि तानि तु ॥ अवस्थितिः पादयोर्या, ए पाठ जिनमुद्रायें जणवो, तथा जयवीयरायनो पाठ मुक्ताशुक्ति मुद्रायें जणीयें॥४४॥ पेटने विषे कुणी थापीने कमलना डोडाने आकारें बे हाथ करीने मांहोमांहे आंगली जेलियें ए प्रथम योगमुद्रा होय ॥ ४५ ॥ ॥ चार अंगुल आगली आंगलीनी

बाजुयें पग पोहोला राखीयें, अने पाछला पानीना जाग तरफ चार अंगुलथी कांइक उंछा पग पोहोला राखीयें, ए रीतें जे पगनुं थापवुं, ते बीजी जिनमुद्रा कहीयें ॥४६॥ बे गोठणनी वच्चे रहेला तथा मोती पाकवानी बे छीपो जेम जोडेली होय तेनी जेवा आकारवाला अने पोताना कपालने लगाडेला जेमां बे हाथ होय; ए

जिनमुद्रेयमीरिता ॥ ४६ ॥ मुक्ताशुक्तिसमाकारौ, जानुगर्नस्थितौ समौ ॥ ल लाटलग्नौ हस्तौ, यौ मुक्ताशुक्तिरियं मता ॥ ४७ ॥ नत्वा जिनवरं यायाद्गदन्ना वश्यकीं गृहम् ॥ अश्नीयाद्बन्धुनिः सार्द्धं, नद्यान्नदयविचक्षणः ॥ ४८ ॥ अ धौतपादः क्रोधान्धो, वदन् डुर्वचनानि यत्॥ दक्षिणाजिमुखो नुंक्ते, तस्याजाद्

मुक्ताशुक्ति नामक मुद्रा ज्ञानी पुरुषोयें मानेली छे ॥४७॥ ॥ जगवंतने नमीनें आव सहि कहेतो थको पोताना घर प्रत्यें जाय, त्यां जइने ते डाह्यो श्रावक जक्ष अजक्षने उंलखतो थको पोताना बांधवो साथें जमे ॥४८॥ ॥पग धोया विना, रीसें अंध थको,

मुखमांथी माठां वचन बोलतो थको जे दक्षिण दिशिनी साहामो वेसी जमे ते राक्षस भोजन कहीयें ॥ ४९ ॥ ॥ अंग पवित्र करी शुभस्थानकें, निश्चल आसने बेठो थको, देव गुरुने संभारतो थको जे जमे ते भोजनने मनुष्यनुं भोजन कहीयें ॥ ५० ॥ ॥ स्नान, तथा देवपूजा करीने, पूज्य जे पोताना माता पिता आदि तेने नमीने, हर्ष सहित

सद्भोजनम् ॥ ४९ ॥ पवित्रांगः शुभे स्थाने, निविष्टो निश्चलः शनैः ॥ स्मृत देवगुरुर्भुङ्क्ते, तत्स्यान्मानुषभोजनम् ॥ ५० ॥ स्नात्वा देवान् समभ्यर्च्य, न त्वा पूज्यजनान्मुदा ॥ दत्वा दानं सुपात्रेभ्यो, भुंक्ते भुक्तं तदुत्तमम् ॥ ५१ ॥ भोज ने मैथुने स्थाने, वमने दन्तधावने ॥ विण्मूत्रोत्सर्गकाले च, मौनं कुर्यान्महाम

सुपात्रने दान देइने जे जमवुं तेने उत्तम देवभोजन जाणवुं ॥ ५१ ॥ ॥ महोटी बुद्धिना धणीयें एक भोजन करतां, बीजुं स्त्रीसेवा करतां, त्रीजा वमनने विषे, चोथुं दातण करतां, पांचमी वडीनीत करतां, छठी लघुनीत करतां, एटले स्थानकें बोलवुं

नही ॥ ५१ ॥ ॥ अग्निखुण, नैरुतखुण अने दक्षिणदिशि आ त्रणदिशा भोजनमां वर्ज्य छे, तथा रविना अस्तवेलायें, उदय वेलायें, ग्रहण पर्व होय त्यारें अथवा आपणा ज्ञाति बांधवमां शब ज्यांसुधी पड्युं होय त्यांसुधी जमवुं नही ॥ ५३ ॥ ॥ जे छते द्रव्यें भोजनादिकने विषे कृपणपणुं करे, ते मूर्खबुद्धिवालो जाणवो. ते देवने काजें धन

तिः ॥५२॥ आग्नेयीं नैर्ऋतिं भुक्तौ, दक्षिणां वर्जयेद्दिशम् ॥ सांध्ये ग्रहणकाले च, स्वजनादेः शवस्थितौ ॥ ५३॥ कार्पण्यं कुरुते यो हि, भोजनादौ धने सति ॥ मन्ये मन्दमतिस्सोत्र, देवाय धनमर्जति ॥५४॥ अज्ञातभाजने नाद्याद्, जातिभ्रष्टगृहेऽपि च ॥ अज्ञातानि निषिद्धानि, फलान्यन्नानि संत्यजेत् ॥५५॥ बालस्त्रीभ्रूणगोहत्याकृतामाचारलोपिनाम् ॥ स्वगोत्रभेदिनां पंक्तौ, जानन्नोपवि

कमावे छे? ॥५४॥ ॥ अजाणी थाली प्रमुख भाजनमां जमवुं नही, जे ज्ञाति थकी भ्रष्ट थयो होय तेने घेर जमवुं नही. अजाण्यां, भगवंतें निषेध्यां एवां फल तथा अन्न छांडे, त्याग करे ॥ ५५ ॥ ॥ जे पंडित होय ते, १ बाल, २ स्त्री, ३ गर्भ, ४ गो, एनी

हत्याना करनार, आचारना लोपनार, अथवा पोताना कुलनो त्याग करनार एटला
नी पंक्तिमां जाणतो थको जमवा बेसे नही ॥ ५६ ॥ ॥ मदिरा, मांस, माखण,
मधु, पांच जातिनां उंबरनां झाडनां फल, अनंतकाय, सर्व जातिनां अजाण्यां फल त
था रात्रें भोजन ए सर्वदा वर्ज्य छे ॥ ५७ ॥ ॥ काचो गोरस ते छास दहिं इत्यादि

शेत्सुधीः ॥ ५६ ॥ मद्यं मांसं नवनीतं, मधूडुंबरपञ्चकम् ॥ अज्ञातकायमज्ञा
तफलं रात्रौ च भोजनम् ॥५७॥ आमगोरससंयुक्तं, द्विदलं पुष्पितौदनम् ॥ द
ध्यद्दोद्धितयातीतं, कुथितान्नं च वर्जयेत् ॥५८॥ जन्तुमिश्रं फलं पुष्पं, पत्रं चा
न्यदपि त्यजेत् ॥ संधानमपि संसक्ति, जिनधर्मपरायणः ॥ ५९ ॥ ॥ ॥

तेणें करी सहित कठोल चीज, सडी गयेलुं अन्न, बे दिवस उपरांतनुं दहीं तथा को
हीगयेलुं कुत्सित अन्न ए सर्व वर्जन करे ॥ ५८ ॥ ॥ श्रीजिन धर्मने विषे रक्त थयेलो
श्रावक फल, फूल तथा पान अने बीजा पण जे पदार्थ जीवादिसहित होय ते सर्व

त्यागे, न खाय; तथा अथाणां प्रमुख बावीश अजक्ष्य ठंडे ॥ ॥ ५ए ॥ ॥ जोज
न करतां तथा वडीनीत करतां घणो वखत लगाडे नही, तथा पाणी पीवुं, अने स्ना
न करवुं, ए बे वानां स्थिरतायें हलवे हलवे करीयें ॥ ६० ॥ ॥ जोजननी आदिमां
पाणी पीवुं ते विष सरखुं ठे, तथा जोजननें अंतें पाणी पीवुं ते शिला सरखुं ठे, अने

जोजनं विण्विमोक्षं च, कुर्यादतिचिरं नहि॥वारिपानं तथा स्नानं, पुनः स्थिरतया
सृजेत् ॥६०॥ जोजनादौ विषसमं, जोजनान्ते शिलोपमम् ॥ मध्ये पीयूषसदृशं,
वारिपानं जवेत्रिधा ॥६१॥ अजीर्णे जोजनं जह्यात्, कालेऽश्नीयाच्च साम्यतः ॥
जुक्तोत्थितो वक्त्रशुद्धिं, पत्रपूगादिजिः सृजेत् ॥ ६२ ॥ विवेकवान्न ताम्बूलम

जोजननी वचमां पाणी पीवुं ते अमृत सरखुं ठे. ए रीते पाणी पीवानुं फल जाणवुं
॥६१॥ ॥अजीर्ण होय तेवारें जोजन न करवुं, जेवुं रुचे तेवुं जोजन कालें करे. जमी
उठ्या पठी मुख धोइने पान सोपारीयें करी मुख शुद्ध करे ॥ ६२ ॥ ॥विवेकी पुरुष

मार्गे चालतो थको तंबोल न खाय, तथा पुण्यवंत होय ते आखी सोपारी वगेरेने दांतें करी जांजे नही ॥६३॥ ॥ जम्या पछी उनालाविना निद्रा करे नही, केमके, दिवसें सूवा थकी शरीरने विषे रोगोत्पत्ति थाय ॥ ६४ ॥ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे द्वितीय

श्रीयाद्विचरन्पथि ॥ पूगाद्यमक्तं दंतैर्दलयेन्न तु पुण्यवित् ॥ ६३ ॥ जोजनादनु नो स्वप्याद्विना ग्रीष्मं विचारवान् ॥ दिवा स्वपयतो देहे, जायते व्याधिसंजवः ॥ ६४ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे द्वितीयवर्गः समाप्तः ॥ २ ॥ अथ तृतीयव र्गप्रारंजः ॥ ततो गेहे श्रियं पश्यन्, विद्वजोष्ठीपरायणः ॥ सुतादिभ्यो ददच्छिक्षां, सुखं तिष्ठेद्वटीद्वयम् ॥ १ ॥ आत्मायत्ते गुणग्रामे, दैवायत्ते धनादिके ॥ वि

वर्ग संपूर्ण॥२॥तेवार पछी घरनी शोजाप्रत्यें जोतो थको पंडितनी साथे वातचित कर तो, पुत्रादिकने शीखामण देतो सुखें समाधें बे घडी पर्यंत घरने विषे रहे ॥ १ ॥ गुणनो समूह पोताने वश छे, अने धनादिक तो जाग्यने हाथें छे, एम समस्त

तत्त्व जाण्यां छे जेणे एवा माणसने गुणनी हाणी न थाय ॥ २ ॥ ॥ कुलहीन माणस पण गुणें करी उत्तमता पामे, जेम कचराथी उत्पन्न थयेलुं कमल मस्तकें चडे छे, अने कचरो छे ते पगें घसाय छे ॥ ३ ॥ ॥ उत्तम माणसनी कोइ खाण नथी, संसारमां उत्तम माणसनुं कोइ कुल नथी, मनुष्य मात्र पोताने स्वभावें गुणेकरीज

ज्ञाताखिलतत्त्वानां, नृणां न स्याद्गुणच्युतिः ॥२॥ गुणैरुत्तमतां याति, वंशहीनोऽपि मानवः ॥ पंकजं ध्रियते मूर्ध्नि, पङ्कः पादेन घृष्यते ॥ ३॥ न काचिदुत्तमानां स्यात्, कुलं वान्यगतिः क्वचित् ॥ प्रकृत्या मानवा एव, गुणैर्यांति जगन्नुतिम् ॥४॥ सत्वादिगुणसंपन्नो, राज्यार्हः स्याद्यथा नरः ॥ एकविंशतिगुणः स्याद्धर्मार्हो मानवस्तथा ॥ ५ ॥ अक्षुद्रहृदयः सौम्यो, रूपवान् जनवल्लभः ॥ अ

जगतमां स्तववा योग्य थाय छे ॥ ४ ॥ ॥ सत्वादिक गुणें संपन्न पुरुष ते जेम राज्ययोग्य होय, तेम श्रावकना एकवीश गुणें सहित माणस ते धर्मयोग्य होय ॥ ५ ॥ ॥ जेनुं क्षुद्र हृदय न होय ते अक्षुद्र नामा प्रथम गुण, २ सौम्य होय,

३ रूपवंत होय, ४ सर्वलोकने वाहालो होय, ५ क्रूर न होय, ६ संसारथी बीये, ७ मूर्ख न होय, ८ सदा दाक्षिण्यवंत होय ॥ ६ ॥ ॥ ९ लज्जावंत होय, १० दया सहित होय, ११ कोइ ऊपर राग द्वेष न करे, १२ सौम्य नजर होय, १३ गुणनो रागी होय, १४ भली धर्मकथा सहित होय, १५ भला परिवारवालो होय, १६ दीर्घदृष्टि

क्रूरो भवभीरुश्चाशठो दाक्षिण्यवान् सदा ॥६॥ अपत्रपी च सदयो, मध्यस्थः सौम्य एव च ॥ गुणरागी सत्कथश्च, सुपक्षो दीर्घदर्श्यपि ॥ ७ ॥ वृद्धानुगतो विनीतः, कृतज्ञः सुहितोऽपि च ॥ लब्धलक्षो धर्मरत्नयोग्य एभिर्गुणैर्भवेत् ॥ ८ ॥ प्रायेण राजदेशस्त्रीभक्तवार्तां त्यजेत्सुधीः ॥ ततो नार्थागमः कश्चित्,

ते ठंडो विचार करनार होय ॥ ७ ॥ ॥ १७ वृद्ध माणसने माननार होय, १८ विनयवंत होय, १९ करेला उपकारनो जाण होय, २० परम हितार्थ होय, २१ सर्व वातना भेदमां समजे, ए एकवीश गुणें करी सहित श्रावक धर्मरत्ननें योग्य होय ॥८॥ जे पंडित ते प्रायें राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भक्तकथानो त्याग करे, केमके,

तेथी अर्थप्राप्ति कंइ थती नथी, एटलुंज नही, परंतु सामो अनर्थ उपजे छे ॥९॥ ॥ रूडा मित्र साथें जाइ साथें मांहोमांहे धर्मवार्त्ता करे, जे धर्मनां शास्त्र जाणतो होय तेनी पासें बेसे, तत्त्वना जाव जाणे, विचारे ॥ १० ॥ ॥ जेथकी पापनी बुद्धि ऊप जे तेनी संगति न करे, कोइ क्रोधने वचनें कहे तोपण पोतें न्यायमार्ग न मूके ॥११॥

प्रत्युतानर्थसंजवः ॥९॥ सुमित्रैर्बन्धुजिः सार्द्धं, कुर्याद्धर्मकथामपि ॥ तद्विदा सह शास्त्रार्थरहस्यानि विचारयेत् ॥ १० ॥ पापबुद्धिर्जवेद्यस्माद्वर्जयेत्तस्य संगतिम् ॥ कोपेन वचनेनापि, न्यायं मुञ्चेन्न कर्हिचित् ॥ ११ ॥ अवर्णवादकस्यापि, न वदेडुत्तमाग्रणीः ॥ पित्रोर्गुरोः स्वामिनोऽपि, राजादिषु विशेषतः ॥ १२ ॥ मूर्खैर्डुष्टैरनाचारैर्मलिनैर्धर्मनिन्दकैः ॥ डुःशीलैर्लोजिजिश्चौरैः, संगतिं वर्जयेद

जे उत्तम मनुष्य पंडित ते कोइनो अवगुण कहे नही; माता, पिता, गुरु, शेठ अने स्वामीना अवगुण बोले नही, वली विशेषें राजादिकनो अवगुण न बोले ॥ १२ ॥ मूर्खनी, डुष्टनी, अनाचारीनी, मलीननी, धर्मना निंदकनी, कुशीलवालानी, लोजी

नी, चोरनी एटलानी संगति वर्जन करे ॥ १३ ॥ ॥ अजाण्या माणसनी प्रशंसा करवी, अजाण्या माणसने पोताना घरमां रहेवा स्थानक आपवुं, अजाण्या कुलसाथें सगाइ करवी, अजाण्या माणसने चाकर राखवो, पोताथी मोहोटा माणस उपर कोप करवो, पोताथी मोटा वैरी साथे मत्सर राखवो, गुणवान् साथें विवाद करवो, पोताथी मोहोटो चाकर राखवो, माथें देवुं करीने धर्म करवो, व्याजें उठीनुं उधारुं धन आलम् ॥ १३ ॥ अज्ञातस्योत्कीर्तनं यत्, स्थानदानं तथाविधम् ॥ अज्ञातकुलसंबन्धोऽज्ञातभृत्यस्य रक्षणम् ॥ १४ ॥ महत्सु कोपकरणं, महता विग्रहस्तथा ॥ विवादो गुणिभिः सार्धं, स्वोच्चभृत्यस्य संग्रहः ॥ १५ ॥ ऋणं कृत्वा धर्मपी मागवुं नही, स्वजन साथें विरोध करवो, पारका माणस साथें स्नेह प्रीति राखवी, मोक्षने अर्थे उंचे चढवुं, चाकरने दंडीने धन जोगववुं, दारिद्र आवे थके न्याइ बांधवनो आश्रय करवो, पोते पोताना गुणनां वखाण करवां, पोतें वात कही पोते ज हसवुं, जे ते वस्तु खावी, ए सर्व आलोकमां तथा परलोकमां विरुद्ध एवां मूर्खनां

लक्षणनो तदन त्याग करवो ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥
न्यायें धन उपार्जे, चर्यायें चालतो थको देश विरुद्ध अने कालविरुद्ध कार्यने छांडे,
त्यागे; राजाना वैरीनी संगत न करे, घणा माणस साथें विरोध न करे ॥१९॥ ॥ कुल

कृत्यं, कुसीदस्याप्ययाचनम् ॥ विरोधः स्वजनैः सार्धं, मैत्री चापि परैर्नरैः ॥
॥१६॥ ऊर्ध्वारोहणमोक्षार्थं, मुक्तिर्भृत्यस्य दंडनात् ॥ दौस्थ्ये बंधोराश्रयश्च,
स्वयं स्वगुणवर्णनम् ॥ १७ ॥ उक्त्वा स्वयं च हसनं, यस्य कस्यापि भक्षणम् ॥
एतानि च विरुद्धानि, मूर्खचिह्नानि संत्यजेत् ॥ १८ ॥ न्यायार्जितधनश्चर्या,
मदेशकालकौ त्यजेत् ॥ राजविद्वेषिभिः संगं, विरोधं च गणैः समम् ॥१९॥ अ
न्यगोत्रैर्विवाहं च, शीलाचारकुलैः समैः ॥ सुप्रातिवेश्मके स्थाने, कृतवेश्मान्वि

अने आचार जे शील ते जेनां पोता सरखां होय एवा अन्यगोत्र साथें विवाह करे,
वली भला पाडोशीने स्थानकें घर बनावीने बांधव सहित रहे॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥

उपद्रवना स्थानकनो त्याग करे, तथा श्रावक योग्य खरच करे, द्रव्यने अनुसारें वस्त्रा
दिक पहेरवां, लोक निंदा करे ते काममां प्रवर्ते नही ॥ २१ ॥ ॥ देशने आचा
रें चालतो पोतानो धर्म न मूके, जे पोताने आशरे रह्यो होय तेनुं हित करे, पोतानुं
बल अने निर्बलपणुं जाणे, वली हित अने अहितनी वातने विशेषें जाणे ॥ २२ ॥
तः स्वकैः ॥ २० ॥ उपद्रुतस्य त्यजनं, यथार्यं च व्ययं चरेत् ॥ वेषं वित्तानुसारे
णाप्रवृत्तो जनगर्हिते ॥२१॥ देशाचारं चरन् धर्ममसुंचन्नाश्रिते हितः ॥ बला
बलं विजानन्, स्वं विशेषाच्च हिताहितम् ॥ २२ ॥ वशीकृतेन्द्रियो देवे, गुरौ
च गुरुभक्तिमान् ॥ यथावत्स्वजने दीनेऽतिथौ च प्रतिपत्तिकृत् ॥ २३ ॥ एवं
विचारचातुर्यं, रचयंश्चतुरैः समम् ॥ कियतीं क्रामयेद् वेलां, शृण्वन् शास्त्राणि
पांच इंद्रियनें वश करे, देव गुरुनें विषे घणी भक्ति राखे, यथायोग्यपणे स्वजननी,
दीननी अने अतिथीनी सेवा करे ॥२३॥ एवा कह्या जे विचार तेनी चतुराई प्रत्यें करे,
शास्त्रनें सांभलतो अथवा भणतो थको, चतुर माणसनी साथें केटलोएक वखत गमा

वे ॥ २४ ॥ ॥ वलतो द्रव्य कमाववानो उपाय करे, परंतु जे नाग्यमां हशे ते मलशे एम कहीनें बेसी न रहे, केमके, उद्यम कस्या विना नाग्यवंत पुरुषनुं नाग्य केवारें फले नही, माटे उद्यम करवो ॥ २५ ॥ ॥ शुद्ध चोखे व्यवहारें करी व्यापार करतो सदै व रहे; खोटां तोल, खोटां माप, खोटा लेख प्रत्यें वर्जे ॥ २६ ॥ ॥ १ लीहालानुं

वा नणन् ॥२४॥ कुर्वन्नर्थार्जनोपायं, न तिष्ठेद्दैवतत्परः ॥ उपक्रमं विना नाग्यं, पुंसां फलति न क्वचित् ॥२५॥ शुद्धेन व्यवहारेण, व्यवसायं सृजन् सदा॥कूट तोलं कूटमानं, कूटलेख्यं च वर्जयेत् ॥२६॥ अंगारवनशकटनाटकस्फोटजीवि काम् ॥ दंतलाक्षारसकेशविषवाणिज्यकानि च ॥ २७ ॥ यंत्रपीडां निर्लांछन

कर्म, २ वन कर्म, ३ गाडानुं कर्म ४ नाडानुं कर्म, ५ धरती फोरूवानुं कर्म, ६ दांत कुवाणिज्य, ७ लाख कुवाणिज्य, ८ घृत तेल मधादिकनुं कुवाणिज्य, ए केश कुवा णिज्य अने १० विष कुवाणिज्य एना व्यापारनो त्याग करे ॥२७॥ ॥११ घाणीयंत्रप्रमुख

१२ बलद समारवा, कर्ण कंबल छेदवा, १३ असती ते दुष्टदासी श्वान मार्जार प्रमुख पापीजीवोनुं पोषण करवुं, १४ दव लगाडवा, अने १५ सर, द्रह तथा तलावादिकना शोषण करवा ए पन्नरे कर्मादान पाप जाणीनें छांडवा ॥ २८ ॥ ॥ लोखंड, महुडा नां फूल, मदिरा, मधु प्रत्ये पण तेमज वली कंदमूल पान प्रमुख वस्तु व्यापार कर

न, मसतीपोषणं तथा ॥ दवदानं सरःशोष इति पंचदश त्यजेत् ॥ २८ ॥ ॥ लोहं मधुकपुष्पाणि, मदनं माक्षिकं तथा ॥ वाणिज्याय न गृह्णीयात्, कंदान् पत्राणि वा सुधीः ॥२९॥ न रक्षेत्फाल्गुनादूर्ध्वं, न तिलानतसीमपि ॥ गुडटुप्परकादीनि, जन्तुघ्नानि घनागमे ॥३०॥ शकटं वा बलीवर्दान्, नैव प्रावृषि वाहयेत् ॥

वाने अर्थे ग्रहण करे नही ॥ २९ ॥ ॥ जे डाह्यो श्रावक ते फागुण मास उपरांत तिल, अलशी, गोल, टोपरा प्रमुखने, घणा जीवोनो घात जाणीने चोमासे न राखे ॥ ३० ॥ गाडी अथवा पोठीया प्रमुख चोमासामां खेडावे नही, तथा जीवनी हिंसा

नुं प्रायें कारण एवुं खेत्रवाडीनुं कर्म न करे ॥ ३१ ॥ ॥ व्याजवी मूल आवते व
स्तु वेचवी, अधिको अधिको लाभ वांछवो नहीं. केमके, घणुं मूल खावा जातां प्रायें
मूलगा नाणानो पण नाश थाय ॥ ३२ ॥ ॥ कोईने उधारें आपीयें नही. घणो
लाभ थाय तोपण घरेणा राख्या विना लोभेंकरी निश्चे थकी कोइने व्याजे नाणुं
प्राणिहिंसाकरं प्रायः, कृषिकर्म न कारयेत् ॥ ३१ ॥ विक्रीणीयात्प्राप्तमूल्यं, वां
छेन्नैवाधिकं ततः ॥ अतिमूल्यकृतां प्रायो, मूलनाशः प्रजायते ॥३२॥ उद्धारकं न
प्रदद्यात्, सति लाभे महत्यपि ॥ ऋते ग्रहणकाल्लोभान्न प्रदद्याद्धनं खलु ॥ ३३ ॥
जानन्स्तेयाहृतं नैव, गृह्णीयाद्धर्ममर्मवित् ॥ वर्जयेत्तत्प्रतीरूपं, व्यवहारं विवेक
वान् ॥ ३४ ॥ तस्करैरंत्यजैर्धूर्तै, र्मलिनैः पतितैः समम् ॥ इहामुत्र हितं वांछ
आपियें नही ॥ ३३ ॥ ॥ चोरीनी वस्तु आवी जाणीने धर्मनो जाण पुरुष वर्जे,
तथा सरस निरस वस्तु भेल सेल करवी ते तत्प्रतिरूप व्यापार कहीयें, ते व्यापार
प्रत्यें विचारवान् पुरुष वर्जे ॥ ३४ ॥ ॥ चोरसाथें, चांडालसाथें, धूर्त्तसाथें मलिन

अंतःकरणवाला साथें, पापोयें करी पतित थयेला साथें, आलोक अने परलोकनेविषे हितनी इच्छा करनार प्राणीयें कोई पण प्रकारना व्यवहारनो त्याग करवो ॥ ३५ ॥ पोतानी वस्तु वेचतो थको असत्य न बोले, सत्य बोले, बीजानी वस्तु लेतो थको संचकार दीधो ते प्रत्यें लोपे नही ॥ ३६ ॥ ॥ जे डाह्यो होय ते अणदीठी वस्तुनो न्, व्यवहारं परित्यजेत् ॥३५॥ विचारवान् विक्रीणानो वदेत् कूटक्रयं नहि ॥ आददानोऽन्यसत्कानि, सत्यंकारं न लोपयेत् ॥ ३६ ॥ अदृष्टवस्तुनो नैव, साटकं दृढयेत्सुधीः ॥ स्वर्णरत्नादिकं प्रायो, नाददीतापरीक्षितम् ॥ ३७ ॥ राजतेजो विना न स्यादनर्थापन्निवारणम् ॥ नृपाननुसरेत्तस्मात्, पारवश्यमनाश्रयन् ॥३८ ॥ तपस्विनं कविं वैद्यं, मर्मज्ञं भोज्यकारकम् ॥ मंत्रकं निजपूज्यं च, साटो सहसा निश्चित नही करे. सोनुं, रुपुं अने रत्न ए प्रायें अणपरख्या लेवा नहि ॥ ३७ ॥ ॥ राजाना तेज विना अनर्थ अने आपदानो नाश न होय, माटे राजादिकनो आसरो लेवो, पण परवशपणुं छांडवुं, पोताने वश रहेवुं ॥ ३८ ॥ जे पंडित

होय तेणे १ तपस्वी, कवीश्वर, वैद्य, मर्मना जाण, रसोइ करनार, मंत्रवादी अने पोताना पूजनीक एटलाने कोपाववुं नही ॥ ३९ ॥ ॥ द्रव्यनो आर्थी द्रव्य पेदा करवामां तत्पर थको घणा क्लेश तथा धर्मनुं अतिक्रमण करे नही, नीचनी सेवा प्रत्यें आचरे नही, तथा विश्वासघात करवो ते प्रत्यें आचरे नही ॥ ॥ ४० ॥

कोपयेज्जातु नो बुधः ॥ ३९ ॥ अतिक्लेशं च धर्मातिक्रमणं नीचसेवनम् ॥ विश्वस्तघातकरणं, नाचरेदर्थतत्परः ॥ ४०॥ आदाने च प्रदाने च, न कुर्याद्वक्त लोपनम् ॥ प्रतिष्ठां महतीं याति, नरः स्ववचने स्थिरः॥४१॥ धीरः स्ववस्तुनाशेऽपि, पालयेद्धि निजां गिरम् ॥ नाशयेत् स्वल्पलाभार्थे, वसुवत्स्यात्स दुःखि

लेवड देवड करतां थकां पोताना बोलनो लोप न करे, पण पोतानुं वचन पाले. केमके, जे माणस पोताना वचने स्थिर होय, ते माणस घणी प्रतिष्ठा प्रत्यें पामे ॥ ४१ ॥ ॥ पंडित होय ते सर्व वस्तुनो नाश थतां पण पोतानी वाचा

प्रत्यें पाले, थोडा लाजने अर्थें जे पोतानुं बोल्युं न पाले, ते वसुराजानी पेरें दुःख पामे ॥ ४१ ॥ ॥ एवा व्यवहारने विषे दिवसनो चोथो प्रहर गमावे, तेवार पछी सांजें वालु करवाने पोताना घर प्रत्यें जाय ॥ ४२ ॥ ॥ एकासणुं, आंबिल, उप वासनुं जेणें पच्चरकाण कीधुं होय ते पडिक्कमणुं करवाने संध्याकाले मुनि महाराजने

तः ॥ ४१ ॥ एवं व्यवहारपरो, यामं तुर्यं च यापयेत् ॥ वैकालिककृते गछेदथो मंदिरमात्मनः ॥ ४२ ॥ एकाशनादिकं येन, प्रत्याख्यानं कृतं भवेत् ॥ आवश्य ककृते सायं, मुनिस्थानमसौ व्रजेत् ॥ ४४ ॥ दिवसस्याष्टमे भागे, कुर्याद्वैकालि कं सुधीः॥ प्रदोषसमये नैव, निश्चयद्यान्नैव कोविदः॥४५॥ चत्वारि खलु कर्माणि, संध्याकाले विवर्जयेत् ॥ आहारं मैथुनं निद्रां, स्वाध्यायं च विशेषतः ॥ ४६ ॥

स्थानकें जाय ॥ ४४ ॥ ॥ दिवसने आठमे भागे एटले चार घडी दिवस छते वालु करे, पण संध्या वेलाये वालु करे नही, वली डाह्यो माणस रात्रे सर्वथा जमे नही ॥ ४५ ॥ ॥ १ आहार, २ स्त्रीसेवा. ३ निद्रा अने ४ विशेषे करी स्वाध्याय ए चार

कर्म निश्चेंकरी संध्याकाले वर्जन करे ॥ ४६ ॥ ॥ जो संध्याकाले आहार करे तो व्याधि उपजे, मैथुन सेवा करे तो गर्भ दुष्ट थाय, निद्रा करे तो भूत प्रेत पिशाचनी पीडा थाय, अने जो सद्याय करे तो बुद्धिनी हीनता थाय ॥ ४७ ॥ ॥ दिवस चरिमनुं पच्चरकाण वालु कीधा पछी करे. दुविहार, तिविहार, चउविहार प्रत्यें वर्जो, पच्च

आहाराजायते व्याधिर्मैथुनाद्गर्भदुष्टता ॥ भूतपीडा निद्रया स्यात्, स्वाध्याया बुद्धिहीनता ॥ ४७ ॥ प्रत्याख्यानं दुश्चरिमं, कुर्याद्वैकालिकादनु ॥ द्विविधं त्रिविधं वापि, चाहारं वर्जयेत्समम् ॥ ४८ ॥ अह्नो मुखेऽवसाने च, यो द्वे द्वे घटिके त्यजेत् ॥ निशाभोजनदोषज्ञो, विज्ञेयः पुण्यभाजनम् ॥ ४९ ॥ करोति वि

स्काण करे ॥४८॥ ॥ रात्रि भोजन संबंधि दोषना जाण होय ते प्रभातवेलानी तथा सांझ वेलानी बे बे घडी वर्जे. रात्रिभोजनना दोषनो जाण होय ते पवित्र पुण्यनुं ठाम जाणवो ॥ ४९ ॥ ॥ जे सदा सर्वदा रात्रिभोजनने विषे विरति एटले पच्चस्का

ण करे, ते पुरुषने धन्य छे, कारण के ते पुरुषनुं अर्धुं आयुष्य अवश्य उपवासमां जा य, अर्थात् ते पुरुषनुं एक वर्षमां अर्धुं वर्ष उपवासमां जाय ॥ ५० ॥ ॥ जे मनुष्य दिवसें तथा रात्रिने विषे खातो थको रहे, ते मनुष्य प्रगटपणे सींगडा पूछडा रहित एवा पशु एटले ढोरसमान जाणवो ॥ ५१ ॥ ॥ रात्रिभोजनना करवाथी ते मनु

रतिं धन्यो, यः सदा निशि भोजनात् ॥ सोऽर्द्धं पुरुषायुषस्य, स्यादवश्यमुपोषि तः ॥ ५० ॥ वासरे च रजन्यां च, यः खादन्नवतिष्ठते ॥ श्रृंगपुछपरिभ्रष्टः, स स्पष्टं पशुरेव हि ॥ ५१ ॥ उलूककाकमार्जारगृध्रशंबरशूकराः ॥ अहिवृश्चिक गोधाश्च, जायंते रात्रिभोजनात् ॥५२॥ नैवाहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्धं देवता

ष्य घूअड, काक, बिलाड मांजार, गृध, सांबर, सूअर, सर्प, विंछु अने गिरोलीना अव तार पामे ॥ ५२ ॥ ॥ रात्रें होम न करवो, स्नान न करवुं, श्राद्ध न करवुं, देवपूजा न करवी, दान पण रात्रें दीधुं निःफल थाय, माटे न करवुं, अने विशेषे भोजन तो

नज करवुं ॥५३॥ ॥ न्यायमार्गें शोजतो एवो पुरुष जो ए प्रकारें दिवसना चारे प्रहर पूरण करे, तो विनयें करीने डाह्यो ते पुरुष अक्षय मोक्षना सुखनो नजनार थाय ॥ ५४ ॥ इति आचारोपदेशे तृतीय वर्ग संपूर्ण ॥ ३ ॥ ॥ थोडे पाणीयें पग, हाथ

र्चनम् ॥ दानं वा विहितं रात्रौ, नोजनं तु विशेषतः ॥ ५३॥ एवं नयेद्यश्चतुरोऽपि यामान्, नयान्निरामः पुरुषो दिनस्य ॥ नयेन युक्तो विनयेन दक्षो, नवे दसावच्युतसौख्यनाग् वै ॥ ५४ ॥ इति आचारोपदेशे तृतीयवर्गः ॥ ३ ॥ ॥ अथ चतुर्थवर्गप्रारंनः ॥ प्रक्षाल्य स्वल्पनीरेण, पादौ हस्तौ तथा मुखम् ॥ धन्यंमन्यः पुनः सायं, पूजयेच्छ्रीजिनं मुदा ॥ १ ॥ सक्रियासहितं ज्ञानं, जायते मोक्षसाधकम् ॥ जानन्निति पुनः सायं, कुर्यादावश्यकीं क्रियाम् ॥ २ ॥ ॥

तेमज मुखने पखालीने आत्माने धन्य मानतो वली श्रीजिनेश्वरनी हर्षेकरी पूजा करे ॥ १ ॥ ॥ नली क्रिया सहित जे ज्ञान ते मोक्षनुं साधन थाय, एवुं जाणतो थ

को सांजे पडिक्कमणानी क्रिया प्रत्यें करें ॥ २ ॥ ॥ जेम स्त्री अने जोजनना सुखनो जाण होय ते स्त्रीने जोगव्या विना अने जोजन खाधा विना मात्र जाणवाथीज सुखी न थाय, तेम क्रिया विना एकलुं ज्ञान फलदायक नथी. क्रिया लोकने विषे फलनी आ पनारी छे, माटे मात्र नाम जाण्याथीज सुखी न थाय जेवारें क्रिया करे तेवारें जोगवी क

क्रियैव फलदा लोके, न ज्ञानं फलदं मतम् ॥ यतः स्त्रीजक्ष्यजेदज्ञो, न ज्ञानात् सुखितो जवेत् ॥३॥ गुर्वजावे निजगृहे, कुर्वीतावश्यकं सुधीः॥ विन्यस्य स्थापना चार्यं, नमस्कारावलीमथ ॥४॥ धर्मात्सिद्धि सर्वकार्याणि, सिध्यन्तीति विदन् हृदि॥

हेवाय, तेथी सुखी थाय ॥ ३ ॥ ॥ पंडित पुरुष जो गुरुनो योग न होय, तो पोताना घरने विषे स्थापनाचार्य मांमीने, थापना न होय तो नोकरवाली थापीने पडिक्कमणुं करे ॥ ४ ॥ ॥ धर्मथी सघला कार्यनी सिद्धि पामिये, एवुं हृदयने विषे जाणतो थ को सदा सर्वदा धर्मने विषे चित्त छे जेनुं एवो ते पुरुष धर्मनी वेलाने उल्लंघे नही

॥ ५ ॥ ॥ ते वेला वोल्या पछी अथवा ते वेला आव्यानी पहेलांज जे जपादिक धर्म कर्म करीयें, ते सर्व ऊखर खेत्रने विषे धान्य वाव्यानी परे निःफल थाय ॥ ६ ॥ ॥ पंमित छे ते सघली विधि प्रत्यें पूरण करीने धर्मनी क्रिया प्रत्यें करे; परंतु जे हीन ए टले उंछुं अथवा अधिकुं करे ते मंत्रनी विधिनी परे दुःखीयो थाय, तेमज क्रिया आघी

सर्वदा तद्गतस्वान्तो, धर्मवेलां न लंघयेत् ॥५॥ अतीतानागतं कर्म्म, क्रियते य ज्जपादिकम् ॥ वापिते चोषरे क्षेत्रे, धान्यवन्निष्फलं भवेत् ॥ ६॥ विधिं सम्यक् प्रयुञ्जित, कुर्वन्धर्मक्रियां सुधीः॥ हीनाधिकं सृजन्मंत्रं, विधिवद् दूषितो भवेत् ॥ ७ ॥ धर्मानुष्ठानवैतथ्ये, प्रत्युतानर्थसंभवः ॥ रौद्ररंध्रादिजनकाद्दुष्प्रयुक्ता

पाछी करतां पण दुःखी थाय ॥ ७ ॥ ॥ धर्म करतां आघी पाछी क्रिया करतां सामो अनर्थ ऊपजे, जेम माठी रीते कीधुं औषधादिक ते उलटुं आकरा चांदा प्रमुख रो गने पेदा करे, तेम धर्म करतां जो क्रिया आघी पाछी करे तो सामो अनर्थ ऊपजे

॥ ८ ॥ ॥ वैयावच्च कीधाथी अक्षय श्रेय मंगलिक थाय, बाहुबली बाहुनुं बल पाम्यो, चक्रवर्त्तीं सरखाने हराव्या, ते वैयावच्चना प्रभावथीज थयुं, एम जाणीने पंडित श्रावक पडिक्कमणुं करीने पछी गुरुनी विसामणा ते वैयावृत्त्य प्रत्त्यें करे ॥ ए ॥ वस्त्रें करी मुखें मुखकोश बांधीने अणबोलतो, सर्व अंगना खेद प्रत्यें हरतो पोताना

दिवौषधात् ॥८॥ वैयावृत्त्ये कृते श्रेयोऽक्षयं मत्वा विचक्षणः ॥ विहितावश्यकः श्राद्धः, कुर्याद्विश्रामणां गुरोः ॥ ए ॥ वस्त्रावृतमुखो मौनी, हरन् सर्वांगजं श्रमम् ॥ गुरुं संवाहयेद्यत्नात्, पादस्पर्शं त्यजन्निजम् ॥ १० ॥ ग्रामचैत्ये जिनं नत्वा, ततो गच्छेत्स्वमंदिरम् ॥ प्रक्षालितपदः पंचपरमेष्ठिस्तुतिं स्मरेत् ॥ ११ ॥ अर्हन्तः शरणं संतु, सिद्धाश्च शरणं मम ॥ शरणं जिनधर्मो मे, साधवः शर

पगनो फरस त्यजतो एटले गुरुने पग अण लगाडतो यत्नथी गुरुनी चरणसेवा करे ॥ १० ॥ ॥ गाममां देरासरें भगवंतने नमीने वलतो पोताने घरे जाय, तिहां पग धोइने पंच परमेष्ठी नवकार प्रत्यें गणे ॥ ११ ॥ ॥ मुजने श्रीअरिहंत शरण हो

य, वली मुजने श्रीसिद्ध शरण होय, मुजने श्रीकेवलिभाषित जिनधर्म शरण होय, वली मुजने सदैव श्रीसाधु शरण होय ॥ १२ ॥ मंगलिकनो करनार, दुःखथी राखनार, जे शील रूप संनाहने पहेरीने कंदर्पने उतावलो वेगे करीने जीततो हवो, ते श्रीथुलिभद्रने नमस्कार हो ॥ १३ ॥ ॥ गृहस्थ थकां पण जेने महोटी शीलनी लीला

णं सदा ॥ १२ ॥ नमः श्रीथूलिभद्राय, कृतभद्राय तायिने ॥ शीलसन्नाहमाबिभ्रद्, यो जिगाय स्मरं रयात् ॥ १३ ॥ गृहस्थस्यापि यस्यासन्, शीललीला महत्तराः॥ नमः सुदर्शनायास्तु, दर्शनेन कृतश्रिये ॥ १४॥ धन्यास्ते कृतपुण्यास्ते, मुनयो जितमन्मथाः ॥ आजन्मनिरतीचारं, ब्रह्मचर्यं चरंति ये ॥१५॥

थइ, भलुं समकित तेणे करी कीधी छे शोभा जेणे एवा श्रीसुदर्शन शेठने नमस्कार हो ॥ १४ ॥ ॥ जेमणे कंदर्प जीत्यो छे, वली जन्मथी मांडी अतिचारना दोष रहित जे शील प्रत्यें पाले छे, ते धन्य पुण्यना करनार यति जाणवा ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

अशक्त अने घणां अनवद्यकर्म करनारो, सर्व प्रकारें नथी जीती इंद्रिय जेणे एवो पुरुष, एक दिवस पण उत्तम एवा शीलने धारण करवाने समर्थ थातो नथी ॥ १६ ॥ ॥ रे संसार समुद्र! मदयुक्त छे नेत्रो जेनां एवी स्त्रीयोरूप दुस्तर खराबा जो वच्चे न आवे, तो तारो पार पामवानो मार्ग बहु वेगलो नथी ॥१७॥ ॥ जूठुं बोलवुं, साहसपणुं, माया ते

निःसत्वो भूरिकर्मा हि, सर्वदाप्यजितेन्द्रियः॥ नैकाहमपि यः शक्तः, शीलमाधातुमुत्तमम्॥ १६ ॥ संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी ॥ अंतरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥१७॥ अनृतं साहसं माया, मूर्खत्वमतिलोभिता ॥ अशौचं निर्दयत्वं च, स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः॥१८॥ या रागिणि विरागिणी,

कपट, मूर्खपणुं, घणो लोभ, अपवित्रपणुं, दया रहितपणुं ए दोष स्त्रीना स्वभावेज होय छे ॥ १८ ॥ ॥ जे स्त्री रागी पुरुष उपर पण वैरागी थाय, ते स्त्रीने कोण भोगवे? जे पंडित होय ते मुक्ति रूपिणि स्त्रीनेज भोगवे; केमके, मुक्ति रूपिणी स्त्री जे

छे, ते वैरागी ऊपर रागिणी छे ॥ १ए ॥ ॥ एवुं स्त्रीनुं असारपणुं चिंतवतो थोडी वेला तो समाधिवंत थको निद्रा करे, पण बुद्धिवंत धर्मना पर्वने विषे मैथुन एटले स्त्रीनो नोग न करे ॥ २० ॥ ॥ वळी बुद्धिवंत होय ते घणी वेला पर्यंत निद्रानुं से

स्त्रियस्ताः कामयेत कः ॥ सुधीस्तां कामयेन्मुक्तिं, या विरागिणि रागिणी ॥ ॥ १ए ॥ एवं ध्यायन् नजेन्निद्रां, स्वल्पं कालं समाधिमान् ॥ नजेन्न मैथुनं धीमान्, धर्मपर्वसु कर्हिचित् ॥ २० ॥ नातिकालं निषेवेत, प्रमीलां जातु चित्सुधीः ॥ अत्युद्रिक्ता नवेदेषा, धर्मार्थसुखनाशिनी ॥ २१ ॥ अत्याहारोऽल्पनिद्रश्च, अल्पारंनपरिग्रहः ॥ नवत्यल्पकषायी यो, ज्ञेयःसोऽल्पनववृमः ॥२२॥

वन न करे, केमके, घणी उंघ करे तो धर्म, अर्थ अने सुख तेनो नाश करनारी थाय ॥ २१ ॥ ॥ जे स्वल्प आहार करे, स्वल्प निद्रा लीए, स्वल्प आरंन करे, जेने स्वल्प परिग्रह होय, अने जेने क्रोध थोडो होय, तेनुं संसारमां नमवुं पण स्वल्पज जाणवुं

॥ २२ ॥ निद्रा, आहार, भय, स्नेह, लज्जा, काम, विषय, कलह, क्रोध, ए जेट
ला वधारीयें, तेटला वधे छे, अने जेटला प्रमाणे घटाडीयें तेटला घटी पण जाय
॥ २३ ॥ ॥ विघ्नरूप वेल छेदवाने कुहाडा सरखा एवा श्रीनेमिनाथ भगवानने नि
द्राने वखते मनमां स्मरतां पुरुष माठे स्वप्नें पराभव पामे नही ॥ २४ ॥ ॥ अश्वसेन
निद्राहारभयस्नेहलज्जाकामकलिक्रुधः ॥ यावन्मात्रा विधीयन्ते, तावन्मात्रा भ
वन्त्यमी ॥ २३ ॥ विघ्नव्रातलतानेमिं, श्रीनेमिं मनसि स्मरन् ॥ स्वापकाले न
रो नैव, दुःस्वप्नैः परिभूयते ॥ २४ ॥ अश्वसेनावनीपालवामादेवीतनूरुहम् ॥
श्रीपार्श्वं संस्मरन्नित्यं, दुःस्वप्नान्नैष पश्यति॥२५॥ श्रीलक्ष्मणांगसंभूतं, महसेन
नृपांगजं ॥ चंद्रप्रभं स्मरंश्चित्ते, सुखं निद्रां लभेत वै ॥२६॥ सर्वविघ्नाहिगरुडं,
राजा अने वामा राणीनो पुत्र श्रीपार्श्वनाथ स्वामी तेने नित्य स्मरतो माठुं स्वप्न न देखे
॥२५॥ तेमज लक्ष्मणा राणीनो तथा महसेन राजानो पुत्र एवो श्रीचंद्रप्रभ स्वामी
तेने चित्तमां स्मरतां सुखें निद्रा पामे ॥ २६ ॥ ॥ सर्व विघ्न रूप सर्पने हणवाने

गरुड समान, सर्व सिद्धिना आपनार एवा श्रीशांतिनाथ प्रत्यें मनमां ध्यातो थको
मनुष्य चोर प्रमुखथी भय न पामे ॥ २७ ॥ ॥ ए प्रकारें ए सर्व दिवस संबंधि करणी
जाणीने श्रावकवर्गने कीधो छे उत्तम संतोष जेणें एवी करणी जे आदरे, ते पुरुष

सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ ध्यायन् शांतिजिनं नैति, चौरादिभ्यो भयं नरः ॥२७ ॥
इत्यवेत्य दिनकृत्यमशेषं, श्राद्धवर्गजनितोत्तमतोषम् ॥ संचरन्निह परत्र च लो
के, कीर्तिमेति पुरुषो धुतदोषः ॥२८॥ इति श्रीआचारोपदेशे चतुर्थवर्गः ॥४॥
॥ अथ पंचमवर्गप्रारंभः ॥ लब्ध्वा तन्मानुषं जन्म, सारं सर्वेषु जन्मसु ॥
सुकृतेन सदा कुर्यात्, सकलं सफलं सुधीः ॥१ ॥ निरन्तरकृताद्धर्मात्, सुखं नि

सर्व दोष टालीने इहलोक अने परलोकें जस पामे ॥२८॥ इति श्रीआचारोपदेशे चतु
र्थवर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥ सघला जन्मनो सार एवो ए मनुष्यनो जन्म पामीने ते पुरुष
पुण्येंकरीने सदा सर्वदा सर्व कामनी सिद्धि करे ॥ १ ॥ ॥ निरंतर धर्म करवाथी

निश्चें सदाइ सुख होय, माटे दान, ध्यान, तप अने जणवुं तेणे करी दिवसने वांजीउ न गमावे, एटले दिवसने वांजीउं न करे, परंतु दानादिक अवश्य प्रत्येक दिवसें करीने सफल दिवस करे ॥ २ ॥ ॥ जीव पोताना आयुष्यना प्रायें त्रीजे जागें अथवा अंत समयें शुज अने अशुज बेमांथी एक प्रकारनुं आगला जवनुं आयुष्य बांधे ॥ ३ ॥

त्यं जवेदिति ॥ अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात्, दानध्यानतपःश्रुतैः ॥ २ ॥ आयुस्तृतीयजागे च, जीवोंत्यसमयेऽथवा ॥ आयुः शुजाशुजं प्रायो, बध्नाति परजन्मसु ॥ ३ ॥ आयुस्तृतीयजागस्थः, पर्वश्रेणीषु पंचसु ॥ श्रेयः समाचरन् जन्तुर्बध्नात्यायुर्निजं ध्रुवम् ॥ ४ ॥ जन्तुराराधयेद्धर्मं, द्वितीयायां द्विधा स्थितम् ॥ स्रृ

आउखाने त्रीजे जागे रह्यो थको प्राणी बीज, पांचम, आठम, अगीआरस अने चौदश ए पांच पर्वना दिवसें धर्म आचरतो थको पोतानुं निश्चें थकी आउखुं बांधे ॥ ४ ॥ बीज पाल्याथी प्राणी यतिधर्म अने श्रावकधर्म ए बे प्रकारना धर्म प्रत्यें आराधे, ते

प्राणी घणा पुण्यनो समूह संपादन करतो राग अने द्वेष ए बेने बीज तिथीयें जीते ॥ ५ ॥ ॥ पांचम पाळ्याथी पांच ज्ञान प्रत्यें पामे, पांच चारित्र पामे, पांच महाव्रत पामे, ए पांचम प्रत्यें पालतो अहंकार, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा ए पांच प्रमादने जीते ॥ ६ ॥ ॥ आठम पाळ्याथी माठां आठ कर्म प्रत्यें नशाडे, तथा पांच

जन् सुकृतसंघातं, रागद्वेषद्वयं जयेत् ॥ ५ ॥ पंच ज्ञानानि लभते, चारित्राणि व्रतानि च ॥ पंचमीं पालयन् पंच, प्रमादाञ्जयति ध्रुवम् ॥ ६ ॥ डुष्टाष्टकर्मनाशायाष्टमी भवति रक्षिता ॥ स्यात्प्रवचनमातॄणां, शुद्धयेऽष्टमदान् जयेत् ॥ ७ ॥ एकादशांगानि सुधीराराधयति निश्चितम् ॥ एकादश्यां शुभस्तद्वच्छ्रावकप्रतिमा

समिति अने त्रण गुप्ति ए आठ प्रवचन माता तेने शुद्ध करे, तथा जातिमद, कुलमद, रूपमद, बलमद, ज्ञानमद, तपमद, लाभमद अने धनमदने जीते, एटले ए आठ मद तेना दूर जाय ॥ ७ ॥ ॥ एकादशियें धर्म प्रत्यें करतो पंडित पुरुष अगी-

अंग प्रत्यें तथा श्रावकनी ‹ पीआर प्रतिमा प्रत्यें आराध ।।७।। . आ
राधतो ते दिवसें तप करतो ‹ जो प्राणी चौदराज लोकने उपरला . दारूप स्था
नक छे, ते प्रत्यें तथा चौद पूर्व प्रत्यें पामे ॥ ए ॥ ॥ ए पांच पर्वना दिवस छे ते
निश्चें एकेक थकी चडता चडता फलनां देवावाला छे, ते माटे ए दिवसें धर्म करणी

स्तथा॥८॥चतुर्दशानामुपरिवासमासादयत्यहो॥चतुर्दश्यामाराधयेत्, पूर्वाणि च
चतुर्दश ॥ए॥ पंच पर्वाण्यमूनीह, फलदानि यथोत्तरम् ॥ तदत्र विहितं श्रेयो,ह्य
धिकं फलदं भवेत् ॥१०॥ धर्मक्रियाः प्रकुर्वंति, विशेषात् पर्ववासरे ॥ आराध
न्नुत्तरगुणान्, वर्जयेत्स्नानमैथुनम् ॥ ११ ॥ विदध्यात्पौषधं धीमान्, मुक्तिवश्यौ

करवाथी अधिकुं अधिकुं फल पामे ॥ १० ॥ ॥ माटे विशेषथी पर्वने दिवसें धर्मनी
क्रिया प्रत्यें करे, उत्तर गुण जे पोसह पडिक्कमणादिक ते प्रत्यें आराधतो स्नान तथा मै
थुन प्रत्यें वर्जे ॥ ११ ॥ ॥ बुद्धिवंत पर्वना दिवसें पोसह करे, ए मुक्तिने वश कर

षधं परम् ॥ तदशक्तौ विशेषेण, श्रयेत्सामायिकं व्रतम् ॥ १२॥ च्यवनं जन
नं दीक्षा, ज्ञानं निर्वाणमप्यहो ॥ अर्हतां कल्याणकानि, सुधीराराधयेत्तथा
॥ १३ ॥ एकस्मिन्नेकाशनकं, द्वयोर्निर्विकृतं तपः ॥ त्रिष्वाचाम्लं सपूर्वार्द्धं, च
तुर्षूपोषितं सृजेत् ॥ १४ ॥ कुर्यादर्धं चोपवासमतः पञ्चसु तेष्वपि ॥ पंचन्निर्व

वाने औषध छे, ते जो पोतानी शक्ति न होय, तो विशेषथी सामायिक व्रत आश्रय
करे ॥ १२ ॥ ॥ तेम १ च्यवन, २ जन्म, ३ दीक्षा, ४ केवल अने ५ मोक्ष ए पांच
श्रीअरिहंतना कल्याणिकना दिवस छे, ते प्रत्यें पंक्ति आराधे ॥ १३ ॥ ॥ एक
कल्याणक होय ते दिवसें एकासणुं करे, बे कल्याणक होय ते दिवसें नीवी करे, त्रण
कल्याणक होय ते दिवसें आयंबिल पूर्वार्द्ध ते एकासणुं करे, चार कल्याणक होय
ते दिवसें उपवास करे ॥ १४ ॥ ॥ वली पांच कल्याणक होय, ते दिवसें ए
सहित उपवास करे. ... कत कल्याणक तप पांच ... करे ॥१५॥

नमोअरिहंतादिक वीश पद ते वीश थानक तेने जे विधि सहित एकासण प्रमुख तपें करीनें करे, ते पुरुष धन्य जाणवो ॥१६॥ ॥ते विधि अने ध्यानसहित जे ए वीशस्थानक आराधे, ते प्राणी दुःखनो हरनार एवुं महोटुं तीर्थंकर पदवीनुं नाम कर्म पामे ॥ १७ ॥

त्सरैः पूर्यात्, तेषु चोपोषिते सुधीः॥१५॥ अर्हदादिपदस्थानि, विंशतिः स्थानकानि च ॥ प्रकुर्वीत विधिं धन्य, स्तपसैकाशनादिना ॥ १६ ॥ ततो विधिध्यानपरो, योऽमून्याराधयत्यहो ॥ लभते तीर्थकृन्नामकर्माशर्महरं परम् ॥ १७ ॥ उपवासेन यः शुक्ला, माराधयति पञ्चमीम् ॥ सार्धानि पञ्च वर्षाणि, लभते पंचमीं गतिम् ॥ १८ ॥ उद्यापनं व्रते पूर्णे, कुर्याद्वा द्विगुणं व्रतम् ॥ तपोदिन

साडा पांच वरस लगें उपवासें करीने जे उजवाली पांचम प्रत्यें आराधे ते पांचमी गति मोक्ष प्रत्यें पामे ॥१८॥ ॥व्रत पूरण थया पछी उजमणुं करे, जो शक्ति न होय तो बमणुं तप करे, तपना दिवस प्रमाणे माणसोने जमाडे ॥१९॥ ॥ ॥ ॥

पाटी,पोथी,कवली,ठवणी,नोकरवाली ए पांच ज्ञाननां उपकरण पांचमने उजमणें करे,तेम वली देरासरनां उपकरण करे॥२०॥तेम पाखीनुं पडिक्कमणुं करतो अने चौदशनो उपवास करतो श्रावक पन्नरे दिननो पक्ष अने कुटुंबनो पक्ष ए बे पक्षनी शुद्धि करे॥२१॥आ

प्रमाणानि, भोजयेन्मानुषाणि च ॥ १९॥ कारयेत्पञ्च पंचोच्चे, ज्ञानोपकरणानि च ॥ पञ्चम्युद्यापने तद्वच्चैत्योपकरणान्यपि ॥ २० ॥ पाक्षिकावश्यकं तत्त्वं, चतुर्दश्यामुपोषितम् ॥ पक्षं विशुद्धं तनुते, द्विधापि श्रावको निजम् ॥ २१ ॥ त्रिषु चातुर्मासिकेषु, कुर्यात्षष्ठं तपः सुधीः॥ अष्टपर्वण्यष्टमीं च, तदावश्यकयुक् सृजेत् ॥ २२ ॥ अष्टमिकासु सर्वासु, विशेषात् पर्ववासरे ॥ आरंभान् वर्जयेज्

षाढ चोमासो,कार्त्तिक चोमासो अने फागुण चोमासो ए त्रण चोमासानी छठ करे तथा महोटुं पर्व पर्युषण आवे, तेवारें तेनी अठम करे, अने संवत्सरीनुं पडिक्कमणुं करे ॥ २२॥ सघला अठाइने विषे विशेष पर्वने दहाडे [illegible] विषे खांडवुं, [illegible] धोवुं तथा

[illegible] कूट ॥२५॥ [illegible]

... दीवालीना दिवसें ... [illegible] ... लोकें अने पर्वे ...
ने जिनश ... व आरंभ न करे ॥२३॥ ॥ महोत्सव पर्व पर्युषण ... [illegible] ... करी
ते श्रावक शासननी शोभामाटे उत्सव करतो नगरमां जीवदया पलावतो कल्पसूत्र सांभळे॥२४
भगवंत ... भला धर्मनी करणी प्रत्यें करीनें पण संतोष पामी रहे नही. मनेंकरी तृप्ति अ

द, खंडनापेषणादिकान् ॥ २३ ॥ पर्वणि शृणुयाज्ज्येष्ठे, श्रीकल्पं स्वच्छमानसः॥
शासनोत्सर्पणं कुर्वन्न मारीं कारयेत्पुरे ॥ २४ ॥ श्राद्धो विधाय स्वं धर्मं, नो तृ
प्तिं तावता व्रजेत् ॥ अतृप्तमानसः कुर्याद्धर्मकर्माणि नित्यशः ॥ २५ ॥ वृष
पर्वणि श्रीकल्पं, सावधानः शृणोति यः ॥ अंतर्भवाष्टकं धन्यं, लभेतपरमं प
दम् ॥ २६ ॥ सम्यक्त्वसेवनान्नित्यं, सब्रह्मव्रतपालनात् ॥ यत्पुण्यं जायते लो

ण पामतो धर्मनी करणी प्रत्यें सदा सर्वदा करे ॥ २५ ॥ ॥ पर्युषण पर्वनें विषे श्री
कल्पसूत्र सावधान थइनें श्रावक सांभळे, ते धन्य पुरुष आठभव मांहे मोक्ष पामे॥२६॥
नित्यें समकितनी सेवाथी तथा नित्यें रूडुं ब्रह्मचर्य व्रत पालवाथी लोकने विषे जे पुण्य

थाय, [illegible]ण्य कल्पसूत्र सांजलवाथी थाय ॥२७॥ दानें करी, विविध प्रकारना तपेकरी, रूडा तीर्थनी सेवायें करी जे प्राणीउंनां पाप क्षय पामे, ते पाप कल्पसूत्र सांजलतां थकां जाय॥२८॥ मुक्ति उपरांत कोइ पद नथी,शत्रुंजय उपरांत कोइ तीर्थ नथी, रूडा समकित

के, श्रीकल्पश्रवणेन तत् ॥ २७ ॥ दानैस्तपोभिर्विविधैः, सत्तीर्थोपासनैरहो ॥ यत्पापं क्षीयते जन्तो, स्तत्पापं श्रवणेन वै ॥ २८ ॥ मुक्तेः परं पदं नास्ति, तीर्थं शत्रुंजयात्परम् ॥ संदर्शनात्परं तत्त्वं, शास्त्रं कल्पात्परं नहि ॥ २९ ॥ अमावस्याप्रतिपदो,दीपोत्सवदिनस्थयोः ॥ प्राप्तनिर्वाणसज्ज्ञानौ, स्मरेद्वीरगोतमौ ॥ ३० ॥ उपवासद्वयं कृत्वा, गौतमं दीपपर्वणि ॥ स्मरेत्स लभते नूनं, मिहा

षाढ चोमासा महोटुं पर्व पर्यु सघला अठाइ

कोइ व्रत नथी,तेम कल्पसूत्र उपरांत बीजुं कोइ शास्त्र नथी ॥२९॥ ॥दीवालीना अमावास्यायें श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया ठे,अने पडवाना दिवसें श्रीगोतम केवलज्ञान पाम्या ठे, तेनुं स्मरण करीयें ॥३०॥ जे बे उपवास करीनें श्रीगोतम

स्ना [illegible] यें दीवालीना दिवसें स्मरण कर, ते ने [illegible] लोकें अने परलोकें मोहोटो
ने जिनेश॥३१॥ ॥ पोताना घरने देरासरें अथवा गा[illegible]ने देरासरें विधियें करी जग
ते श्रावकने मंगलदीवा प्रत्यें करीने पोताना बंधव साथें जोजन प्रत्यें करे ॥ ३२ ॥
[illegible]तना कल्याणकना महोटा पांच दिवसने विषे पोतानी शक्ति माफक यथायो

मुत्र महोदयान् ॥ ३१ ॥ स्वगृहे ग्रामचैत्ये च, विधिनार्चां जिनेशितुः ॥ कृत्वा
मङ्गलदीपं चाश्नीयात्सार्द्धं स्वबंधुजिः ॥३२॥ कल्याणके जिनानां हि, परमे दिन
पंचके ॥ निजशक्त्या सदर्थिज्यो, दद्याद्दानं यथोचितम् ॥ ३३ ॥ इत्थं सुपर्ववि
हितोत्तमकृत्यचार्वाचारप्रचारपिहिताश्रववर्गमार्गः ॥ श्राद्धः समृद्धविधिवार्द्धि

ग्य सद्याचकने दान प्रत्यें आपे ॥ ३३ ॥ ॥ एम रूडा पर्वना समयें करवा योग्य कृत्य
रूप जला आचारने पालवे करी ढांक्यो छे आश्रवना वर्गनो मार्ग जेणें, समृद्ध जे विधि
तेणें क[illegible]द्धि पामी छे जली बुद्धि जेनी एवो श्रावक ते देवताना सुख प्रत्यें जोगवीने